

तरफ़्तापलट सीखने गए हैं राहुल : संबित राहुल गांधी पर महिलाओं के अपमान का गंभीर आरोप

जो देश को बांटने की साजिश रचते हैं भारत के दुश्मन हैं

नई दिल्ली। बीजेपी प्रवक्ता संबित पात्रा ने विपक्ष को आड़े हाथों लिया है। संबित पात्रा ने कहा कि कल विजयादशमी के अवसर पर प्रधानमंत्री ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण बयान दिया। अपने विजयादशमी संबोधन में, प्रधानमंत्री ने उन लोगों के बारे में बात की जो देश के सम्मान और गौरव को नुकसान पहुंचाते हैं, जो देश को बांटने की साजिश रचते हैं, और जो हमारी संस्कृति के प्रति नफरत रखते हैं - ये भारत के दुश्मन हैं। कल प्रधानमंत्री ने स्पष्ट किया कि भारत के दुश्मन कौन हैं।

उन्होंने कहा कि भारत का दुश्मन वह व्यक्ति है जो विदेश जाकर वहां की ताकतों से यह सीखता है कि भारत में तख्तापलट कैसे किया जाए - कैसे आगजनी और हिंसा भड़काई जाए, संसद में कैसे आग लगाई जाए, और चुनावों को सुचारू रूप से होने से कैसे रोका जाए। जो हमारे संवैधानिक संस्थाओं को खत्म और नष्ट करना चाहता है - वह व्यक्ति भारत का दुश्मन है। उन्हें बख्शा नहीं जाना चाहिए। जो लोग यह तर्क देते हैं कि धार्मिक कट्टरता से निपटने के लिए भारत में सत्ता परिवर्तन जरूरी है - वे भारत के दुश्मन हैं। उनके साथ भारत के दुश्मनों जैसा ही बर्ताव किया जाना चाहिए।

पात्रा ने कहा कि कल संजय राउत ने अल्बानिया की पार्लियामेंट की जलती हुई तस्वीर को दिखाया और कहा कि भारतवर्ष के सुप्रीम कोर्ट और पार्लियामेंट भी जलना चाहिए। संजय राउत का कहना था कि राहुल गांधी विदेश गए हैं, जब वो आएंगे तो आप देखिए कि क्या होगा, जलजला होगा। उन्होंने कहा कि इनके सरगना राहुल गांधी विदेश गए हैं। वो सोरोस एंड कंपनी से कोचिंग क्लास करने गए हैं कि किस प्रकार भारत को नष्ट किया जाए, किस प्रकार भारतवर्ष में तख्ता पलट किया जाए, कहाँ उनसे चुक रह गई। कोशिश तो पूरी की थी, मगर भारतवर्ष के लोगों ने साथ नहीं दिया। अब क्या करना है, किस प्रकार से इस पूरे विषय को आगे बढ़ाना है, ताकि भारतवर्ष जीर्ण-शीर्ण हो जाए और यहां सत्ता परिवर्तन हो जाए।

संबित पात्रा ने कहा कि पूरे देश में एक खास नैरेटिव (धारणा) बनाया जा रहा था। ऐसा दिखाया जा रहा था कि कुछ लोग बस भारत का राष्ट्रीय ध्वज—तिरंगा—फहराना चाहते हैं, और भारत सरकार इतनी तानाशाही है कि वह उन्हें ऐसा करने से रोक रही है। कुछ लोगों ने पूरे देश में इस नैरेटिव को फैलाने की कोशिश की।

उन्होंने कहा कि पूरे देश को यह साफ



हो जाना चाहिए कि उन्हें तिरंगा फहराने की इच्छा रखने की वजह से न्यायिक हिरासत में नहीं भेजा गया था। बल्कि, ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि वे उस पीस बॉन्ड (शांति समझौते) की शर्तों का पालन करने में विफल रहे, जिस पर उन्होंने पहले हस्ताक्षर किए थे। जब उन्हें पहली बार हिरासत में लिया गया था, तब उन्होंने एक पीस बॉन्ड पर दस्तखत किए थे। इसमें उन्होंने यह गारंटी दी थी कि रिहा होने के बाद वे ऐसा कोई काम नहीं करेंगे जिससे अशांति फैले... जिससे देश की शांति भंग हो सकती हो। फिर भी, रिहाई के कुछ ही घंटों के भीतर उन्होंने अपने पीस बॉन्ड का उल्लंघन कर दिया—यह बात आज सामने आई है।

सीजेपी नेताओं सोरव दास व आशुतोष रांका रिहा

विशेष कार्यकारी मजिस्ट्रेट ने सीजेपी नेताओं सोरव दास और आशुतोष रांका को रिहा करने का आदेश दिया है। 2 दिन की न्यायिक हिरासत के बाद उन्हें एसईएम कोर्ट के सामने पेश किया गया था। इससे पहले दिल्ली पुलिस ने कॉंकरोच जनता पार्टी के नेताओं सोरभ दास और आशुतोष रंका की न्यायिक हिरासत को तीन दिन और बढ़ाने की मांग की थी। इन नेताओं को बुधवार को एक विशेष कार्यकारी मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया था। यह घटनाक्रम दिल्ली हाई कोर्ट द्वारा उनकी हिरासत के मामले में दखल देने से इनकार करने के कुछ घंटों बाद हुआ है। हाई कोर्ट ने याचिकाकर्ताओं से कहा कि वे स्वरूके फैसले का ईंजाज करें और अगर उनकी शिकायतें दूर नहीं होती हैं, तो वे अपीलीय अदालत का दरवाजा खटखटा सकते हैं। जस्टिस सुब्रमणियम प्रसाद ने दास और रंका को अपनी याचिका वापस लेने की अनुमति दे दी। उन्होंने कहा कि शांति बॉन्ड के कथित उल्लंघन से जुड़े दोबारा सामने आए मामले में, संविधान के अनुच्छेद 226 के तहत रिट याचिका दायर करना सही कानूनी उपाय नहीं है।

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय महासचिव स्मृति जुबिन ईरानी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बारे में की गई टिप्पणियों को लेकर कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने महिलाओं के प्रति राहुल गांधी के रवैये पर सवाल उठाए और उन पर अपमानजनक बयान देने का आरोप लगाया। सोशल मीडिया पर गांधी की हालिया पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए, ईरानी ने आरोप लगाया कि महिलाओं के प्रति उनका बर्ताव कैसा है, यह उस घटना से साफ हो जाता है जब उन्होंने वर्दी पहनी हुई एक महिला पुलिस अधिकारी के साथ बुरा बर्ताव किया था। उन्होंने यह भी सवाल किया कि जब राहुल गांधी खुद बार-बार इस तरह के बयान देते हैं, तो महिलाओं से उनकी टिप्पणियों पर प्रतिक्रिया क्यों मांगी जा रही है?

अपना हमला तेज करते हुए, भाजपा नेता ने कहा कि समाज की यह जिम्मेदारी है कि वह ऐसे लोगों



को खारिज करे, जिनकी महिलाओं के प्रति सोच उनकी नज़र में दकियानूसी है। ईरानी ने कहा कि अगर राहुल गांधी की महिलाओं के प्रति ऐसी दकियानूसी सोच है, तो ऐसे व्यक्ति को किनारे करना हमारा कर्तव्य है। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि समाज के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाएं सशक्त हैं, जिसमें भाजपा और आरएसएस की महिला स्वयंसेवक भी शामिल हैं। उन्होंने आगे कहा कि इस तरह की अपमानजनक टिप्पणियां समाज के हर वर्ग की महिलाओं का अपमान करती हैं।

ईरानी ने लोकसभा में विपक्ष के

नेता पर यह आरोप भी लगाया कि वे सुर्खियों में बने रहने के लिए सस्ती बयानबाजी का सहारा ले रहे हैं। यह विवाद राहुल गांधी के झू (ट्विटर) पर किए गए एक पोस्ट के बाद शुरू हुआ, जिसमें उन्होंने ऋसू को ऐसे लोगों का समूह बताया जो संविधान का विरोध करते हैं और मानते हैं कि महिलाएं पुरुषों की संपत्ति हैं। गांधी की यह टिप्पणी ऋसू प्रमुख मोहन भागवत द्वारा संगठन के वार्षिक विजयादशमी कार्यक्रम में दिए गए भाषण के एक दिन बाद आई। संगठन पर उनकी इस टिप्पणी से राजनीतिक बयानबाजी शुरू हो गई, जिसमें ईरानी ने महिलाओं को लेकर कांग्रेस नेता के विचारों पर सवाल उठाए। अपने संबोधन के दौरान, भागवत ने इस धारणा के प्रति आगाह किया कि केवल सरकार या शासन बदलने से ही बुनियादी समस्याओं का समाधान हो सकता है। उन्होंने तर्क दिया कि अतीत में राजनीतिक नेतृत्व में बदलाव से हालात हमेशा नहीं बदले हैं।



विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण में शहरों की होगी महत्वपूर्ण भूमिका : साय

रायपुर। विकसित भारत और विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण में हमारे शहरों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। शहर केवल आवास और नागरिक सुविधाओं के केंद्र नहीं हैं, बल्कि आर्थिक गतिविधियों, उद्योग, व्यापार, रोजगार और नवाचार के प्रमुख आधार भी हैं। इसलिए छत्तीसगढ़ के शहरों का विकास वर्तमान आवश्यकताओं तक सीमित न रहकर आने वाले दशकों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए सुनियोजित, समावेशी, टिकाऊ और आर्थिक रूप से सक्षम होना चाहिए। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने आज नवा रायपुर स्थित मेफेयर लेक रिजॉर्ट में आवास एवं शहरी विकास निगम (हुडको) और छत्तीसगढ़ शासन के नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित अर्बन चौलेंज फंड एवं अर्बन इन्वेस्ट विंडो विषयक प्रथम क्षेत्रीय कार्यशाला का शुभारंभ कर संबोधित करते हुए यह बात कही।

संघ प्रमुख डा.मोहन भागवत आज छ्पा प्रवास पर

रायपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डा.मोहन भागवत दो दिवसीय प्रवास पर कल 22 अक्टूबर को छत्तीसगढ़ आ रहे हैं। वे 22 अक्टूबर को शाम चार बजे गोडवा ना एक्सप्रेस से बिलासपुर पहुंचेंगे। बिलासपुर में वे पहले दिन कौनी स्थित सरस्वती शिशु मंदिर परिसर में एक बौद्धिक वर्ग को संबोधित करेंगे। इस बौद्धिक वर्ग में केवल बिलासपुर जिले के संघ पदाधिकारी शामिल होंगे। डा.भागवत रात्रि विश्राम बिलासपुर में ही करेंगे। दूसरे दिन 23 अक्टूबर को प्रांतीय टोली की बैठक होगी जिसमें छत्तीसगढ़ प्रांत के सभी प्रमुख पदाधिकारी शामिल होंगे।



जम्मू-कश्मीर : 36 माह में मारे गए 34 पाकिस्तानी आतंकी

नई दिल्ली। सुरक्षा बलों ने पिछले तीन साल के दौरान जम्मू-कश्मीर में छिपे पाकिस्तानी आतंकियों पर तगड़ा प्रहार किया है। पहाड़, जंगल और गुफाओं में छिपे 70 में से 34 आतंकियों को मुठभेड़ में मार गिराया गया है। केंद्रीय गृह मंत्रालय के सूत्रों ने बताया कि जम्मू-कश्मीर में अब 35-36 पाकिस्तानी आतंकी बचे हैं। लोकल आतंकियों की नई भर्ती पूरी तरह बंद हो चुकी है इसका नतीजा यह रहा कि राज्य में एक या दो लोकल आतंकी ही सक्रिय हैं। पाकिस्तानी मूल के लगभग तीन दर्जन आतंकियों को उनके बिल से बाहर निकालने के लिए अब सुरक्षा एजेंसियां, पांच बार एक साथ कर रही हैं। तीन साल पहले तक जेएंडके में लगभग 70 %ए% ग्रेड पाकिस्तानी आतंकवादियों की मौजूदगी रही है। तब दर्जनभर लोकल दहशगर्द भी सक्रिय थे। सुरक्षा बलों द्वारा लगातार चलाए गए अभियानों में विदेशी और लोकल आतंकियों को निशाना बनाया गया। जेएंडके में मौजूद ज्यादातर



पाकिस्तानी दहशतगर्दों की ट्रेनिंग %अफगानिस्तान% फंट पर हुई है। इन आतंकियों तक पहुंचना और उन्हें मुठभेड़ में मार गिराना, सुरक्षा बलों के लिए एक बड़ी चुनौती रहा है। इन आतंकियों ने सुरक्षा बलों को काफी नुकसान भी पहुंचाया है।

पाकिस्तानी आतंकियों को उनके बिल से बाहर निकालने के लिए अब सुरक्षा बलों ने एक साथ पांच बार करने की रणनीति बनाई है। पहला, जहां ऐसा खुफिया अलर्ट मिलता है कि इस क्षेत्र में आतंकी छिपे हो सकते हैं, वहां कड़ी

नजर रखते हुए सप्लाई चेन काटी जा रही है। संभावित ठिकानों की तरफ जाने वाले सभी कच्चे-पक्के रास्तों पर गश्त शुरू की गई है। सामान कहां पर पहुंचता है, उसके गन्तव्य की सूची तैयार की गई है। दूसरा, सीआरपीएफ ने जम्मू-कश्मीर की पहाड़ियों में 10 हजार फुट की ऊंचाई पर छिपे आतंकियों के ठिकानों को ध्वस्त कर दिया है। विभिन्न इलाकों में 50 से ज्यादा टेम्पोरेरी ऑपरेशन बेस टीओबी स्थापित कर दिए हैं। पहले इतनी ऊंचाई पर सुरक्षा बलों की नियमित गश्त नहीं होती थी। नतीजा, आतंकवादी वहां पर छिपने का स्थान ढूंढ लेते थे। जुलाई 2025 के बाद से ऊंचाई वाले क्षेत्रों में सीआरपीएफ ने टीओबी के जरिए आतंकियों को खदेड़ दिया है। जेएंडके में आतंकियों के मददगार यानी ओवर ग्राउंड वर्कर की पहचान कर उन्हें सलाखों के पीछे लाया जा रहा है। इसमें दर्जनों सरकारी कर्मचारी भी गिरफ्त में आए हैं। अब आतंकियों को मददगार आसानी से नहीं मिल रहे।

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय

प्रमुख समाचार

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम् ॥

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8>> नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक ...

● वर्ष-6

● अंक-72

रायपुर, गुरुवार

22 अक्टूबर 2026

● पृष्ठ-8

● मूल्य-३ रु.

॥ संगछध्वम् संवदध्वम्



कोरबा में जला 120 फीट का सबसे ऊंचा रावण, आतिशाबाजी से रोशन हुआ आसमान

कोरबा। जोश और उत्साह के साथ विजयादशमी का त्योहार मनाया गया। ऊर्जाधानी में इस बार 120 फीट का सबसे ऊंचा रावण दहन देखने के लिए हजारों की भीड़ लाल मैदान पहुंची। दरी में हर साल की तरह इस साल भी छत्तीसगढ़ स्टेट पावर जेनरेशन कंपनी ने ऐतिहासिक लाल मैदान में रावण दहन का आयोजन किया था। रावण दहन को लेकर सबसे ज्यादा उत्साह बच्चों में देखा गया। बड़ी संख्या में बच्चे लाल मैदान पहुंचे थे। लाल मैदान के अलावा शहर के निहारिका इलाके में भी रावण दहन का खास आयोजन किया गया था। यहां कोसाबाड़ी स्थित दशहरा मैदान, एमपी नगर में बड़ी तादाद में लोग पहुंचे और रावण दहन के साक्षी बने। इसके अलावा उपनगरीय क्षेत्र बालको और कटघोरा में भी भव्यता के साथ विजयदशमी का पर्व मनाया गया।

लाल मैदान में 7दशहरा उत्सव समिति द्वारा हर साल की तरह इस बार भी रावण के पुतले के निर्माण में आधुनिक इंजीनियरिंग और तकनीक का शानदार इस्तेमाल से किया गया था। दृश्यक्रक के अनुभवी इंजीनियरों और कुशल कर्मचारियों की टीम द्वारा लगभग 45 दिनों की कड़ी मेहनत से तैयार यह 120 फीट ऊंचा रावण कई मामलों में खास था। 10 सिरों वाले इस विशालकाय रावण की आँखें लाल रोशनी से चमक रही थी। पुतला 45 डिग्री के कोण पर सिर घुमा रहा था, मुँह से धुआं छोड़ रहा था और अट्टहास कर रहा था। पूरे पुतले में आधुनिक एलईडी स्ट्रिप लाइटिंग लगाई गई थी, जिससे रात के अंधेरे में रावण का स्वरूप बेहद जीवंत और रौद्र नज़र आ रहा था।

दशहरे की रात पत्नी की हत्या, आरोपी पति फरार

सरगुजा। सरगुजा जिले में दशहरे की रात पति ने अपनी पत्नी की हत्या कर दी। वारदात के बाद आरोपी पति मौके से फरार है। घटना की जानकारी मिलते ही इलाके में हड़कंप मच गया। सूचना पर पहुंची कोतवाली पुलिस मामले की जांच में जुटी है। पूरा मामला ग्राम पंचायत केपी का है। जानकारी के अनुसार, आरोपी पति आलोक गिरी पर अपनी पत्नी मानमती की हत्या करने का आरोप है। आशंका जताई जा रही है कि शराब के नशे में मारपीट के दौरान इस वारदात को अंजाम दिया गया। हालाँकि, हत्या के पीछे की वास्तविक वजह अभी स्पष्ट नहीं हो पाई है। घटना के बाद आरोपी पति मौके से फरार हो गया, जिसकी तलाश जारी है। वहीं कोतवाली पुलिस मामले की जांच कर रही है। पुलिस हत्या के कारणों का पता लगाने के साथ ही घटना से जुड़े अन्य पड़लुओं की भी जांच में जुटी है। दशहरे की देर रात हुई इस वारदात से गांव में दहशत का माहौल है।

छत्तीसगढ़

प्रमुख समाचार

ग्रीन सिग्नल मिलते ही दौड़ पड़ी छुक-छुक रेल गाड़ी

नारायणपुर। कांकेर और नारायणपुर के लोगों को पिछले 79 सालों से ट्रेन के रावघाट पहुंचने का इंतजार था। करीब 8 दशक तक चला ये लंबा इंतजार आखिरकार खत्म हुआ और रायपुर से चली ट्रेन रावघाट पहुंच चुकी है। सीएम विष्णु देव साय ने पैसेंजर ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। ट्रेन को हरी झंडी दिखाने के वक केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव भी वरुंअली मौजूद रहे। रावघाट पहुंचने पर ग्रामीणों ने ट्रेन और उसमें बैठकर आए मुसाफिरों का जोरदार स्वागत किया। फूलों से लदी ट्रेन जैसे ही रावघाट रेलवे स्टेशन पर पहुंची लोगों ने तालियां बजाकर इस ऐतिसाहिक पल का स्वागत किया। स्थानीय लोगों ने बताया कि दशकों से वो इस रेल सुविधा के शुरू होने का इंतजार कर रहे थे। ये इंतजार उनके के लिए महज एक परिवहन सुविधा की शुरुआत नहीं, बल्कि शिक्षा, रोजगार, व्यापार और विकास की नई उम्मीदों का आगाज है। नारायणपुर जिले की अंतिम सीमा से लगे ग्राम सरंगीपाल स्थित नवनिर्मित रेलवे स्टेशन को इस खास अवसर के लिए आकर्षक ढंग से सजाया गया।

किसान का बेटा बना टेक गुरु, बना रहा एआई ब्रेन, स्कूली बच्चों को फ्री में सीखा रहे रोबोटिक्स

धमतरी। कहते हैं कि कुछ कर गुजरने का जुनून हो, तो संसाधनों की कमी भी रास्ता नहीं रोक सकती। धमतरी जिले के मगरलोड के रहने वाले देवव्रत सिन्हा इसकी मिसाल बनकर उभरे हैं। किसान परिवार से आने वाले देवव्रत ने वीटেক की पढ़ाई के बाद किसी बड़ी कंपनी में नौकरी या सरकारी पद की दौड़ में शामिल होने का नहीं सोचा। उन्होंने इसके बजाय तकनीक की दुनिया में अपनी अलग पहचान बनाने का रास्ता चुना।

देवव्रत सिन्हा ने घर पर रहकर खुद नई-नई तकनीकें सीखीं और अब उसी ज्ञान को स्कूली बच्चों तक पहुंचाने में जुटे हैं। रोबोटिक्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ट्यू), इंटरनेट ऑफ थिंग्स (दृष्टाञ्ज), मशीन लर्निंग, कोडिंग, ड्रोन तकनीक और 3D प्रिंटिंग जैसे विषयों पर काम करने वाले देवव्रत स्टेम रोबो हब इंडिया के संस्थापक हैं। उनका मकसद बच्चों को केवल



किताबों में तकनीक के बारे में पढ़ाना नहीं, बल्कि उन्हें अपने हाथों से प्रयोग करने, मॉडल बनाने और नई चीजें विकसित करने के लिए प्रेरित करना है। देवव्रत सिन्हा बताते हैं कि लॉकडाउन के दौरान उनकी वीटেক की पढ़ाई हुई।

इसके बाद उन्होंने खुद से आधुनिक तकनीकों को समझना और उन पर काम करना शुरू किया। धीरे-धीरे रोबोटिक्स, दृष्टाञ्ज, मशीन लर्निंग, ्ट्यू और वेबसाइट डेवलपमेंट जैसे क्षेत्रों में अपनी रुचि को काम में बदल दिया। परिवार की इच्छा थी

कि वह सरकारी नौकरी की तैयारी करें, लेकिन देवव्रत की सोच कुछ अलग थी। उनका मानना है कि सरकारी नौकरी जरूरी है, लेकिन देश को आगे बढ़ाने के लिए तकनीक और अनुसंधान के क्षेत्र में भी युवाओं का आगे आना उतना ही आवश्यक है। देवव्रत के प्रयासों की खास बात यह है कि वे आधुनिक तकनीक का ज्ञान केवल अपने तक सीमित नहीं रखना चाहते।

वे स्कूलों में जाकर बच्चों को रोबोटिक्स, कोडिंग, 3D प्रिंटिंग, ड्रोन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के बारे में बताते

बस्तर दशहरा में मावली परघाव की निभाई गई रस्म, 600 सालों से चली आ रही परंपरा, दो देवियों का हुआ मिलन

बस्तर। बस्तर दशहरा में मावली परघाव की रस्म सबसे महत्वपूर्ण रस्मों में से एक है। मावली परघाव की रस्म 600 सालों से बस्तर दशहरा में विधि विधान से निभाई जा रही है। मंगलवार की देर रात बस्तर राजपरिवार ने मावली परघाव की रस्म को निभाया और देश सहित प्रदेश में खुशहाली की कामना मां दंतेश्वरी से की। मावली परघाव रस्म के साथ जगदलपुर मां दंतेश्वरी मंदिर परिसर में कुटरू बाड़ा में दो देवियों का मिलन भी हुआ। इस रस्म और मिलन को देखने लिए हजारों हजार



की भीड़ मौजूद रही। ऐसा लग रहा था जैसे सड़कों पर भक्तों का जनसैलाब उमड़ आया हो। मावली परघाव रस्म को निभाए जाने से पहले जब दंतेवाड़ा से मावली माता की डोली

और छत्र पहुंचा, तब बस्तर राजपरिवरा के सदस्य कमलचंद भंजदेव ने माता का स्वागत किया। भक्तों ने आतिशबाजी और फूल मालाओं से मां का स्वागत कर छत्तीसगढ़ की खुशहाली की कामना की। मान्यता अनुसार बीते 600 सालों से बस्तर रियासत के राजा इस रस्म

को धूमधाम से मनाते आ रहे हैं जिसमें बस्तर की आम जनता भी शामिल होती है।बस्तर के तत्कालीन महाराजा रूद्र प्रताप देव द्वारा देवी

के डोली का भव्य स्वागत किया जाता था। वो परम्परा आज भी बखूबी निभाई जा रही है। परंपरानुसार देवी मावली कनार्टक राज्य के मलवल्य गांव की देवी हैं, जो छिंदक नागवंशीय राजाओं द्वारा उनके बस्तर के शासनकाल में यहां आई थीं। छिंदक नागवंशी राजाओं ने नवीं सदी से लेकर 14वीं सदी तक बस्तर में शासन किया। इसके बाद चालुक्य राजा अन्नम देव ने जब बस्तर में अपना नया राज्य स्थापित किया। तब उन्होंने देवी मावली को अपनी कुलदेवी के रूप में मान्यता दी।

मावली देवी का यथोचित सम्मान और स्वागत करने के लिए मावली परघाव रस्म तभी से चली आ रही है।

कमलचंद भंजदेव के मुताबिक नवमी के दिन दंतेवाड़ा से आई मावली देवी की डोली का स्वागत करने राजा, राजगुरु और पुजारी नंगे पांव राजमहल से मंदिर के प्रांगण तक आते हैं। उनकी अगुवाई और पूजा अर्चना के बाद देवी की डोली को कंधों पर उठाकर राजमहल में स्थित देवी दंतेश्वरी के मंदिर में लाकर रखा जाता है।

मुरिया दरबार की परंपरा पर विवाद



कांग्रेस ने कहा- आदिवासी आस्था से हो रहा खिलवाड़, सांसद कश्यप बोले डू पुरानी व्यवस्था कायम

जगदलपुर। बस्तर दशहरा की मुरिया दरबार रस्म में इस साल राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू शामिल होंगी। 23 अक्टूबर को आयोजित होने वाले मुरिया दरबार से पूर्व बस्तर में सियासी पारा हाई हो गया है। दरअसल मुरिया दरबार के नाम और स्थान बदलने को लेकर कांग्रेस ने आरोप लगाया है। कांग्रेस का कहना है कि आदिवासी आस्था एवं परंपरा से जुड़े मुरिया दरबार का नाम बदलने का प्रयास किया जा रहा है। सिरासार भवन के स्थान पर लालबाग मैदान में मुरिया दरबार

आयोजन करने से लोगों की आस्था को ठेस पहुंचेगी। दरअसल जगदलपुर मां दंतेश्वरी मंदिर की ओर से रस्मों की एक सूची जारी की थी, जिसमें मुरिया दरबार के स्थान पर आम दरबार अंकित है। इसके विरोध के बाद प्रशासन ने स्पष्टीकरण जारी कर नाम और स्थान नहीं बदले जाने की बात कही। इस मामले में बस्तर सांसद महेश कश्यप ने कहा, पुरानी व्यवस्था के तहत सभी रस्मों का आयोजन किया जा रहा। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू सिरासार भवन में आयोजित मुरिया दरबार के साथ ही लालबाग मैदान में आयोजित आम सभा में भी हिस्सा लेंगी। कुछ लोग अफवाह फैलाकर लोगों की भ्रमित कर रहे हैं।

ननि के अभियंताओं को हाईकोर्ट से राहत, वसूली आदेश और कारण बताओ नोटिस पर लगी रोक

बिलासपुर। नगर निगम भिलाई में कार्यरत अभियंताओं के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई की गई थी। हाईकोर्ट ने वसूली आदेश और कारण बताओ नोटिस पर रोक लगा दी है। दरअसल, नगर पालिका निगम भिलाई की परियोजना शाखा के अंतर्गत कराए गए पेवर ब्लॉक के कार्यों में बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार की शिकायत के संबंध में जांच प्रतिवेदन के अनुसार, पेवर ब्लॉक के 29 अनुबंधों की जांच में मौके पर कम मात्रा पाई। इस संबंध में समस्त कार्यों पर माप दर्ज करने वाले अभियंताओं तथा कर्मचारियों के विरुद्ध कठोर अनुशासनात्मक कार्रवाई और अधिक राशि की वसूली करने के लिए कलेक्टर जिला दुर्ग द्वारा आयुक्त नगर पालिका निगम भिलाई को पत्र जारी किया गया उक्त पत्र के परिपालन में मुख्य अभियंता नगर पालिका निगम भिलाई द्वारा नगर पालिका निगम में उप अभियंता के पद पर पदस्थ अर्पित बंजारे, चंदन निर्मल, श्वेता महेश्वर, पुरुषोत्तम सिन्हा, रीमा हुमने, कृष्ण कुमार जंघेल और सहायक अभियंता श्वेता वर्मा के विरुद्ध कारण बताओ नोटिस जारी किया गया। उपरोक्त आदेशों और कारण बताओ नोटिस पर सुनवाई करते हुए न्यायालय ने रोक लगा दी है। याचिकाकर्ताओं की नियुक्ति नगर पालिका निगम में उप अभियंता, तत्पश्चात सहायक अभियंता के पद पर हुई थी।



छत्तीसगढ़

प्रमुख समाचार

ग्रीन सिग्नल मिलते ही दौड़ पड़ी छुक-छुक रेल गाड़ी

नारायणपुर। कांकेर और नारायणपुर के लोगों को पिछले 79 सालों से ट्रेन के रावघाट पहुंचने का इंतजार था। करीब 8 दशक तक चला ये लंबा इंतजार आखिरकार खत्म हुआ और रायपुर से चली ट्रेन रावघाट पहुंच चुकी है। सीएम विष्णु देव साय ने पैसेंजर ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। ट्रेन को हरी झंडी दिखाने के वक केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव भी वरुंअली मौजूद रहे। रावघाट पहुंचने पर ग्रामीणों ने ट्रेन और उसमें बैठकर आए मुसाफिरों का जोरदार स्वागत किया। फूलों से लदी ट्रेन जैसे ही रावघाट रेलवे स्टेशन पर पहुंची लोगों ने तालियां बजाकर इस ऐतिसाहिक पल का स्वागत किया। स्थानीय लोगों ने बताया कि दशकों से वो इस रेल सुविधा के शुरू होने का इंतजार कर रहे थे। ये इंतजार उनके के लिए महज एक परिवहन सुविधा की शुरुआत नहीं, बल्कि शिक्षा, रोजगार, व्यापार और विकास की नई उम्मीदों का आगाज है। नारायणपुर जिले की अंतिम सीमा से लगे ग्राम सरंगीपाल स्थित नवनिर्मित रेलवे स्टेशन को इस खास अवसर के लिए आकर्षक ढंग से सजाया गया।

पौने दो लाख की साइबर ठगी में दो गिरफ्तार

खैरागढ़। खैरागढ़ पुलिस ने ठगी मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है।पुलिस की जांच उत्तराखंड से लेकर दिल्ली तक पहुंची, जहां से दोनों आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। पुलिस के मुताबिक, कमीशन का लालच देकर दूसरे लोगों के बैंक खाते लिए जाते थे। फिर इन खातों में आई ठगी की रकम निकालकर आगे पहुंचाई जाती थी। इस पूरे मामले में एक आरोपी रकम निकालकर 10 प्रतिशत कमीशन रखता था, जबकि दूसरा कथित तौर पर रकम को डॉलर में बदलने का काम करता था। मामले का खुलासा तब हुआ जब गातापर थाना क्षेत्र के निवासी राकेश कुमार भोक्ते ने शिकायत दर्ज कराई कि उनके और उनकी पत्नी के बैंक खातों से अलग-अलग तारीखों में कुल 1 लाख 86 हजार 600 रुपये निकाल लिए गए। शिकायत के मुताबिक, 16 अगस्त 2026 को उनके आईडीबीआई बैंक, दाउचोखा खैरागढ़ स्थित खाते से 99 हजार रुपये और उनकी पत्नी सावित्री बाई भोक्ते के छत्तीसगढ़ ग्रामीण बैंक, पाड़ादाह शाखा स्थित खाते से 80 हजार रुपये निकाले गए।

रावण दहन के दौरान खूनी संघर्ष आरोपी गिरफ्तार

कोरबा। कोरबा जिले में दशहरा उत्सव के दौरान डांस को लेकर शुरू हुआ विवाद खूनी संघर्ष में बदल गया। मानिकपुर चौकी क्षेत्र के मुड़ापर दशहरा मैदान में 22 वर्षीय युवक राहुल कुमार उर्फ गोल्डन की चाकू मारकर हत्या कर दी गई। वारदात के बाद इलाके में हड़कंप मच गया। इस मामले में पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। एक अन्य आरोपी फरार है। जानकारी के मुताबिक, रावण दहन कार्यक्रम के दौरान साउंड बॉक्स पर डांस करने को लेकर राहुल कुमार उर्फ गोल्डन का आरोपी बिट्टू चौहान से विवाद हो गया। बताया जा रहा है कि डांस के दौरान राहुल ने बिट्टू को धक्का देकर थप्पड़ मार दिया। बीच-बचाव करने पहुंचे उसके दोस्त विजय चौहान को भी राहुल ने थप्पड़ मार दिया। इसके बाद विवाद ने गंभीर रूप ले लिया। घटना से गुस्साए बिट्टू चौहान, विजय चौहान, सीपू चौहान और उनके एक अन्य साथी ने राहुल को पीछे की गली में ले जाकर उस पर धारदार हथियार से हमला कर दिया। हमले में राहुल पर 6 से 7 वार किए गए।

छात्रा को एसिड अटैक और किडनैप करने की दी धमकी

बिलासपुर। छत्तीसगढ़ की न्यायधानी बिलासपुर में युवती को एसिड अटैक और अपहरण की धमकी देने का गंभीर मामला सामने आया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर शुरू हुई दोस्ती ने सालभर में टॉक्सिक रिलेशन का रूप ले लिया। बातचीत बंद करने पर युवक ने छात्रा को किडनैप करने और एसिड अटैक की धमकी दी। पूरा मामला तारबाहर थाना क्षेत्र का है। पीड़िता ने पुलिस को शिकायत में बताया कि इंस्टाग्राम पर लाभभग सालभर पहले युवक विजय चौधरी उर्फ बॉबी से उसकी बातचीत शुरू हुई। इस दौरान उनकी दोस्ती अच्छी हो गई थी। फिर उसे पता चला बॉबी बदमाश किस्म का है और उसपर आपराधिक रिकॉर्ड है। इसके बाद उसने युवक से बातचीत करना बंद दिया। इससे नाराज होकर बॉबी ने छात्रा पर एसिड अटैक करने और उसके किडनैप की धमकी दी। शिकायत के आधार पर पुलिस ने आरोपी युवक पर केस दर्ज किया। इसके बाद उसे थाना लेकर आई। कड़ाई से पूछताछ करने पर आरोपी ने जुर्म कबूल किया। इसके बाद उसे विधिवत गिरफ्तार कर लिया ।

पुलिस लाईन में अंकिता शर्मा ने शस्त्रों की पूजा की

राजनांदगांव। बुराई पर अच्छाई की विजय और असत्य पर सत्य की जीत के प्रतीक विजयादशमी के अवसर पर राजनांदगांव शहर के पुलिस लाईन में शस्त्र पूजन किया गया। शस्त्र पूजन में जिले की एसपी अंकिता शर्मा सहित अन्य पुलिस अधिकारी और पुलिस कर्मियों की मौजूदगी में मां दुर्गा की आराधना की गई। इस दौरान अंकिता शर्मा ने हर्ष फायर कर पूजा की परम्परा का निर्वाहन किया। बता दें कि अपनी सालों पुरानी परम्परा का निर्वाह करते हुए विजय दशमी के अवसर पर शहर के पुलिस लाईन स्थित रक्षित केन्द्र में शस्त्रों की पूजा की गई। यहां पुलिस ने अपने सभी हथियारों को रखकर बुराई के खालमें और लोगों की सुरक्षा की शक्ति देने शक्ति की देवी मां दुर्गा से कामना की। देश-प्रदेश और लोगों की सुरक्षा के लिए उद्योगे जाने वाले शस्त्रों की पूजा के माध्यम से सुरक्षाबलों ने देश में शांति और भाईचारे की कामना की। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक अंकिता शर्मा ने दशहरा पर्व की शुभकामनाएं दी।

मोबाइल चोरी कर जुड़े बैंक खाते से किया लाखों रुपए का लेन-देन

बिलासपुर। प्रदेश की न्यायधानी में अजीबो-गरीब मामला सामने आया है, जहां एक निजी स्कूल संचालन समिति के अध्यक्ष का मोबाइल गुम होने के बाद उसमें 1112 करोड़ का सटिध लेन-देन हुआ है। गुम सिम को नए सिरे से जारी कराने के बाद इस बात की जानकारी होत ही समिति अध्यक्ष के होश उड़ गए। उन्होंने तुरंत पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। जानकारी के अनुसार, राजकिशोर नगर निवासी प्रयास पब्लिक स्कूल के अध्यक्ष डॉ। सचिन यादव 10 अगस्त को कोलकाता गए थे।

शहर में रहने के दौरान उनका जियो सिम लगा मोबाइल गुम हो गया था, जिसके बाद उन्होंने तुरंत सिम फ्रीज कराने



की कोशिश की, लेकिन दस्तावेज नहीं होने की वजह से यह काम नहीं हो पाया। उन्होंने छह दिन बाद अपना पुराना नंबर दोबारा जारी कराया। अगले दिन इमेल चेक करने पर पता चला कि स्कूल के बैंक से लिक मोबाइल नंबर से साइबर ठगों ने पहले 14 अगस्त को 800 रुपये का ट्रायल ट्रांजेक्शन किया, इसके बाद एक ही दिन में 1112 करोड़ का लेन-देन कर रकम

100 से ज्यादा बैंक खातों में बांट दिया। मामले में सबसे बड़ी बात यह है कि संबंधित स्कूल के खाते में चंद रुपये ही थे। डॉ। सचिन यादव ने बताया कि घटना ने पहले स्कूल के खाते में सिर्फ 181 रुपये थे, ठगी के बाद 29 रुपये ही बचे हैं। जानकारों का कहना है कि इस खाते का इस्तेमाल साइबर ठगों ने म्यूल् अकाउंट की तरह इस्तेमाल किया है। ठगी से प्राप्त रकम को ठगों ने देश भर में लेन-देन के लिए खाते का उपयोग किया। फ़िलहाल, बिलासपुर में जीरो पर अपराध दर्ज कर केस डायरी कोलकाता के न्यू मार्केट थाने भेज दी गई है।

संक्षिप्त समाचार

कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान में 12 दिन पहले शुरू हुआ सफारी सत्र

रायपुर। बस्तर के प्रसिद्ध कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान में इस वर्ष पर्यटकों के लिए सफारी सत्र निर्धारित समय से 12 दिन पहले शुरू कर दिया गया है। वन मंत्री की अंदेश कश्यप के निर्देशानुसार पर्यटकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय लिया गया है। नए सत्र की शुरुआत के साथ ही पर्यटक राष्ट्रीय उद्यान की प्राकृतिक सुंदरता, समृद्ध जैव विविधता और विभिन्न साहसिक पर्यटन गतिविधियों का आनंद ले सकेंगे। मुख्य वन संरक्षक (वन्यजीव) श्री उत्तम गुप्ता ने मंगलवार को सत्र का पहला टिकट जारी कर जिप्सी सफारी का शुभारंभ किया। मानसून के बाद शुरू हुए इस सत्र में पर्यटक कोटमसर गुफा, कांगेर धारा और प्रसिद्ध तीरथगढ़ जलप्रपात का भ्रमण कर सकेंगे। इसके साथ ही मांडीपाल में बम्बू राफ्टिंग और कयाकिंग जैसी साहसिक गतिविधियों का भी आनंद ले सकेंगे। सफारी सत्र के समय से पहले शुरू होने से पर्यटकों को बस्तर की प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत को करीब से देखने का अतिरिक्त अवसर मिलेगा। इससे क्षेत्र में पर्यटन गतिविधियों और स्थानीय आजीविका को भी प्रोत्साहन मिलने की उम्मीद है। पर्यटकों को बस्तर की जनजातीय संस्कृति से परिचित कराने के लिए कोटमसर बैरियर पर इको विकास समिति द्वारा धुरवा जनजातीय नृत्य का आयोजन किया जा रहा है। इस पहल से स्थानीय संस्कृति को प्रोत्साहन मिलने के साथ समुदाय के लिए आजीविका के अवसर भी बढ़ेंगे।

बिलासपुर संभाग के 850 श्रद्धालु विशेष ट्रेन से अयोध्या धाम रवाना

रायपुर। छत्तीसगढ़ सरकार की महत्वाकांक्षी श्री रामलला दर्शन योजना प्रदेश के श्रद्धालुओं की आस्था, श्रद्धा और धार्मिक आकांक्षाओं को साकार करने का माध्यम बन रही है। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में संचालित इस योजना के अंतर्गत आज बिलासपुर रेलवे स्टेशन से बिलासपुर संभाग के विभिन्न जिलों के 850 श्रद्धालुओं को लेकर विशेष ट्रेन प्रभु श्री रामलला के दर्शन के लिए अयोध्या धाम रवाना हुई। श्रद्धा, भक्ति और उल्लास से परिपूर्ण वातावरण में तीर्थयात्रियों ने भगवान श्रीराम के जयकारों के साथ अपनी पवित्र यात्रा का शुभारंभ किया। इस यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं को अयोध्या धाम में प्रभु श्री रामलला के दर्शन के साथ चारणप्सी में बाबा काशी विश्वनाथ के दर्शन का भी सौभाग्य प्राप्त होगा। बिलासपुर रेलवे स्टेशन पर आयोजित विशेष कार्यक्रम में जांजगीर-चांपा लोकसभा क्षेत्र की सांसद श्रीमती कमलेश जांगड़े, बिल्हा विधायक श्री धरमलाल कौशिक तथा जिला पंचायत बिलासपुर के अध्यक्ष श्री राजेश सूर्यवंशी सहित अन्य जनप्रतिनिधियों ने विशेष ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर जिला प्रशासन, छत्तीसगढ़ टूरिज्म बोर्ड, रेलवे तथा भारतीय रेलवे खानपान एवं पर्यटन निगम (आईआरसीटीसी) के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री साय के नेतृत्व में जशपुर में खेल अधोसंरचना का विस्तार



रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार प्रदेश में खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने और खिलाड़ियों को बेहतर खेल सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए लगातार कार्य कर रही है। इसी दिशा में मुख्यमंत्री श्री साय के गृह जिले जशपुर में 3 करोड़ 52 लाख रुपये की लागत से निर्मित मल्टीपरपज इंडोर बास्केटबॉल स्टेडियम खिलाड़ियों के लिए महत्वपूर्ण सुविधा के रूप में विकसित हुआ है। आधुनिक खेल अधोसंरचना के विस्तार से जिले के युवा खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा निखारने, नियमित अभ्यास करने और खेल के क्षेत्र में आगे बढ़ने के बेहतर अवसर मिल रहे हैं। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने 28 मार्च 2026 को जशपुर प्रवास के दौरान इस मल्टीपरपज इंडोर बास्केटबॉल स्टेडियम का शुभारंभ किया था। स्टेडियम के निर्माण से जिले के खिलाड़ियों को विभिन्न इनडोर खेलों के अभ्यास के लिए सुविधाजनक स्थान उपलब्ध हुआ है। विशेष रूप से ग्रामीण और जनजातीय अंचलों से आने वाले प्रतिभावान खिलाड़ियों के लिए यह खेल परिसर अपनी क्षमताओं को विकसित करने और प्रतिस्पर्धात्मक खेलों की तैयारी करने का महत्वपूर्ण माध्यम बनेगा। जशपुर में निर्मित मल्टीपरपज इंडोर बास्केटबॉल स्टेडियम में खिलाड़ियों को बास्केटबॉल के साथ शतरंज, कैरम और टेबल टेनिस जैसे खेलों के अभ्यास की सुविधा उपलब्ध होगी। इससे विभिन्न खेल विधाओं में रुचि रखने वाले बच्चों और युवाओं को अपनी पसंद के खेल में नियमित अभ्यास करने और कौशल विकसित करने का अवसर मिलेगा। इनडोर स्टेडियम की सुविधा से खिलाड़ियों को मौसम की प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अभ्यास जारी रखने में सहायित होगी। बास्केटबॉल जैसे खेलों में शारीरिक क्षमता, गति और टीम भावना विकसित होती है, वहीं शतरंज, कैरम और टेबल टेनिस जैसे खेल एकप्रता, रणनीतिक सोच और मानसिक दक्षता को बढ़ावा देते हैं। एक ही परिसर में विभिन्न खेलों की सुविधाएं उपलब्ध होने से जिले में खेल गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलेगा। जशपुर जिले में खेल प्रतिभाओं की कमी नहीं है।

राजधानी/छत्तीसगढ़

सिरपुर को अंतर्राष्ट्रीय पहचान: यूनेस्को की अस्थायी विश्व धरोहर सूची में हुई शामिल

महानदी के तट पर बसी प्राचीन दक्षिण कोसल की राजधानी सिरपुर अब विश्व पर्यटन मानचित्र पर बनाएगी विशिष्ट पहचान

रायपुर। छत्तीसगढ़ की गौरवशाली ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और पुरातात्विक विरासत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि सामने आई है। महासमुंद्र जिले में पुण्य सलिला महानदी के तट पर स्थित प्राचीन नगरी सिरपुर को संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) की विश्व धरोहर की अस्थायी सूची (इंटरहेरिटेज १९६६ १९६६ १९६६) में शामिल किया गया है। यह उपलब्धि छत्तीसगढ़ की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। प्राचीन मंदिरों, बौद्ध विहारों, दुर्लभ मूर्तिकला, स्थापत्य वैभव और धार्मिक सहिष्णुता की अनूठी परंपरा के लिए प्रसिद्ध सिरपुर अब विश्व धरोहर का दर्जा प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री

विष्णु देव साय के नेतृत्व में राज्य सरकार छत्तीसगढ़ की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण, संवर्धन और उन्हें राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर स्थापित करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री राजेश अग्रवाल के मार्गदर्शन में प्रदेश के महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थलों को वैश्विक पहचान दिलाने तथा सांस्कृतिक पर्यटन को संभावनाओं को विस्तार देने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। सिरपुर का यूनेस्को की अस्थायी सूची में शामिल होना इसी दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में देखा जा रहा है। इस उपलब्धि से सिरपुर की ऐतिहासिक महत्ता को अंतरराष्ट्रीय पहचान मिलने तथा भविष्य में पर्यटन गतिविधियों के विस्तार की संभावनाएं मजबूत होंगी। उल्लेखनीय है कि केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने 1 जनवरी 2026



को सिरपुर के ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्थलों का अवलोकन किया था। इस दौरान उन्होंने सिरपुर की समृद्ध विरासत, प्राचीन स्मारकों और स्थापत्य कला की सराहना करते हुए इनके संरक्षण एवं संवर्धन के लिए आवश्यक कार्य किए जाने तथा सिरपुर को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल कराने के लिए प्रार्थमिकता से प्रयास करने

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू आज आएंगी छत्तीसगढ़

रायपुर। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का गुरुवार आज छत्तीसगढ़ का दौरा प्रस्तावित है। दो दिवसीय दौरे में वह रायपुर और जगदलपुर में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल होंगी। राष्ट्रपति मुर्मू आज बृद्धालाल स्थित बलबीर सिंह जुनेजा इंडोर स्टेडियम में नुआखाई पर्व के पर आयोजित सेवा सम्मान पर्व एवं युवा प्रबोधन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर शामिल होंगी।

वहीं 23 अक्टूबर को जगदलपुर में बस्तर दशहरा के मुरिया दरबार में शिरकत करेंगी। छत्तीसगढ़ के प्रस्तावित दो दिवसीय दौरे पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू विभिन्न कार्यक्रमों का हिस्सा बनेंगी। 22 अक्टूबर को रायपुर स्थित लोक भवन में महामहिम राष्ट्रपति दोपहर 12५5 बजे पूज्य माता हासी देवी जी के सम्मान में 200 रुपये मूल्यवर्ग का स्मारक सिक्का जारी करेंगी।

इसके बाद वह शाम 4 बजे बुढ़ापा में स्थित बलबीर सिंह जुनेजा इंडोर स्टेडियम में नुआखाई पर्व के अवसर पर आयोजित ‘सेवा सम्मान पर्व’ एवं ‘युवा प्रबोधन’ कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगी। लोकभवन में ही रात्रिविश्राम करेंगी। राष्ट्रपति

की बात कही थी। सिरपुर का इतिहास भारतीय सभ्यता, धार्मिक सहिष्णुता, सांस्कृतिक समन्वय और स्थापत्य कला की अद्भुत विरासत को समेटे हुए है। प्राचीन काल में श्रीपुर के नाम से विख्यात यह नगर पाण्डुवंशी शासकों के शासनकाल में दक्षिण कोसल की राजधानी रहा। महानदी के तट पर स्थित यह नगर राजनीतिक, धार्मिक, धार्मिक परंपराओं का सहअस्तित्व है। स्वयं शैव मत के अनुयायी होने के बावजूद महाशिवगुप्त बालार्जुन ने बौद्ध विहारों को उदारतापूर्वक दान देकर संरक्षण प्रदान किया। यह तथ्य सिरपुर को प्राचीन भारत में धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक समन्वय के महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में स्थापित करता है।

सिरपुर का विश्वप्रसिद्ध लक्ष्मण मंदिर भारतीय स्थापत्य कला की उत्कृष्ट

प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी इस क्षेत्र की यात्रा की थी। उनके यात्रा विवरणों में यहां बौद्ध धर्म की समृद्ध परंपरा का उल्लेख मिलता है। उस काल में इस क्षेत्र में लगभग 100 बौद्ध संघाराम और महायान परंपरा के लगभग 10 हजार भिक्षुओं की उपस्थिति का वर्णन मिलता है। सिरपुर की सबसे बड़ी विशेषता यहां शैव, वैष्णव, बौद्ध और जैन धार्मिक परंपराओं का सहअस्तित्व है। स्वयं शैव मत के अनुयायी होने के बावजूद महाशिवगुप्त बालार्जुन ने बौद्ध विहारों को उदारतापूर्वक दान देकर संरक्षण प्रदान किया। यह तथ्य सिरपुर को प्राचीन भारत में धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक समन्वय के महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में स्थापित करता है।

सिरपुर का विश्वप्रसिद्ध लक्ष्मण मंदिर भारतीय स्थापत्य कला की उत्कृष्ट



अपनी परेशानियां राजा के सामने रखते थे, जिसके बाद राजपरिवार की ओर से उनके समाधान के लिए निर्देश दिए जाते थे। समय के साथ इस परंपरा का स्वरूप बदला है, लेकिन इसका महत्व आज भी कायम है। अब मुरिया दरबार में गांवों के मुखिया शामिल होकर

लोगों की समस्याएं सुनते हैं और उन्हें संबंधित स्तर पर उठाते हैं। यह भी बताया जाता है कि मुरिया दरबार का बस्तर के 80 परगनों के मुखिया, चालकी, मेम्बर और मेम्बरीन हिस्सा बनते हैं।

राष्ट्रपति मुर्मू के दौरे को लेकर पुलिस-प्रशासन ने पूरी तैयारी कर ली है। रायपुर और बस्तर डिवीजनों के संबंधित जिला कलेक्टरों, पुलिस आयुक्त और पुलिस अधीक्षकों को आवश्यक व्यवस्थाओं के संबंध में स्पष्ट निर्देश दिए गए थे।

रायपुर के स्वामी विवेकानंद एयरपोर्ट और जगदलपुर के मां देतेश्वरी हवाई अड्डे में सुरक्षा के पुख्ता इंतैजाम किए गए हैं। वहीं कार्यक्रम स्थल के क्षेत्र में पुलिस का कड़ा पहरा रहने वाला है।

यादव समाज ने घेरा पुरानी बस्ती थाना, शीतला मंदिर के पीठाधीश पर एफआईआर दर्ज

रायपुर। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर के पुरानी बस्ती स्थित 250 पुराने शीतला मंदिर में नवरात्र के दौरान लगे आपत्तिजनक सूचना बोर्ड का विवाद जारी है। मामले में शिकायत के बाद बुधवार को आक्रोशित यादव समाज ने पुरानी बस्ती थाना का घेराव किया। इस दौरान जमकर नारेबाजी भी की गई।

पुलिस ने समाज के आक्रोश के बीच पीठाधीश नीरज सैनी एफआईआर दर्ज कर ली है। दरअसल, शीतला माता मंदिर परिसर में लगे सूचना बोर्ड पर लिखा गया था कि ठग रौताइनों से सावधान, जल चढ़ाने हेतु किसी भी रौताइन को रुपये न दें।

यादव समाज का आरोप है कि इस तरह के शब्दों से समाज की महिलाओं का अपमान हुआ है और इससे पूरे समाज की भावनाएं आहत हुई हैं। समाज के लोगों ने मांग की है कि सूचना बोर्ड से इस तरह के आपत्तिजनक शब्दों को हटाया जाए। इससे पहले 17 अक्टूबर को भी यादव समाज ने नाराजगी जताते हुए पुरानी बस्ती थाना पहुंचा था, जहां घटना के संबंध में शिकायत दी गई थी। समाज ने मंदिर परिसर के सूचना बोर्ड



पर लिखे कथित आपत्तिजनक शब्दों को समाज की महिलाओं के सम्मान से जुड़ा मामला बताया था। कांग्रेस विधायक देवेन्द्र यादव ने सोशल मीडिया पर मामले को लेकर पोस्ट किया था। इसमें उन्होंने कहा कि एक तरफ नवरात्र में मां भगवती की पूजा हो रही है दूसरी तरफ संपूर्ण यादव राउत समाज की अस्मिता हमारी माताओं बहनों को जातीसूचक शब्द का प्रयोग कर उन्हें ठग बतलाया जा रहा है। रायपुर के शीतला मंदिर के व्यवस्थापक/पुजारी द्वारा लगाए गए ऐसे पोस्टर से पूरा समाज आहत हुआ है। यह हरकत अक्षम्य है! शासन प्रशासन से अपील करता हूं कि जिसने भी यह कृत्य किया है उसके खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्यवाही हो।

घटना को लेकर यादव समाज ने कुछ दिन पहले पुलिस में शिकायत देकर एफआईआर की मांग की थी।

इंटरनेशनल ट्रेड फेयर : भारत मंडपम में सजेगा छत्तीसगढ़ का भव्य पवेलियन

■ मुख्य सचिव ने 'नवीन औद्योगिक विकास नीति के प्रचार-प्रसार के लिए निर्देश

रायपुर। नई दिल्ली के प्रगति मैदान स्थित भारत मंडपम में आगामी 14 से 27 नवंबर तक आयोजित होने वाले 45वें ‘भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले’ में छत्तीसगढ़ की भागीदारी को लेकर तैयारियां जोरों पर हैं। इसे लेकर आज मंत्रालय महानदी भवन में छत्तीसगढ़ के मुख्य सचिव विकासशील की अध्यक्षता में उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक संपन्न हुई। बैठक में मुख्य सचिव ने व्यापार मेले के दौरान छत्तीसगढ़ पवेलियन के निर्माण, सुरक्षा, ब्रांडिंग और अन्य व्यवस्थाओं को समय-सीमा के भीतर पूरी गुणवत्ता के साथ पूरा करने के कड़े निर्देश दिए हैं। इस वर्ष इस प्रतिष्ठित मेले की थीम ‘विकास और विरासत’ रखी गई है, जो देश की आधुनिक प्रगति और समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं के सुंदर तालमेल को प्रदर्शित करती है। हस्तशिल्प और स्थानीय उत्पादों को लेकर मंच मुख्य सचिव ने कहा कि यह व्यापार मेला छत्तीसगढ़ के हस्तशिल्पियों, स्व-सहायता समूहों और उद्यमियों के लिए अपनी कला और



उत्पादों को राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित करने का एक बड़ा मंच है। मुख्य सचिव ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में छत्तीसगढ़ पवेलियन में कुषि, मिलेट और वनोपज का प्रदर्शन कुषि एवं किसान कल्याण तथा उद्यानिकी विभाग को छत्तीसगढ़ के प्रमुख मिलेट उत्पादों-कोदो, कुटकी, रागी और अन्य विशिष्ट उत्पादों को आकर्षक ढंग से प्रदर्शित करने के निर्देश दिए गए हैं। वहीं, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग को लघु वनोपज संघ के माध्यम से छत्तीसगढ़ हर्बल उत्पादों के प्रदर्शन एवं विक्रय की पुख्ता व्यवस्था करने को कहा गया है। इस पवेलियन के नोडल विभाग वाणिज्य एवं उद्योग विभाग को ‘नवीन औद्योगिक विकास नीति 2024–2030’ एवं विभिन्न निवेश योजनाओं के व्यापक प्रचार-प्रसार के निर्देश दिए गए हैं। साथ ही पर्यटन विभाग को राज्य के प्रमुख पर्यटन स्थलों

की जानकारी और संस्कृति विभाग को सांस्कृतिक कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने के निर्देश दिए गए हैं। ग्रामोद्योग विभाग के अंतर्गत हथकरघा बुनकर सहकारी संघ और ‘शबरी’ के माध्यम से हस्तशिल्प उत्पादों के प्रदर्शन व बिक्री की तैयारियों की भी समीक्षा की गई। मुख्य सचिव ने ग्रामोद्योग विभाग के अधिकारियों को हथकरघा बुनकर सहकारी संघ एवं शबरी के माध्यम से उत्पाद प्रदर्शन एवं विक्रय के लिए हस्तशिल्पियों द्वारा प्रदर्शन किए जाने के लिए विभागीय तैयारियों की जानकारी ली। मेले के दौरान छत्तीसगढ़ पवेलियन में आयोजित होने वाले ‘राज्य दिवस’ के अवसर पर भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों और प्रदेश के लोक कलाकारों द्वारा जीवंत प्रदर्शन की तैयारियां अभी से शुरू करने के निर्देश दिए गए हैं। अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने को कहा गया है कि मेले में छत्तीसगढ़ की उत्कृष्ट कला, संस्कृति, हस्तशिल्प और औद्योगिक विकास की झलक अत्यंत प्रभावी ढंग से प्रस्तुत हो। 14 नवंबर से 27 नवंबर तक मेला का आयोजन किया जाएगा, जिसमें 14 नवंबर से 18 नवंबर विशेष रूप से व्यापारिक और व्यावसायिक आगंतुकों के लिए आरक्षित है।

सीएम बोले: बारिश में जहां वाहन चलने चाहिए वहां चलाना पड़ता है नाव

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा है कि राज्य सरकार शहरों के सुनियोजित और आधुनिक विकास को प्राथमिकता दे रही है। शहरों में सीवरेज सिस्टम दुरुस्त करने, जल निकासी की व्यवस्था सुधारने, बिजली के तारों को भूमिगत करने और पेयजल की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करने पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि बारिश के दौरान जलभराव के कारण कई जगहों पर ऐसी स्थिति बन जाती है कि जहां वाहनों को चलना चाहिए, वहां नाव चलाने की नौबत आ जाती है। इस स्थिति को बदलने के लिए शहरी बुनियादी सुविधाओं को मजबूत करना आवश्यक है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय रायपुर में आयोजित अर्बन चैलेंज फंड कॉन्क्लेव को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि शहरों के सुनियोजित विकास को लेकर दो एमओयू किए गए हैं। इन समझौतों से राज्य को केवल आर्थिक सहायता ही नहीं मिलेगी, बल्कि तकनीकी सहयोग और विशेषज्ञों के सुझाव भी प्राप्त होंगे। इससे शहरों की मौजूदा समस्याओं का समाधान करने और भविष्य की जरूरतों के अनुरूप विकास योजनाएं तैयार करने में मदद



मिलेगी। सीएम ने कहा, प्रदेश के सभी क्षेत्रों में लगातार विकास कार्य हो रहे हैं। शहरी क्षेत्रों में बारिश के दौरान सीवरेज सिस्टम दुरुस्त नहीं होने के कारण जलभराव की स्थिति बनती है। महापौर और नगरीय निकाय इस दिशा में काम करेंगे, ताकि आने वाले दिनों में ऐसी समस्याओं का सामना न करना पड़े। बिजली के तारों को भी भूमिगत कराया जाएगा, जिससे दुर्घटनाओं का खतरा कम हो सके। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का लक्ष्य वर्ष 2047 तक विकसित भारत का निर्माण करना है। इस लक्ष्य को हासिल करने में शहरों का व्यवस्थित, आधुनिक और टिकाऊ विकास महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। छत्तीसगढ़ सरकार इस संकल्प राज्य की जीडीपी को 6 लाख करोड़ रुपये से बढ़ाकर 75 लाख करोड़ रुपये तक पहुंचाना है। इसके लिए आर्थिक विकास के साथ शहरी

अधोसंरचना को मजबूत करना भी जरूरी है। सीएम ने कहा कि राज्य सरकार मुख्यमंत्री शहर समृद्धि योजना और नगरोत्थान योजना के माध्यम से भी शहरी विकास के लिए काम कर रही है। अब केंद्र सरकार द्वारा अर्बन चैलेंज फंड की व्यवस्था किए जाने से शहरों के विकास के लिए नए अवसर उपलब्ध होंगे। इस फंड के जरिए शहरों में विकास की संभावनाओं, वर्तमान व्यवस्थाओं और भविष्य की आवश्यकताओं पर व्यापक चर्चा की जाएगी। मुख्यमंत्री साय ने शहरों की बुनियादी समस्याओं का उल्लेख करते हुए कहा कि सभी शहरों में सीवरेज सिस्टम को दुरुस्त किया जाना चाहिए। बारिश के दौरान जलभराव की समस्या आम जनजीवन और यातायात को प्रभावित करती है। इससे निपटने के लिए बेहतर ड्रेनेज सिस्टम विकसित करना जरूरी है। उन्होंने शहरों में बिजली के तारों को व्यवस्थित करने और संभव हो तो उन्हें भूमिगत करने की दिशा में काम करने पर भी जोर दिया। साथ ही नागरिकों को पर्याप्त और नियमित पेयजल उपलब्ध कराने के लिए प्रभावी व्यवस्था विकसित करने की आवश्यकता बताई।

यूटीटी 24वीं छत्तीसगढ़ राज्य व अंतर जिला टेबल टेनिस प्रतियोगिता आज से

रायपुर। छत्तीसगढ़ टेबल टेनिस संघ द्वारा भारतीय जीवन बीमा निगम एवं सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के सहयोग से 22 से 25 अक्टूबर 2026 तक यूटीटी 24वीं छत्तीसगढ़ राज्य एवं अंतर जिला टेबल टेनिस प्रतियोगिता-2026 का आयोजन सप्रे शाला टेबल टेनिस हॉल, बुढ़ापारा, रायपुर में किया जा रहा है। छत्तीसगढ़ टेबल टेनिस संघ के सचिव सार्थक शुक्ला ने बताया कि 22 अक्टूबर को टीम वर्ग (सीनियर पुरुष एवं महिला/यूथ -19/जूनियर-17/ सब जूनियर-15/ कैंडेट-13/होपस-11 बालक एवं बालिका), 23 अक्टूबर को यूथ अंडर-19 (यूथ) एवं यूथ अंडर-15 (सब जूनियर) एकल वर्ग (बालक/बालिका)।

प्रारूप (एक)	प्रारूप (एक)
समाचार प्रपत्र में प्रकाशित की जाने वाली सूचना	समाचार प्रपत्र में प्रकाशित की जाने वाली सूचना
मैं मंजू जांगिड़ (पुराना नाम जिसे बदला जाना है) उम्र 46 वर्ष पति-गोविंद शर्मा, पता-एच.न-2/367, मोहराष्ट्र मंडल, कबीर नगर, रायपुर, थाना-कबीर नगर, पोस्ट-रविशंकर युनिवर्सिटी, तहसील व जिला-रायपुर राज्य-छत्तीसगढ़ पिन कोड 492010 ने अपना (पुराना नाम) मंजू जांगिड़ को बदलकर (नया नाम) मंजू शर्मा मंजू शर्मा रख लिया है।	मैं कोयारी ज्योति (पुराना नाम जिसे बदला जाना है) उम्र 23 वर्ष पति-सोनु कुशवाहा, पता-म.नं.3007, वार्ड-14, राजीव नगर, मोहबा बाजार, थाना-आमानाका, पोस्ट-टाटीबंध, तहसील व जिला-रायपुर राज्य-छत्तीसगढ़ पिन कोड 492099 ने अपना (पुराना नाम) कोयारी ज्योति को बदलकर (नया नाम) ज्योति कुशवाहा ज्योति कुशवाहा रख लिया है।
मंजू जांगिड़ कबीर नगर, रायपुर	कोयारी ज्योति मोहबा बाजार, रायपुर

आम सूचना
(ग्राम- गठपुरैना, संजय नगर, आर.डी.ए, प्लॉट भूखण्ड क्र. 294 रकबा 450 वर्गफुट भूमि पर निर्मित दो मंजिला मकान को किसी के द्वारा कब्जा किए जाने के संबंध में इलेक्ट्रॉनिक सूचना के संबंध में)
जाना है कि मेरे पक्षकार श्री नवेद खान पिता मयूरेश्वर, प.ह.नं. 105, राजिन.रा. रायपुर, तह. व एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया अहमद खान द्वारा अपनी वैतुक संपत्ति जो ग्राम जिला रायपुर (छ.ग.) स्थित भूखण्ड नंबर 294, रकबा 450 वर्गफुट आर.डी.ए. रायपुर को मयूरेश्वर योजना क्र. 07 को संरचना के तहत शासकीय भूमि है। उक्त भूमि मेरे पक्षकार की माता श्रीमती शाहिदा तबस्सुम पति श्री अहमद खान, निवासी-294, आरडीए प्लॉट, संजय नगर थाना टिकरापाटा रायपुर (छ.ग.) के नाम पर पर दर्ज है। जिसमें मेरा पक्षकार प्रार्थन से ही अपने परिवार रहित शांतिपूर्ण ढंग से निवास करता आ रहा है। कुछ दिनों से मेरे पक्षकार का उसके पिता अहमद खान से घरेलू बातों को लेकर वाद विवाद होने से वह मेरे पक्षकार की माता को बल्ला फुसलाकर उक्त मकान को विक्रय करने का प्रयास किया जा रहा है।
अतः उपरोक्त सम्पत्ति भूखण्ड क्र. 294 रकबा 450 वर्गफुट मकान निर्मित दो मंजिला मकान के परिपेक्ष्य में कोई भी व्यक्ति, संस्था, कंपनी, शासकीय, अर्द्धशासकीय निकाय, बोर्ड, गठन, साहकारी, बैंक, ट्रस्ट इत्यादि कोई भी संयंत्रवाह निषादित ना करें अन्यथा उपरोक्त संयंत्रवाह पूर्णतः स्थूल रूप से शून्य होवेगी तथा उपरोक्त संयंत्रवाह के प्रति नही होवेगी तथा उपरोक्त संयंत्रवाह मेरे पक्षकार पर किसी भी रूप मे बंधनकारी नही होवेगी तथा मेरे पक्षकार उपरोक्त हेतु वैधानिक उपचार प्राप्त करने हेतु स्वतंत्र होवेगा।
सो सूचना जाने।
सिवलैन रजा (अधिवक्ता) कार्यालय-बुधारी मस्जिद के पास, हनुमान वाटिका, फेस-03 कबीर नगर, रायपुर (छ.ग.)

संसद का विशेष सत्र सरकार के लिए आग का दरिया?

डॉ. रमेश ठाकुर

भोजन मूलभूत आवश्यकताओं के अलावा, प्रत्येक इंसान का बुनियादी अधिकार भी है। भोजन अनमोल है जिसका सम्मान करना सभी का कर्तव्य है। आज ‘विश्व खाद्य दिवस’ है जो सालाना 16 अक्टूबर को पूरे संसार में इस मकसद से मनाया जाता है कि अन्न की बर्बादी को रोकने के लिए जनमानस को जागरूक किया जाए। नवंबर 1979 को संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन के 20वें सम्मेलन में खाद्य दिवस को मनाने का निर्णय हुआ जिसका पहली बार आयोजन वर्ष 1981 में हुआ। दुनिया में भूख से बढ़ते कुपोषण पर नियंत्रण को ध्यान में रखकर संयुक्त राष्ट्र ने वैश्विक संघों को चेताया था। ये दिवस इस बात पर ज्यादा जोर देता है कि हमें थाली में उतना ही भोजन परोसना चाहिए, जितने की पेट को जरूरत हो। ज्यादा भोजन लेंगे तो निश्चित रूप से बर्बाद ही होगा। फूड इंडेक्स पर यूएनईपी-2024 की रिपोर्ट के मुताबिक हिंदुस्तान में सालाना करीब 7.8 करोड़ टन भोजन बर्बाद होता है, जिसका औसत लगभग 21.4 करोड़ किलोग्राम प्रतिदिन आंका गया। विश्व खाद दिवस-2025 की थीम थी ‘बेहतर भोजन और बेहतर भविष्य साथ-साथ’ जो एग्रीफूड सिस्टम को बदलने में वैश्विक सहयोग की शक्ति को उजागर करती है। भोजन बर्बादी की समस्या संसार में बड़ी आपहत के रूप में उभरी है। ऐसे तमाम मुल्क हैं जहां अन्न का उत्पादन शुन्य है और दूसरे देशों के उत्पाद-भोजन पर ही निर्भर हैं, बावजूद इसके बेहताशा भोजन बर्बाद करते हैं। हाल ही में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण की ‘फूडवेस्टाइज इंडेक्स रिपोर्ट-2026’ सामने आई जिसमें दुनिया भर में 1.05 अरब टन भोजन बर्बाद होता बताया गया जिससे नई किस्म की न सिर्फ बीमारियां-वायरस फैले, बल्कि पर्यावरण भी दुष्प्रति हुना। भारत में पिछले 10 वर्षों में अन्न उत्पादन 90 मिलियन मीट्रिक टन पिछले एक दशक से ज्यादा हुआ है। धरती पर मात्र भारत ही एक ऐसा मुल्क है जो करीब 76 देशों को विभिन्न किस्म का अन्न सप्लाई करता है जिसमें चीनी, दालें, चावल, मखाने, सरसों और सब्जियां प्रमुख रूप से शामिल हैं। तमाम ऐसे इस्लामिक देश हैं जो भारत में उत्पादित बासमती चावल ही पसंद करते हैं। ईरान-ईराक में चावल की सप्लाई सिर्फ भारत से ही होती है। अन्न निर्यात के लिहाज से भारत विश्व का बड़ा बाजार बनकर इस समय उभरा है। संसार में भारत दूध और बाजरे के निर्माण में नंबर वन पायदान है। वर्ष 2014 के बाद से हिंदुस्तान शहद, अंडे, मछलियां और फल-सब्जियों के उत्पादन में दूसरे स्थान पर काबिज हुआ है। जबकि, कभी चौथे स्थान पर हुआ करता था। भूखे सोना विकसित संसार के माथे पर कलंक जैसा है। भूख के आंकड़े आज भी डरावने हैं। संसार का एक बड़ा इंसानी हिस्सा अभी भी रात में भूखे पेट सोता है। जबकि, रोजाना जितनी भोजन की बर्बादी होती है, थालियों में खाने को व्यर्थ करके लोग फेंक देते हैं, अगर ऐसा ना किया जाए, तो भूखे सोने वालों के आंकड़ों में कमी लाई जा सकती है। भोजन की बर्बादी से न केवल अन्न और धान का नुकसान होता है, बल्कि पानी, बिजली और अन्नदाताओं का सालाना मेहनत भी बेकार होती है। इससे पर्यावरण पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। भूख से निपटने के लिए वैश्विक स्तर पर सभी देशों को चेताना होगा। भूख और अन्न बर्बादी के नियंत्रण पर भारत जैसी पहल अन्य देशों को भी करनी होगी। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम-2013 से प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना, पीएम पोषण योजना, अंत्योदय अन्न योजना, राइस फोर्टिफिकेशन और प्राइस स्टेबिलाइजेशन फंड जैसी प्रमुख पहले भारत की खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने की प्रतिबद्धता को सुदृढ़ कर रही हैं। भारत में 80 करोड़ लोग मुफ्त अन्न वितरण योजना के लाभार्थी हैं, इसलिए सरकार का प्रयास है कि कोई भी व्यक्ति भूखे पेट नहीं सोए। लेकिन भोजन की बर्बादी भारत में भी कम नहीं है। आंकड़े इस समस्याओं के गवाह हैं।

भारतीय दार्शनिक समुदाय

19- थेरावाद या प्रारम्भिक पाली बौद्धधर्म

गतांक से आगे...

सर्वास्तिवादी यह नहीं मानते कि उनका संस्कृत त्रिपिटक पाली त्रिपिटक पर आश्रित था। पाली त्रिपिटक भी कहाँ तक बुद्ध के मूल वचनों पर आश्रित है, इस पर आलोचक भिन्न भिन्न विचार रखते हैं। कुछ आलोचकों का विचार है कि मूल त्रिपिटक किसी और रूप में था, जो कि लुप्त हो गया है और उसी पर थेरावादियों का पाली त्रिपिटक और सर्वास्तिवादियों का संस्कृत त्रिपिटक दोनों आश्रित थे। सर्वास्तिवाद का उदय बौद्धों के महायान के उदय से पूर्व ही हुआ था। यद्यपि सर्वास्तिवादी हीनयान के अन्तर्गत ही हैं, परन्तु उनकी भाषा महायान के समान ही संस्कृत थी। कभी 2 सर्वास्तिवाद को हीनयान और महायान के बीच की कड़ी के रूप में भी समझा जाता है। यहाँ पर हमें विशेष कर सर्वास्तिवादियों के दर्शनशास्त्र पर विचार करना है। दर्शनशास्त्र का आधार, जैसा कि ऊपर कहा गया है, अभिधर्मपिटक है। अभिधर्मपिटक

के विषय में सर्वास्तिवादियों का थेरावादियों से एक और भी बड़ा अन्तर यह है कि थेरावादी अपने अभिधर्मपिटक को (उसके कथावस्तु नामक अंश को छोड़कर) मनुष्य की रचना नहीं मानते अर्थात् बुद्ध के वचन के रूप में मानते हैं। सर्वास्तिवादी अपने अभिधर्मपिटक के भिन्न भिन्न ग्रन्थों को विशिष्ट मनुष्यों की ही रचना मानते हैं, यद्यपि वे ग्रन्थ सूत्रपिटक के अन्तर्गत बुद्ध के वचनों पर ही निर्भर हैं। सर्वास्तिवादियों के अभिधर्मपिटक के ग्रन्थों में मुख्य कात्यायनी-पुत्र का ज्ञानप्रस्थानशास्त्र माना जाता है। यह सर्वास्तिवादियों के विश्वकोश के समान है। यह ग्रन्थ अपने मूल संस्कृत रूप में नष्ट हो चुका है, परन्तु इसका हस्त्यांग कृत चीनी अनुवाद विद्यमान है। इस ग्रन्थ का दूसरा नाम महाविभाषा या अभिधर्मविभाषाशास्त्र भी है, जिसके कारण सर्वास्तिवादी वैभाषिक (अर्थात् विभाषा को मानने वाले) कहलाते हैं।
क्रमशः...



ज्ञान/मीमांसा

दक्षिण की राजनीति में बदलाव के संकेत

सौम्य वार्षण्य

केंद्र सरकार के विधायी एजेंडे का समर्थन करने वाले दक्षिण भारतीय दलों का चुनाव आयोग के खिलाफ मुखर होना बदलते राजनीतिक समीकरणों का संकेत है। एसआईआर, वोट चोरी के आरोप और चुनावी निष्पक्षता पर उठते सवालों के बीच आगामी विधानसभा चुनावों में विपक्ष की रणनीति और सहयोगी दलों का रुख महत्वपूर्ण हो सकता है।

भारतीय राजनीति में बदलाव की आहट अब केवल उत्तर भारत तक सीमित नहीं दिखाई देती, बल्कि दक्षिण भारत के राजनीतिक गलियारों में भी नए समीकरण उभरते नजर आ रहे हैं। जिन क्षेत्रीय दलों ने संसद में कई मौकों पर केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार के विधायी एजेंडे को आगे बढ़ाने में सहयोग किया, उनमें से कुछ का चुनाव आयोग और चुनावी प्रक्रिया को लेकर अधिक मुखर होना राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। सवाल यह है कि क्या यह केवल अपने राज्यों के राजनीतिक हितों की रक्षा का प्रयास है, या इसके पीछे राष्ट्रीय राजनीति में बदलते जनमत और सत्ता के समीकरणों का भी संकेत छिपा है?

दक्षिण भारत की राजनीति लंबे समय से अपनी अलग पहचान रखती है। तमिलनाडु, केरल, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में मतदाताओं के मुद्दे, क्षेत्रीय अस्मिता, सामाजिक न्याय, भाषा, विकास और स्थानीय नेतृत्व की भूमिका चुनावी परिणामों को प्रभावित करती रही है। यहां किसी राष्ट्रीय दल के लिए केवल राष्ट्रीय लोकप्रियता के आधार पर राजनीतिक बहुत बनाए रखना आसान नहीं होता। क्षेत्रीय दलों की मजबूत जड़ें और स्थानीय नेतृत्व की स्वीकार्यता केंद्र की राजनीति में भी उनकी भूमिका को महत्वपूर्ण बनाती हैं।

चुनाव आयोग की भूमिका और मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआईआर को लेकर उठ रहे सवाल अब व्यापक राजनीतिक बहस

का विषय बनते जा रहे हैं। कांग्रेस और अन्य विपक्षी दल चुनावी प्रक्रिया की पारदर्शिता, मतदाता सूची की शुद्धता और मताधिकार की सुरक्षा को लेकर सरकार तथा चुनाव आयोग से जवाब मांग रहे हैं। विपक्ष की ओर से लगाए जा रहे वोट चोरी के आरोपों ने भी इस बहस को राजनीतिक धार दी है। हालांकि, इन आरोपों को प्रमाणित तथ्य मानने के बजाय उनकी निष्पक्ष जांच, उपलब्ध साक्ष्यों और आयोग के जवाब के आधार पर परखना आवश्यक है।

ऐसे माहौल में यदि दक्षिण भारत के क्षेत्रीय दल भी खुलकर अपनी आपत्तियां सामने रखते हैं, तो इसे केवल विपक्षी राजनीति का विस्तार, कहकर खारिज नहीं किया जा सकता। यह भी संभव है कि इन दलों को अपने राज्यों में मतदाता सूची, संघीय अधिकारों और चुनावी प्रतिस्पर्धा से जुड़े मुद्दों पर राजनीतिक दबाव महसूस हो रहा हो। उनके रुख से यह संकेत जरूर मिलता है कि संसद में किसी मुद्दे पर सहयोग और चुनावी व्यवस्था पर सवाल उठाने के बीच राजनीतिक दल अपना स्वतंत्र दृष्टिकोण बनाए रख सकते हैं। यह प्रश्न आज राजनीतिक चर्चा के केंद्र में है कि क्या मोदी लहर की लोकप्रियता और भाजपा की चुनावी पकड़ में पहले जैसी मजबूती नहीं रही। लेकिन किसी एक विरोध प्रदर्शन, प्रेस वार्ता या क्षेत्रीय दल के बदले हुए रुख को मोदी लहर के कमजोर पड़ने का निर्णायक प्रमाण मानना जल्दबाजी होगी। राष्ट्रीय राजनीति में लोकप्रियता का आकलन करने के लिए चुनावी नतीजों, जनमत प्रदर्शन, प्रेस वार्ता या क्षेत्रीय दल के बदले हुए रुख को मोदी लहर के कमजोर पड़ने का निर्णायक प्रमाण मानना जल्दबाजी होगी। राष्ट्रीय राजनीति में लोकप्रियता का आकलन करने के लिए चुनावी नतीजों, जनमत प्रदर्शन, प्रेस वार्ता या क्षेत्रीय दल के बदले हुए रुख को मोदी लहर के कमजोर पड़ने का निर्णायक प्रमाण मानना जल्दबाजी होगी। राष्ट्रीय राजनीति में लोकप्रियता का आकलन करने के लिए चुनावी नतीजों, जनमत प्रदर्शन, प्रेस वार्ता या क्षेत्रीय दल के बदले हुए रुख को मोदी लहर के कमजोर पड़ने का निर्णायक प्रमाण मानना जल्दबाजी होगी। राष्ट्रीय



विपक्ष इन मुद्दों को जनता से प्रभावी ढंग से जोड़ने में सफल रहता है, तो भाजपा के सामने चुनौती बढ़ सकती है। दूसरी ओर, भाजपा का संगठन, नेतृत्व और व्यापक चुनावी नेटवर्क भी उसकी राजनीतिक ताकत के महत्वपूर्ण आधार हैं। इसलिए सवाल केवल मोदी लहर के कमजोर होने का नहीं, बल्कि यह है कि क्या विपक्ष अपने आरोपों और राजनीतिक नाराजगी को ठोस जनसमर्थन में बदलने की क्षमता विकसित कर रहा है।

कांग्रेस चुनाव आयोग के खिलाफ विरोध और वोट चोरी के आरोपों के माध्यम से चुनावी निष्पक्षता को प्रमुख प्रदर्शन, प्रेस वार्ता या क्षेत्रीय दल के रही है। इस रणनीति का उद्देश्य केवल केंद्र सरकार को घेरना नहीं, बल्कि मताधिकार और लोकतांत्रिक संस्थाओं से जुड़े प्रश्नों को आम मतदाता तक पहुंचाना भी है। हालांकि, किसी आंदोलन की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह जनता की वास्तविक चिंताओं से कितना जुड़ा है और उसके समर्थन में कितने विश्वसनीय तथ्य प्रस्तुत किए जाते हैं। विपक्ष के सामने सबसे बड़ी चुनौती उसकी अपनी एकजुटता है। राष्ट्रीय स्तर पर साझा मुद्दे उठाने एक बात है, लेकिन राज्यों में सीटों का बंटवारा, नेतृत्व का प्रश्न और क्षेत्रीय हितों का समन्वय दूसरी बात। दक्षिण भारत के दल कांग्रेस के साथ किसी मुद्दे पर सहमत हो सकते हैं, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि वे हर चुनाव में

राजनीति में समर्थन स्थायी वैचारिक प्रतिबद्धता से अधिक कई बार मुद्दों, राजनीतिक हितों और परिस्थितियों पर निर्भर करता है। यदि किसी दल को लगता है कि केंद्र सरकार के साथ उसके संबंध उसके राज्य की राजनीति या जनाधार को नुकसान पहुंचा रहे हैं, तो वह अपना रुख बदलने पर विचार कर सकता है।

फिर भी, किसी दल की चुनाव आयोग के खिलाफ बयानबाजी या विरोध को केंद्र सरकार से समर्थन वापस लेने का संकेत मानना उचित नहीं होगा। इसके लिए दलों के आधिकारिक वक्तव्यों, संसदीय व्यवहार, गठबंधन संबंधों और ठोस राजनीतिक फैसलों को देखना जरूरी है।

संसद के आगामी शीतकालीन सत्र में चुनावी सुधार, मतदाता सूची, संघीय संबंधों और चुनाव आयोग की जवाबदेही जैसे विषयों पर बहस की संभावना राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहेगी। विपक्ष इन मुद्दों को उठाने का प्रयास कर सकता है, जबकि सरकार अपने विधायी एजेंडे को आगे बढ़ाने पर ध्यान देगी। क्या क्षेत्रीय दल इस दौरान अपना स्वतंत्र रुख अपनाएंगे और क्या संसद में नए राजनीतिक समीकरण दिखाई देंगे, यह आने वाले समय में स्पष्ट होगा।

दक्षिण भारत की राजनीति में बढ़ती मुखरता को भारतीय लोकतंत्र के बदलते राजनीतिक संवाद के रूप में देखा जा सकता है। यह केंद्र सरकार के खिलाफ चेतानवी हो सकती है कि क्षेत्रीय दलों के समर्थन को स्थायी मानकर नहीं चला जा सकता। वहीं विपक्ष के लिए भी यह अवसर है कि वह लोकतांत्रिक संस्थाओं, चुनावी पारदर्शिता और जनहित के मुद्दों पर व्यापक सहमति बनाने का प्रयास करे। लेकिन मोदी लहर के कमजोर पड़ने, सहयोगी दलों के अलग होने या आगामी विधानसभा चुनावों में विपक्ष की निर्णायक बढ़त जैसे निष्कर्ष अभी समय से पहले होंगे।

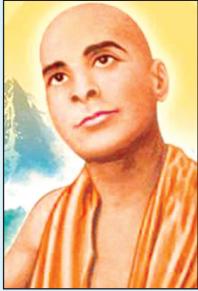
स्वामी रामतीर्थ का जीवन परिचय

‘रामचरित मानस’ के रचनाकार संत तुलसीदास जी से मानते हैं, जबकि कुछ के विचार से इसी नाम के एक और संत थे,

जिनकी प्रसिद्धि उत्तरी-पश्चिमी सीमा पंजाब प्रांत में थी, जिनकी गद्दी ‘चित्रल’ के पास स्थित ‘स्वाट’ में थी। यहां, अपने पूर्वजों की गद्दी पर तीर्थराम अपने पिता के साथ समय-समय पर माथा टेकने जाया करते थे। बालक तीर्थराम जब 5 वर्ष के हुए, तो इन्हें मुरारीवाला प्राइमरी स्कूल पढ़ने के लिए डाल दिया। यहां उनके शिक्षक को, जो मुस्लिम थे, इस बात का संकेत मिल गया था कि उनके पास पढ़ने वाला साधारण-सा दिखने वाला बालक अतिविशिष्ट व्यक्तित्व का धनी है। यह भविष्य में विशिष्ट व्यक्तित्व का धनी

बनेगा। सभी जानते हैं कि उस समय समाज में बाल-विवाह की प्रथा थी। इसके अनुसार कम आयु में ही बच्चों की शादी

कर दी जाती थी। तीर्थराम के साथ भी ऐसा ही हुआ। उनका विवाह मुरारीवाला से 6-7 कोस की दूरी पर स्थित ‘विरोके’ ग्राम के एक ब्राह्मण परिवार की बेटी ‘शिवो देवी’ के साथ कर दिया गया। गांव के स्कूल में शिक्षा पूर्ण हुई तो आगे की शिक्षा के लिए पिता ने तीर्थराम को गुजरांवाला के हाई स्कूल में भेज दिया। यहां उनका संपर्क भगत धन्ना राम से हुआ, जो तीर्थराम के पिता के मित्र थे। धन्ना जी की ख्याति लोगों में एक ऐसे सिद्ध पुरुष के रूप में थी, जिसके द्वारा कही गई बात पूरी हो जाती थी। इसीलिए लोग उन्हें ‘रबजी’ इस नाम



से पुकारते थे। तीर्थराम को भगत जी बाकी लोगों से थोड़ा भिन्न लगे। उनका आवरण संसारी व्यक्तियों का-सा नहीं था। इसलिए उन्होंने भक्त जी को अपना मार्गदर्शक गुरु स्वीकार कर लिया। मार्च सन् 1888 में तीर्थ राम ने मैट्रिक की परीक्षा पास की। पूरे प्रांत में उनका स्थान 38वां था। उन्हें छात्रवृत्ति नहीं मिली। उनके पिता नहीं चाहते थे कि उनका पुत्र अब आगे पढ़े। वह चाहते थे कि नौकरी करके वह उनका साथ दे। परंतु तीर्थराम अभी आगे और पढ़ना चाहते थे। उन्होंने फॉर्मैन क्रिश्चियन कॉलेज, लाहौर में इंटरमीडिएट की परीक्षा के लिए दाखिला ले लिया और इसी कॉलेज से बी.ए. और एम.ए. की परीक्षाएं पास कीं—1890 में इंटरमीडिएट, 1893 में बी.ए. और 1895 में एम.ए.। इंटरमीडिएट में वे पंजाब प्रांत में 25वें, बी.ए. और एम.ए. में प्रांत में प्रथम आए थे।

जब खबर लिखने वाले खुद खबर बन गए

कुमार कृष्णन

लोकतंत्र में पत्रकार का काम केवल घटनाओं को दर्ज करना नहीं, बल्कि उन सवालों को सामने लाना भी है जिन्हें सत्ता और प्रशासन अक्सर असुविधाजनक मानते हैं। लेकिन जब किसी घटना की रिपोर्टिंग करने निकला पत्रकार खुद पुलिस की कार्रवाई का हिस्सा बन जाए, जब प्रेस कांडे दिखाने के बाद भी उसे हिरासत में लिया जाए और जब कैमरा चलाने वाले हाथों को ही रोक दिया जाए, तब सवाल सिर्फ पुलिस की कार्यशैली का नहीं रह जाता। सवाल यह बन जाता है कि लोकतंत्र में जनता को सूचना देने का अधिकार कितना सुरक्षित है।

दिल्ली में अक्टूबर 2026 के दौरान मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ विरोध-प्रदर्शनों की रिपोर्टिंग कर रहे पत्रकारों को हिरासत में लिए जाने की घटनाओं ने इस सवाल को फिर केंद्र में ला दिया है। 10 और 11 अक्टूबर को प्रदर्शन स्थलों तथा आसपास के इलाकों में रिपोर्टिंग कर रहे कई पत्रकारों को पुलिस ने हिरासत में लिया। समाचार रिपोर्टों के अनुसार, इनमें प्रिंट, टेलीविजन और डिजिटल मीडिया से जुड़े पत्रकार शामिल थे। कुछ पत्रकारों ने आरोप लगाया कि उन्होंने अपनी पहचान बताई और प्रेस कार्ड दिखाया, इसके बावजूद उन्हें पुलिस बसों में बैठाकर हिरासत केंद्रों तक ले जाया गया। कुछ ने धक्का-मुक्की, कथित दुर्व्यवहार और मोबाइल फोन या रिपोर्टिंग उपकरणों को अपने कब्जे में लिए जाने की शिकायत भी की। इन आरोपों पर पुलिस की विस्तृत सफाई और प्रत्येक कार्रवाई का स्पष्ट आधार सामने आना जरूरी है।

इन घटनाओं के बाद पत्रकारों ने केवल व्यक्तिगत शिकायतों तक खुद को सीमित नहीं रखा। प्रेस क्लब ऑफ इंडिया, इंडियन विमेन्स प्रेस कॉर्पस, दिल्ली यूनिशन ऑफ जर्नलिस्ट्स और इकरा यूनियन ऑफ वूकिंग जर्नलिस्ट्स की दिल्ली कैंडल ने संयुक्त बयान जारी कर कार्रवाई पर चिंता जताई। इन संगठनों ने पत्रकारों को हिरासत में लिए जाने, उनके उपकरणों को जब्त किए जाने और रिपोर्टिंग में बाधा

डालने की शिकायतों को गंभीर माना। उन्होंने पत्रकारों की रिहाई, उपकरण लौटाने, सार्वजनिक माफी और पूरे मामले की जांच की मांग की। यह प्रतिक्रिया बताती है कि प्रश्न किसी एक रिपोर्टर के साथ हुए व्यवहार तक सीमित नहीं था; पत्रकार संगठनों ने इसे स्वतंत्र रिपोर्टिंग और पेशेवर अधिकारों से जुड़ा मुद्दा माना।

इस विरोध ने एक और स्पष्ट रूप लिया। नई दिल्ली स्थित प्रेस क्लब ऑफ इंडिया में पत्रकारों की बैठक हुई। वहां अलग-अलग समाचार संस्थानों और डिजिटल मंचों से जुड़े पत्रकारों ने प्रदर्शन की रिपोर्टिंग के दौरान अपने अनुभव साझा किए। इसके बाद प्रेस क्लब परिसर के आसपास मौन मार्च निकाला गया।

पत्रकारों ने हिरासत और कथित बदसलूकी के विरोध में अपनी एकजुटता प्रदर्शित की। प्रेस क्लब ने कहा कि पेशेवर दायित्व निभा रहे पत्रकारों पर हमले अस्वीकार्य हैं और इससे निर्भय होकर खबर देने के मौलिक अधिकार को नुकसान पहुंचता है। इस विरोध का महत्व इसलिए भी है कि इसमें पत्रकारों ने केवल अपने साथ हुए व्यवहार पर आपत्ति नहीं जताई, बल्कि उस माहौल पर सवाल उठाया जिसमें घटनास्थल पर मौजूद रहकर सच दर्ज करना भी जोखिम भरा हो सकता है।

पत्रकारों की बैठक और मौन मार्च को महज एक पेशेवर समुदाय की नाराजगी के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। किसी पत्रकार को हिरासत में लिए जाने का असर उसके व्यक्तिगत काम तक सीमित नहीं रहता। जब रिपोर्टर को घटनास्थल से हटा दिया जाता है, तो जनता उस घटना का स्वतंत्र विवरण पाने से वंचित हो सकती है। पुलिस सच्य कर रही थी, प्रदर्शनकारियों के साथ कैसा व्यवहार हुआ, बल प्रयोग की जरूरत थी या नहीं, हिरासत की प्रक्रिया कानून के अनुरूप थी या नहीं—इन सवालों का जवाब तभी सामने आ सकता है, जब घटनाओं का स्वतंत्र दस्तावेजीकरण हो सके।

पत्रकारिता की भूमिका पुलिस की कार्रवाई का

विरोध करना भर नहीं है। उसका दायित्व है कि वह जो देखे, उसे तथ्य और प्रमाण के आधार पर जनता तक पहुंचाए। यदि पुलिस कानून के मुताबिक काम कर रही है, तो निष्पक्ष रिपोर्टिंग उस कार्रवाई को भी सामने ला सकती है। लेकिन अगर कहीं अधिकारों का उल्लंघन हुआ है, तो वही रिपोर्टिंग जवाबदेही तय करने में मदद कर सकती है। इसलिए पत्रकार की मौजूदगी को अपने-आप प्रशासन के लिए चुनौती या बाधा मान लेना उचित नहीं है।

हालांकि, पुलिस की जिम्मेदारियों को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। भीड़ को नियंत्रित करना, संवेदनशील स्थानों की सुरक्षा करना और सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखना उसका वैधानिक दायित्व है। दिल्ली पुलिस का तर्क गले नहीं उतरता है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि दिल्ली पुलिस के अधिकारियों ने पत्रकारों से प्रदर्शनकारियों से दूरी बनाकर रिपोर्टिंग करने की अपील की थी। पुलिस की ओर से यह आशंका भी जताई गई कि कुछ लोग पत्रकार और प्रदर्शनकारी को भूमिकाओं के बीच अंतर स्पष्ट नहीं रखते और इससे पुलिस के काम में बाधा आती है। ऐसी स्थिति में सुरक्षा संबंधी निर्देश देना अनुचित नहीं कहा जा सकता। लेकिन किसी निर्देश की वैधता और उसे लागू करने का तरीका दो अलग प्रश्न हैं। यदि किसी पत्रकार ने वास्तव में सुरक्षा-व्यवस्था में बाधा डाली है, तो पुलिस को विशिष्ट कारण बताना चाहिए। उसके संदेह के आधार पर उसे हिरासत में लेना या केवल पेशेवर काम को बाधित करना उचित नहीं ठहराया जा सकता।

इस मामले में प्रेस कार्ड को लेकर उठा सवाल भी महत्वपूर्ण है। पत्रकारों के संगठनों के मुताबिक, कुछ रिपोर्टरों ने पहचान-पत्र दिखाने के बावजूद हिरासत में लिए जाने की शिकायत की। एक रिपोर्ट में पत्रकारों के हवाले से बताया गया कि कुछ पुलिसकर्मियों ने पत्रकार होने के दावे पर संदेह जताया। डिजिटल मीडिया, स्वतंत्र पत्रकारिता और छोटे समाचार संस्थानों से जुड़े लोगों के लिए यह स्थिति विशेष रूप से कठिन हो सकती है। हर

पत्रकार के पास सरकारी भवनों में प्रवेश के लिए जारी प्रेस सूचना ब्यूरो का मान्यता-पत्र नहीं होता। ऐसा कार्ड न होना अपने-आप में किसी व्यक्ति के पत्रकार होने से इनकार करने का आधार नहीं हो सकता। पत्रकार की पहचान और घटनास्थल पर उसके आचरण का आकलन परिस्थितियों के आधार पर होना चाहिए, न कि केवल किसी एक प्रकार के कार्ड की मौजूदगी या अनुपस्थिति से।

यहां संविधान की भूमिका को समझना जरूरी है। अनुच्छेद 19(1)(क) नागरिकों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता देता है। स्वतंत्र प्रेस इसी संवैधानिक अधिकार का महत्वपूर्ण हिस्सा है। वहीं अनुच्छेद 19(2) के तहत कानून द्वारा निर्धारित उचित प्रतिबंध भी संभव हैं। इसलिए प्रेस की स्वतंत्रता का अर्थ यह नहीं कि पत्रकार हर सुरक्षा निर्देश से मुक्त है; लेकिन इसका अर्थ यह भी नहीं कि प्रशासन अपनी सुविधा के अनुसार रिपोर्टिंग रोक सकता है। किसी पत्रकार को हिरासत में लेने के लिए स्पष्ट कानूनी आधार होना चाहिए और प्रक्रिया निष्पक्ष तथा पारदर्शी होनी चाहिए। यदि कार्रवाई केवल इसलिए की जाती है कि पत्रकार किसी असुविधाजनक दृश्य को रिकॉर्ड कर रहा है, तो यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और जनता के सूचना पाने के अधिकार पर गंभीर प्रश्न खड़े करती है।

मोबाइल फोन और अन्य डिजिटल उपकरणों का मामला भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। पत्रकारों के उपकरणों में लेने के लिए तस्वीरें और वीडियो नहीं होते; उनमें समाचार-स्रोतों की पहचान, बातचीत, अधूरी रिपोर्टें और संवेदनशील दस्तावेज भी हो सकते हैं। किसी उपकरण को जब्त करने या उसकी जांच करने की जरूरत हो, तो उसके लिए विश्वसम्मत आधार और उचित प्रक्रिया जरूरी है। जब्ती की स्थिति में उसका रिकॉर्ड, कारण और उपकरण लौटाने की व्यवस्था स्पष्ट होनी चाहिए। मनमाने तरीके से उपकरण अपने पास रखे जाने की आशंका पत्रकारों को भविष्य में घटनाओं की रिकॉर्डिंग करने से हतोत्साहित कर सकती है।

आज का इतिहास

- | | |
|-------|--|
| 1680- | मेवाड़ के राणा राज सिंह का निधन हुआ। |
| 1796- | पेशवा माधव राव द्वितीय ने आत्महत्या की। |
| 1797- | आंद्रे-जैक्स गार्नरिन ने 3,200 फीट की ऊँचाई से पैराशूट से कूदकर पहली सफल पैराशूटिंग की। |
| 1879- | ब्रिटिश शासन के खिलाफ बसुदेव बलवंत फड़के पर पहला राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया। |
| 1883- | न्यूयॉर्क में प्रसिद्ध मेट्रोपॉलिटन ओपेरा हाउस का उद्घाटन हुआ। |
| 1947- | पाकिस्तान के कबायली घुसपैठियों द्वारा कश्मीर सीमा पार करने के साथ ही भारत और पाकिस्तान के बीच प्रथम युद्ध की शुरुआत हुई। |
| 1963- | भारत की सबसे बड़ी बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजना भाखड़ा नांगल बांध राष्ट्र को समर्पित किया गया। |
| 1964- | प्रसिद्ध दार्शनिक ज्यॉं पाल सार्त्र ने नोबेल पुरस्कार लेने से इनकार कर दिया। |
| 1680- | मेवाड़ के राणा राज सिंह की अप्रत्याशित मृत्यु। हालांकि इसी वर्ष जून के महीने में उन्होंने मुगलों की घुसपैठ का बड़ी बहादुरी से जवाब दिया था। |
| 1797- | फ्रांस सेना के आंद्रे-जैक्स गार्नरिन ने सेना के लिए गुब्बारों के इस्तेमाल की हिमायत करते हुए एक विशाल गुब्बारा बनाया और करीब 3200 फुट की ऊँचाई से हवा में छलांग लगाकर पैराशूटिंग का प्रदर्शन किया। |
| 1900- | भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सबसे जांबाज क्रांतिकारियों में से एक अशफाकुल्लाह खान का जन्म। |
| 1963- | भारत की सबसे बड़ी बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजना भाखड़ा नांगल राष्ट्र को समर्पित की गई। |
| 1966- | ब्रिटेन के सबसे कुख्यात डबल एजेंटों में शुमार जार्ज ब्लेक दुस्साहसिक तरीके से जेल से फरार। ऐसा माना गया कि उसके जेल से भागने की योजना सोवियत संघ ने बनाई थी। |
| 2008- | भारत ने श्रीहरिकोटा से अपने पहले चंद्र मिशन चंद्रयान-1 का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया। |
| 1680- | भारत ने फाइनल मुकाबले में ईरान को हराकर कबड्डी विश्व कप का खिताब जीता। |
| 2010- | विकिलीक्स ने इराक और अफगानिस्तान युद्ध से जुड़े हजारों गोपनीय अमेरिकी दस्तावेज सार्वजनिक किए। |
| 1893- | सिख साम्राज्य के अंतिम शासक महाराजा रणजीत सिंह के सबसे छोटे पुत्र दिलीप सिंह का निधन हुआ। |
| 1900- | महान भारतीय स्वतंत्रता सेनानी और क्रांतिकारी अशफाक उल्ला खान का जन्म हुआ। |

जदयू में टूट की आशंका: भाजपा मुख्यालय की सिर्फ एक तस्वीर ने क्यों बढ़ाई सियासी हलचल?

सत्येंद्र प्रताप सिंह

दिल्ली स्थित भाजपा मुख्यालय में 13 अक्टूबर को केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल के साथ ललन सिंह की मौजूदगी चर्चा में है। दोनों नेताओं ने विपक्ष और चुनाव आयोग से जुड़े मुद्दों पर अपनी बात रखी। पीयूष गोयल के बगल में ललन सिंह की कुर्सी को लेकर राजनीतिक हलकों में सवाल उठे। अगर मकसद एनडीए की एकजुटता का संदेश देना था, तो सवाल है कि दूसरे सहयोगी दलों के नेता वहां क्यों नहीं थे? और जदयू की ओर से भी सिर्फ ललन सिंह ही क्यों? ललन सिंह जदयू के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्र सरकार में मंत्री हैं। इसलिए उनकी मौजूदगी को गठबंधन की सामान्य राजनीतिक गतिविधि भी माना जा सकता है। लेकिन पार्टी के भीतर चल रहे विवादों के बीच इस घटनाक्रम ने अलग-अलग व्याख्याओं को जन्म दिया है। हालांकि, केवल एक तस्वीर से जदयू में टूट या भाजपा में विचार का निष्कर्ष निकालना उचित नहीं होगा। तस्वीर के साथ पार्टी के दूसरे घटनाक्रमों को देखना जरूरी है।

एमएलसी चुनाव में जदयू बनाम जदयू

बिहार विधान परिषद की पटना स्नातक सीट का चुनाव जदयू के लिए असहज स्थिति लेकर आया है। पार्टी ने नीरज कुमार को अपना उम्मीदवार बनाया है, लेकिन मोकामा के जदयू विधायक अनंत सिंह उनके समर्थन में नहीं हैं। अनंत सिंह जन सुराज पार्टी के उम्मीदवार अनुज सिंह का समर्थन कर रहे हैं। अनंत सिंह और नीरज कुमार के बीच पुरानी राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता

रही है। अनंत सिंह का कहना है कि नीरज कुमार ने पहले उनके खिलाफ राजनीतिक गतिविधियां की थीं, इसलिए वह अब उनका समर्थन नहीं करेंगे। उन्होंने अनुज सिंह के पक्ष में खुलकर अपना रुख जाहिर किया है। यह स्थिति इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि अनंत सिंह किसी विपक्षी दल के नेता नहीं, बल्कि जदयू के विधायक हैं। पार्टी का आधिकारिक उम्मीदवार एक तरफ है और उसी पार्टी का विधायक दूसरी ओर के प्रत्याशी का समर्थन कर रहा है। इस विवाद को सुलझाने की जिम्मेदारी ललन सिंह को दी गई थी। जदयू के कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा ने बताया था कि पार्टी ने दोनों नेताओं के बीच बातचीत कराकर मामला सुलझाने के लिए ललन सिंह को अधिकृत किया है। लेकिन ललन सिंह के हस्तक्षेप के बावजूद अनंत सिंह नीरज कुमार के लिए प्रचार करने को तैयार नहीं हुए। पार्टी के भीतर अनुशासन और नेतृत्व की भूमिका पर सवाल यहीं से और गहरे हुए।

अनंत सिंह को ललन सिंह का समर्थन

इस पूरे विवाद का सबसे संवेदनशील पहलू ललन सिंह की भूमिका है। अनंत सिंह नीरज कुमार के खिलाफ खुलकर खड़े हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या उन्हें ललन सिंह का समर्थन चाहिए? यहां तथ्यों और राजनीतिक अटकलों के बीच अंतर करना जरूरी है। प्रकाशित रिपोर्टों के अनुसार, जदयू नेतृत्व ने ललन सिंह को अनंत सिंह और नीरज कुमार के बीच विवाद सुलझाने की जिम्मेदारी सौंपी थी। ललन सिंह ने अनंत सिंह को मनाने की कोशिश भी की, लेकिन वह नीरज के पक्ष में प्रचार करने को तैयार नहीं हुए। इसलिए

अनंत सिंह के विरोध को ललन सिंह का खुला समर्थन कहना अभी उपलब्ध रिपोर्टों से साबित नहीं होता। लेकिन विवाद सुलझाने की जिम्मेदारी मिलने के बावजूद मामला नहीं सुलझने से ललन सिंह की भूमिका पर राजनीतिक सवाल जरूर उठ सकते हैं। एक दूसरा सवाल भी है। यदि पार्टी का वरिष्ठ नेतृत्व अपने उम्मीदवार के खिलाफ चल रही गतिविधियों को रोक नहीं पा रहा, तो क्या जदयू के संगठनात्मक अनुशासन में कमजोरी सामने आ रही है? और यदि अनंत सिंह अपने रुख पर कायम रहते हैं, तो पार्टी नेतृत्व आगे क्या कदम उठाएगा? इन सवालों का जवाब किसी एक नेता के बयान से नहीं, बल्कि पार्टी की अगली कार्रवाई से मिलेगा।

नीरज की स्टार प्रचारक सूची से ललन बाहर

12 अक्टूबर को नीरज कुमार के चुनाव प्रचार के लिए जारी सूची में ललन सिंह का नाम नहीं होने की खबर सामने आई। यह घटनाक्रम इसलिए चर्चा में आया, क्योंकि ललन सिंह को अनंत सिंह और नीरज कुमार के विवाद को सुलझाने की जिम्मेदारी मिली थी। क्या यह केवल प्रचार सूची तैयार करने से जुड़ा फैसला था या विवाद का असर? इस पर आधिकारिक स्पष्टीकरण के बिना किसी निष्कर्ष पर पहुंचना जल्दबाजी होगी। फिर भी, पार्टी के एक वरिष्ठ नेता और केंद्रीय मंत्री का उम्मीदवार की प्रचार सूची में नहीं होना सवाल पैदा करता है। खासकर तब, जब उसी चुनाव में पार्टी के एक विधायक का रुख आधिकारिक उम्मीदवार के खिलाफ हो। यहां दो घटनाएं एक-दूसरे से जुड़ती दिखाई देती हैं—अनंत सिंह का नीरज कुमार के खिलाफ खुला रुख

आंदोलनों की बहार और बेफिक्र राज्य सरकार

अमिताभ श्रीवास्तव

अगस्त माह के अंत में मनोज जरांगे के नेतृत्व में मराठा आरक्षण से जुड़ी मांगों के लिए आंदोलन हुआ, जो लगभग 20–22 दिन की गहमा-गहमी के बाद स्थगित हो गया। उसके बाद कम वर्षा के चलते किसानों की मांगों को उठाया गया। फिर देश के मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के विरोध में कांकिरोच जनता पार्टी(सीजेपी) का रैली-प्रदर्शन हुआ। अब महाराष्ट्र लोकसेवा आयोग(एमपीएससी) के खिलाफ पुणे में धरना जारी है। बावजूद इसके केंद्र से लेकर राज्य सरकार के प्रति असंतोष जताते आंदोलनकारियों और प्रदर्शनकारियों से राज्य सरकार सहमत नहीं है। वह बार-बार स्पष्ट कर चुकी है कि मांगों के पीछे कोई ठोस और विधि संमत आधार नहीं है। वे सिर्फ राजनीति के लिए उठाई गई हैं। हालांकि उनमें छात्र, किसान, समाज और नेता-अभिनेता सभी शामिल हैं, किंतु सभी की अपनी पृष्ठभूमि भी है। जिससे सभी आंदोलनों की ईमानदारी पर प्रश्न उठना स्वाभाविक है।

इतना अवश्य है कि हर विरोध और मांग के पीछे किसी का साथ था समर्थन अवश्य है, जो कहीं परदे के पीछे से काम कर रहा है और कहीं आगे आकर अपने हितों की रोटियों को संकने में कोई संकोच नहीं कर रहा है। महाराष्ट्र के जालना जिले की अंबड तहसील के अंतरवाली सराटी में 29 अगस्त से मनोज जरांगे का आंदोलन शुरू हुआ।

उनकी मराठा समाज को ओबीसी के समान सुविधाएं देने संबंधी निर्णय को लागू करना, मराठा आंदोलनकारियों के खिलाफ दर्ज मामलों को वापस लेने की प्रक्रिया पूरी करना, आंदोलन के दौरान बलिवान देने वालों के परिजनों को मिलने वाली सहायता के मामले निपटाने की मांग थी। उन्होंने

और ललन सिंह का प्रचार सूची से बाहर होना। क्या इनके बीच कोई सीधा संबंध है, इसकी पुष्टि नहीं हुई है। लेकिन जदयू की आंतरिक राजनीति को समझने के लिए यह घटनाक्रम महत्वपूर्ण है।

संजय झा बनाम ललन सिंह की चर्चा

जदयू के कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा और ललन सिंह दोनों पार्टी के वरिष्ठ नेता हैं, लेकिन उनकी जिम्मेदारियां अलग-अलग हैं। संजय झा संगठनात्मक नेतृत्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जबकि ललन सिंह केंद्रीय मंत्री होने के साथ पार्टी के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष भी हैं। ऐसे में दोनों की राजनीतिक भूमिका की तुलना होना स्वाभाविक है। हालांकि, उनके बीच सीधा टकराव या गुटबाजी होने का कोई निर्णायक प्रमाण सामने नहीं आया है। पार्टी के भीतर वास्तविक स्थिति समझने के लिए यह देखना होगा कि महत्वपूर्ण राजनीतिक मामलों में फैसले कौन ले रहा है, संगठनात्मक विवादों को सुलझाने की जिम्मेदारी किसे मिल रही है और नेतृत्व अपने आधिकारिक उम्मीदवार के पक्ष में कितनी मजबूती से खड़ा होता है। सवाल संजय झा या ललन सिंह में से किसी एक को दोषी ठहराने का नहीं, बल्कि यह समझने का है कि जदयू में संगठन और नेतृत्व का संतुलन किस तरह काम कर रहा है।

क्या जदयू में टूट की जमीन तैयार हो रही है?

बिहार की राजनीति में जदयू के भविष्य को लेकर सवाल इसलिए भी महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि नीतीश कुमार लंबे समय से पार्टी की राजनीतिक पहचान और उसके फैसलों के केंद्र में रहे हैं। ऐसे में संगठन के भीतर वरिष्ठ

राज्य सरकार से अनेक दौर की चर्चा के बाद अपना अनश्रन बीसवें दिन समाप्त कर दिया।

उसके बाद से कहा-सुनी का खेल अब तक जारी है। फिलहाल राज्य सरकार को मिली नब्बे दिन की मोहलत का क्या परिणाम निकल पाएगा, यह समय ही बताएगा। उसके बाद 17 सितंबर को मराठवाड़ा मुक्ति संग्राम दिवस के अवसर पर छत्रपति संभाजीनगर में शिवसेना उद्धव बालासाहब ठाकरे की ओर से आंदोलन किया गया।

जिसमें पार्टी प्रमुख उद्धव ठाकरे ने तत्काल सुखा घोषित करने और प्रभावित किसानों को सहायता देने की मांग की। उन्होंने कहा कि कई क्षेत्रों में फसल नुकसान और सूखे जैसी परिस्थितियों के बावजूद राहत प्रक्रिया में देरी की जा रही है। पार्टी ने यही सुर राज्य के अनेक भागों में किए आंदोलन के दौरान बनाए रखा। इसके बीच राज्य

सरकार का अपनी गति से काम जारी है। राज्य से लेकर केंद्र की सहायता के लिए नियमानुसार काम किया जा रहा है। दौरे-बैठकें जारी हैं, लेकिन किसानों को अभी तक कोई राशि नहीं मिली है और न ही ऋण माफी का आदेश मिला है। सूखे को लेकर सरकार के सक्रिय होने के बाद देश के मुख्य चुनाव आयुक्त के खिलाफ मोर्चा खोला गया।

एक अंग्रेजी अखबार में छपी खबर के बाद आंदोलन के लिए सीजेपी के उतारू होने पर शिवसेना के ठाकरे गुट और महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना(मनसे) ने भी बहती गंगा में हाथ धोने का मन बना लिया। वह आंदोलन एक स्थान पर समाप्त हो गया।

लद्दाख की ऊंचाइयों तक पहुंच गया पर्यावरण संकट

पंकज चतुर्वेदी

हिमालय की गोद में बसे लेह-लद्दाख के विशाल शीत मरुस्थल या हिम-मरू की निर्मल वादियों और पारदर्शी नीले आसमान को दुनिया भर में प्रकृति का एक अद्भुत वरदान माना जाता रहा है। समुद्र तल से लगभग साढ़े ग्यारह हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित इस दुर्गम क्षेत्र को कभी देश के सबसे स्वच्छ और प्रदूषणमुक्त स्थलों में गिना जाता था। किंतु पिछले कुछ वर्षों में, विशेष रूप से पर्यटन के अभूतपूर्व विस्तार और अनियंत्रित मानवीय गतिविधियों के कारण, लेह का पर्यावरण एक बड़े संकट की चपेट में आ गया है। यहां वायु गुणवत्ता बिगड़ने की सबसे बड़ी वजह सतही ओजोन का खतरनाक स्तर पर होना पाया गया है।

ओजोन सिंधे उत्सर्जित होने वाला प्रदूषक नहीं है, बल्कि यह एक द्वितीयक प्रदूषक है। लेह में वाहनों, डीजल जेनरेटरों, निर्माण-कार्यों वाली अपशिष्ट या कचरा जालने से निकलने वाली नाइट्रोजन ऑक्साइड, कार्बन मोनो-ऑक्साइड और वाष्पशील कार्बनिक यौगिक तेज धूप व गर्मी के समय आपस में प्रकाश-रासायनिक प्रतिक्रिया करके जमीन के ठीक पास जहरीली ओजोन का निर्माण करते हैं। लेह की लगभग 3,500 मीटर की ऊंचाई पर पराबैंगनी विकिरण बेहद तीव्र होता है, जो इन रासायनिक प्रतिक्रियाओं को कई गुना तेज कर देता है। इसके अलावा, ऊंचाई पर ओजोन को नष्ट करने वाली अत्यल्प गैसों की सांद्रता कम होने से यह खतरनाक गैस लंबे समय तक वायुमंडल में बनी रहती है। वैज्ञानिक मॉडलिंग के अनुसार, पूरे हिमालय में ओजोन का 15 से 18 प्रतिशत हिस्सा दक्षिण एशिया से आता है, जबकि 32 से 37 प्रतिशत तक का योगदान अन्य क्षेत्रों से होता है।

लेह में इस ओजोन और वायु प्रदूषण के बढ़ने के पीछे मानवीय दबाव और बुनियादी अवसंरचना में भारी वृद्धि का होना भी है। आंकड़ों पर नजर डालें, तो वर्ष 2026 के पहले ती महीनों, यानी जनवरी से सितंबर के दौरान ही 4,60,667 पर्यटक

नेताओं की भूमिका, आपसी तालमेल और भाजपा के साथ संबंधों पर नजर रहना स्वाभाविक है।भाजपा मुख्यालय में ललन सिंह की मौजूदगी को एनडीए की एकजुटता के प्रदर्शन के रूप में देखा जा सकता है। लेकिन यदि यही उद्देश्य था, तो केवल जदयू के एक नेता की मौजूदगी क्यों रही? क्या इसके पीछे कोई विशेष राजनीतिक संदेश था या यह महज कार्यक्रम की प्रकृति से जुड़ा फैसला था? इन सवालों का जवाब अभी स्पष्ट नहीं है। दूसरी तरफ, एमएलसी चुनाव में अनंत सिंह का अपनी ही पार्टी के उम्मीदवार के खिलाफ खड़ा होना और नीरज कुमार की प्रचार सूची से ललन सिंह का नाम गायब होना जदयू के लिए वास्तविक संगठनात्मक सवाल है। फिलहाल इन घटनाओं को जोड़कर पार्टी में टूट की घोषणा नहीं की जा सकती। इसके लिए नेताओं के स्पष्ट बयान, संगठनात्मक फैसले या किसी ठोस राजनीतिक बदलाव के प्रमाण जरूरी होंगे।

तस्वीर, प्रचार सूची और नेतृत्व की परीक्षा
जदयू की मौजूदा स्थिति को समझने के लिए तीन घटनाओं पर नजर रखनी होगी। भाजपा मुख्यालय में ललन सिंह की मौजूदगी, अनंत सिंह का नीरज कुमार के खिलाफ रुख और प्रचार सूची से ललन सिंह का नाम गायब होना। इन घटनाओं ने संजय झा और ललन सिंह की भूमिकाओं पर चर्चा जरूर तेज की है। लेकिन अभी यह साबित नहीं है कि दोनों के बीच सीधा संघर्ष चल रहा है या पार्टी में टूट होने वाली है। असली परीक्षा जदयू के नेतृत्व की है। पार्टी अपने उम्मीदवार के खिलाफ खड़े विधायक के मामले में क्या करती है?

लिए राज्य सरकार के पास तर्कसंगत उत्तर हैं तो इनका आयोजन किसलिए हो रहा है?

क्रम अनुसार देखने पर पहले राज्य सरकार की सक्रियता, दूसरे विपक्षी दल शिवसेना ठाकरे गुट का आक्रामक अंदाज, तीसरे में शिवसेना ठाकरे गुट के साथ मनसे का भी मंच पर आना और चौथे में राकांपा शरद पवार गुट की विद्यार्थियों के बीच जमीन तलाशने की कोशिश समझ में आती है।

सभी के संबंध में कानूनी जानकारियां समर्थन में नहीं मिलने पर सड़क पर उतरने के अलावा कोई दूसरा रास्ता दिखाई नहीं दे रहा है। पहले दो मामलों में राज्य सरकार के कदम बढ़ाने से आंदोलनकारियों की अधिक महत्व नहीं मिल पा रहा है, लेकिन दूसरे दो मामलों में अभी संभावना बनी हुई है।

हालांकि आवश्यक यही है कि आंदोलनों की आत्मा को जिंदा रखने के

लिए मांगों की लेकर ईमानदारी अवश्य होनी चाहिए। दूसरी ओर उन्हें पूरा करने के लिए सरकार के पास जरूरी अधिकार होने पर ही किसी समाधान की आशा व्यक्त की जा सकती है।

यदि किसी की आड़ में कोई निजी लाभ देख रहा है तो वह आंदोलन के साथ विश्वासघात कर रहा है, जो भविष्य की चिंताओं के लिए घातक हो सकता है। इसलिए धरना-रैली शक्ति प्रदर्शन के स्थान पर लोकतांत्रिक तरीके से अपनी मांगों को पूरा कराने के माध्यम बने रहें तो ही अच्छा है। अन्यथा आंदोलन की बहार में धीरे-धीरे आंदोलनकारियों की प्रासंगिकता ही समाप्त होती चली जाएगी।

लेह पहुंचे, जो वर्ष 2025 के कुल 3,35,872 पर्यटकों से लगभग 37 प्रतिशत अधिक थे। केवल सितंबर 2026 में ही 55,582 पर्यटक पहुंचे, जो पिछले वर्ष के इसी महीने की तुलना में 60 प्रतिशत से अधिक हैं। लद्दाख टैक्सि ऑपरेटर यूनियन के तहत पंजीकृत टूरिस्ट टैक्सियों की संख्या छह हजार के पार पहुंच चुकी है, जो पिछले दशक की तुलना में तीन गुना से अधिक है। इसके अतिरिक्त, सीजन के दौरान चार से पांच हजार रेंटल मोटरसाइकिल भी सड़कों पर उतरती हैं। दूरदराज के होटलों में भारी-भरकम डीजल जेनरेटरों का धुआं भी लगातार वातावरण को दूषित कर रहा है।

अत्यधिक ऊंचाई होने के कारण लेह में वायुमंडल पहले से ही बहुत पतला है और वहां हवा में ऑक्सीजन का दबाव सामान्य मैदानों की तुलना में काफी कम होता है। जब इस ऑक्सीजन-विहीन हवा में ओजोन और ब्लैक कार्बन जैसे घातक तत्व मिल जाते हैं, तो यह मानव स्वास्थ्य के लिए दोहरा प्रहार बन जाता है। ओजोन एक तीखी और अत्यधिक प्रतिक्रियाशील गैस है, जो सांस लेते ही सिंधे फेफड़ों के नाजुक ऊतकों पर हमला करती है। यह फेफड़ों में सूजन, सीने में जकड़न, लगातार खांसी, आंखों और गले में तीव्र जलन उत्पन्न करती है। जिन पर्यटकों या स्थानीय निवासियों को पहले से अस्थमा, ब्रोंकाइटिस या सांस की बीमारियां हैं, उनके लिए यह स्थिति जानलेवा बन सकती है। अधिक ऊंचाई पर शरीर को सामान्य गतिविधियों के लिए भी अधिक ऑक्सीजन चाहिए, परंतु दूषित हवा के कारण फेफड़ों की ऑक्सीजन सोखने की क्षमता घट जाती है, जिससे चक्कर आना, भारी थकावत, तीव्र सिरदर्द और माउंटन सिकनेस के गंभीर लक्षण तेजी से उभरने लगते हैं।

स्पष्ट है कि लेह का नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र अपनी वहन क्षमता की अति पर है। यदि समय रहते लेह में डीजल वाहनों के अनियंत्रित प्रवेश, जेनरेटरों के स्थान पर सौर ऊर्जा के उपयोग और सतत पर्यटन नीतियों को कड़ाई से लागू नहीं किया गया, तो भारत की यह अनुपम धरोहर प्रदूषण की भेंट चढ़ जाएगी।

फॉर्म-6 : अब लड़ाई अधिकार क्षेत्र की है

अकु श्रीवास्तव

वोटर लिस्ट में नाम जुड़वाने वाले फॉर्म-6 में किया गया बदलाव सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच विवाद का नया अखाड़ा बना हुआ है। विवाद की मुख्य वजह चुनाव आयोग द्वारा ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया में किए गए बदलाव और नए कड़े नियम जोड़ना है। उस पर सुप्रीम कोर्ट का यह कहना कि उसने न तो फॉर्म-6 को मंजूरी दी है और न ही उसे रिव्रैक्ट किया है, नए विवाद का केंद्र है। ऑनलाइन फॉर्म-6 भरते समय नए मतदाताओं से एक अतिरिक्त घोषणापत्र (एनैक्स्चर-डी) मांगा जा रहा है कि क्या उनका, उनके माता-पिता या दादा-दादी का नाम पिछली एस.आई.आर. सूची में शामिल था? यदि आवेदक घोषणापत्र में पूरा विवरण नहीं देते तो पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन अगले चरण में आगे नहीं बढ़ता। अब आरोप पर आते हैं। राहुल गांधी और अन्य विपक्षी नेताओं का आरोप है कि इन कठिन शर्तों के जरिए देश के नागरिकों, विशेषकर गरीब और वंचित वर्गों के वोटर बनने से रोकने की कोशिश की जा रही है। विपक्ष ने अपनी बात के समर्थन में यह भी कहा कि खुद चुनाव आयोग के 2 आयुक्तों सुखबीर सिंह संधू और विवेक जोशी ने पिछले 10 महीनों में इस प्रक्रिया को गैर-कानूनी और अनधिकृत बताते हुए करीब 14 बार लिखित आपति दर्ज कराई थी। उनका तर्क था कि मतदाता पंजीकरण नियम-1960 के मुताबिक फॉर्म-6 में कोई बदलाव केवल केंद्र सरकार ही संसद की मंजूरी से कर सकती है। इसमें बदलाव करना चुनाव आयोग का अधिकार क्षेत्र नहीं है। उधर इस बात के प्रमाण नहीं मिलते कि चुनाव आयोग की बैठक में फॉर्म-6 का फैसला एकतरफा हुआ है। सहमति या असहमति संभव है लेकिन किसी चीज को लागू करने के लिए विरोध करना एक अलग मामला है। इसके बाद विपक्ष मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे पर अड़ गया है और लगातार प्रदर्शन कर रहा है। विपक्ष ने इस समय इस्तीफा की रणनीति को अपना हथियार बना रखा है। पहले धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग की सफलता के बाद अब वह ज्ञानेश के इस्तीफे पर अड़ा है।

लेकिन एक सवाल पर अब तक बहुत कम चर्चा हुई है। देश की संवैधानिक संस्थाओं के लिए अपने-अपने मापदंड हैं और उनके अपने अधिकार क्षेत्र हैं। देश में चुनाव कराने का काम निष्पक्ष और साफ-सुथरे तरीके से हो, यह काम चुनाव आयोग का है। मतदान सूची प्रदृष्टि नहीं हो, यह भी काम जरूरी है। पिछले 20 सालों की वोटर लिस्ट में नाम, पता, पिता का नाम, उम्र आदि में कहीं न कहीं गलतियां दिखाई जाती रही हैं। अपने अनुभव के आधार पर यह दावा कर सकता हूं कि उसमें ये गलतियां 20 प्रतिशत से भी ज्यादा रही हैं। लेकिन अब तकनीक का दौर आने के बाद इनकी प्रदूषण से बचाया जा सकता है। फिर भी इस बात की कोई गारंटी नहीं ले सकता कि 140 करोड़ के देश में और 100 करोड़ से ज्यादा मतदाताओं की सूची में कोई गड़बड़ी नहीं रहेगी। अगर कर्मचारियों और मतदाताओं की सतर्कता की कमी की वजह से यह चूक होती रही तो मतदाता सूचियों के प्रदृष्टि होने का खतरा लगातार रहेगा। मतदाता सूची में बहुत से मृत, स्थानांतरित डुप्लिकेट वोटर्स के नाम जुड़े हैं, जिन्हें हटाकर सूची को पारदर्शी बनाना जरूरी है। उधर, निर्वाचन आयोग सफाई दे रहा है कि उसने मूल फॉर्म-6 में कोई कानूनी बदलाव नहीं किया है। केवल एक अतिरिक्त संलग्नक जोड़ा है। उसका कहना है कि ऐसा तकनीकी कारण से किया गया है ताकि 2 बार ओ.टी.पी. की जरूरत न पड़े।

इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने आयोग के कदम पर संज्ञान लेते हुए जवाब और रिकॉर्ड तलब कर लिए हैं। अब यह बताना होगा कि आखिर यह बदलाव किसकी अनुमति से किया गया। इसके बाद इस मुद्दे पर राजनीतिक संग्राम और तेज हो गया है। लेकिन बड़ा सवाल तो यह है कि चुनाव आयोग की प्रक्रिया अगर संविधान सम्त है तो उसे कौन रोक सकता है? चुनाव आयोग के अपने अधिकार क्षेत्र हैं और उसमें किसी अन्य संवैधानिक संस्था, चाहे वह सुप्रीम कोर्ट ही क्यों न हो, जब तक संविधान का उल्लंघन नहीं होता, का हस्तक्षेप नहीं हो सकता। न्यायपालिका से उसकी समीक्षा तभी संभव है जब वह संविधान की मूल भावना के विपरीत हो।

क्या अमेरिका-चीन के हाथ में दुनिया की कमान?

मिहिर एस शर्मा

अधिकांश लोगों का मानना है कि चीन के राष्ट्रपति शी चिनपिंग की अमेरिका यात्रा से कुछ ठोस परिणाम सामने नहीं आए। दोनों आर्थिक महाशक्तिओं के बीच व्यापारिक युद्ध विराम महज दो महीने के लिए बढ़ाया गया। सुरक्षा या तकनीकी प्रतिस्पर्धा को लेकर कोई बड़ा समझौता भी नहीं हो सका। इसके बजाय राष्ट्रपति ट्रंप और उनका प्रशासन अधिकतम संभव तामझाम और भव्यता दिखाता नजर आया। यहां तक कि लड़ाकू विमानों ने भी बेहद करीब से फ्लाईपास्ट किया। विमान इतने करीब से उड़े कि उनके शोर के चलते अमेरिकी राष्ट्रपति के असहज होकर चेहरा सिकोड़ने की तस्वीर भी सामने आई।

एक तरह से यह सब ट्रंप प्रशासन से की जाने वाली अपेक्षाओं के अनुरूप ही है। दुनिया के कई अन्य लोकलुभावन नेताओं की तरह उनका प्रशासन भी शासन चलाने की वास्तविक और कठिन मेहनत के बजाय ऐसे चमक-दमक वाले प्रदर्शनों को प्राथमिकता देता है जो उनके समर्थकों की कल्पना और भावनाओं को आकर्षित करें।

ट्रंप के करीबी माने जाने वाले लोगों ने इससे मिलता-जुलता तर्क दिया है। उनका कहना है कि चीन की अर्थव्यवस्था की रफ्तार धीमी पड़ रही है और पीपल्स लिबरेशन आर्मी अव्यवस्था का सामना कर रही है इसलिए अमेरिका को खुले टकराव का कोई संकेत देने की जरूरत नहीं थी। उलटे री शी के बेहद भव्य स्वागत ने ही अमेरिका की ताकत और प्रभाव को प्रदर्शित किया। लेकिन अगर यह सारा तामझाम और भव्य प्रदर्शन ही असली मकसद रहा हो तो? क्या इसके लिए



भी देते हैं कि वह अमेरिका के प्रमुख रणनीतिक प्रतिद्वंद्वी से निपटने और उसे विरोधी से कम से कम सहयोगी में बदलने में सक्षम हैं। ट्रंप किसी विचारधारा से बंधे नेता नहीं हैं। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने अपने देश में जो व्यवस्था कायम की है और जिसे अब वह दुनिया में भी फैलाने की कोशिश कर रही है, उसके प्रति ट्रंप के मन में कोई गहरा अविश्वास नहीं है। वह जिस चीज का सम्मान करते हैं वह है जसलता। खासकर ऐसी सफलता जिसमें बड़े पैमाने पर निर्माण शामिल हो। और इस लिहाज से चीन की कम्युनिस्ट पार्टी उनके

अमेरिका-चीन रिश्ते पर करीबी नजर रखने वाले एक व्यक्ति द्वारा इस्तेमाल किए गए रूपक का उदाहरण लें तो ट्रंप दोनों राष्ट्रपतियों को माफिया डॉन के रूप में देखते हैं और राजकीय भोज को पुराने जमाने की गॉस्टर फिलमेंस में दिखाए जाने वाले सुनियोजित और सावधानी से मंचित ‘सिट-डाउन’ यानी आमने-सामने बैठकर बातचीत करने जैसे मौके के रूप में देखते हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति शुल्क की धमकी देकर पहले ही अपना दबदबा दिखा चुके हैं। चीनी राष्ट्रपति ने दुर्लभ खनिजों पर प्रतिबंध लगाकर अपनी ताकत का प्रदर्शन

किया है। अब दोनों आमने-सामने बैठकर बातचीत कर सकते हैं। यह जानते हुए कि वे एक-दूसरे को नुकसान पहुंचाने की क्षमता रखते हैं लेकिन उन्होंने ऐसा न करने का फैसला किया है। जरूरी नहीं कि यह शेष विश्व के लिए अच्छी खबर हो। लेकिन सच यह भी है कि आज अमेरिका के लिए चीन के अलावा कोई और मायने नहीं रखता। दूसरे शब्दों में इस राजकीय यात्रा यही संकेत लेना चाहिए कि कम से कम ट्रंप के लिए जी-2 यानी दो महाशक्तियों के समूह का दौर शुरू हो चुका है। आर्टिफिशल इंटेलिजेंस से लेकर दुनिया के भविष्य तक अब फैसले अमेरिकी और चीनी राष्ट्रपति ही करेंगे। कम ताकतवर दूसरे खिलाड़ी यानी अमेरिका के विभिन्न सहयोगी, चीन के प्रभाव क्षेत्र में आने वाले देश और तटस्थ देश अब कोई खास मायने नहीं रखते क्योंकि वे इन दो बड़ी शक्तियों को नुकसान पहुंचाने में सक्षम नहीं हैं। उनके साथ बस लिहाज बरता जाएगा, उन्हें धमकाया जाएगा या उनका इस्तेमाल किया जाएगा। उनकी बात सुनी नहीं जाएगी।

बराक ओबामा के कार्यकाल में इससे पहले जब किसी अमेरिकी राष्ट्रपति ने जी-2 की संभावना को गंभीरता से देखा था तब भी इसमें खतरनाक और विशिष्टतावादी संकेत थे। लेकिन वह एक बिल्कुल अलग राष्ट्रपति थे और वास्तव में चीन भी तब बिल्कुल अलग था। अगर आज जी-2 उभरता है, तो उसका उद्देश्य वैश्विक व्यवस्था में शीर्ष पर मौजूद उन दो देशों के अलावा किसी और की मदद करना नहीं होगा बल्कि उस वैश्विक व्यवस्था की जगह लेना होगा जिसे ये दोनों देश अपने नेतृत्व में स्थापित करना चाहते हैं।

‘द वन फोर्स ऑफ द फारेस्ट’ की कामयाबी से खुश हैं तमन्ना



तमन्ना भाटिया इंडस्ट्री की उन एक्ट्रेस में से हैं, जिन्हें बॉलिवुड का लकी मस्कट कहा जाता है। वे अपने निर्माता-निर्देशकों के लिए काफी लकी मानी जाती हैं। इंडस्ट्री में तकरीबन 20 साल बिता चुकी तमन्ना साउथ के बाद बॉलिवुड की भी चाहती अभिनेत्री बन गई हैं। इन दिनों वे चर्चा में यहीं अपनी नई फिल्म ‘द वन फोर्स ऑफ द फारेस्ट’ से। फिल्म बॉक्स ऑफिस पर अच्छी कमाई कर रही है और तमन्ना की भूमिका को भी खूब सराहना मिली है।

बॉक्स ऑफिस पर अपनी फिल्म को मिली कामयाबी को लेकर तमन्ना बहुत खुश हैं। वे कहती हैं, ‘इंटरनेट पर मैंने देखा कि लोग थिएटर के बाहर चप्पल उतारकर अंदर जा रहे हैं, पॉपकॉर्न की जगह टेकुआ बांट रहे हैं। बिहार का ये खूबसूरत कल्चर हमने पहली बार इतने बड़े पर्दे पर देखा है। दिवाली और दूसरे त्योहार तो स्क्रीन पर खूब दिखे हैं, लेकिन छठ महापर्व को इस तरह पहले कभी नहीं देखा। मुझे लगता है कि हमारी संस्कृति और परंपराएं ही वो पल

हैं, जो दर्शकों को जोड़ रहे हैं। फोकलोर को सिर्फ रेगुलर तरीके से दिखाने के बजाय उसे बड़े स्टाइल में, खासकर फैमिली ऑडियंस के लिए पेश किया गया है। आज हमें एक ही जॉनर की नहीं, बल्कि मल्टी-जॉनर फिल्मों की जरूरत है, जो अलग-अलग तरह के दर्शकों को एक साथ एंगेज करें और जिनका कोर हमारी संस्कृति से जुड़ा हो। इस फिल्म में छठी मैया के गाने और छठ महापर्व को जिस तरह कहानी का हिस्सा बनाया गया है, उसने दर्शकों को बहुत आकर्षित किया।

इंटरनेट पर मैंने देखा कि लोग थिएटर के बाहर चप्पल उतारकर अंदर जा रहे हैं, पॉपकॉर्न की जगह टेकुआ बांट रहे हैं। बिहार का ये खूबसूरत कल्चर हमने पहली बार इतने बड़े पर्दे पर देखा है। दिवाली और दूसरे त्योहार तो स्क्रीन पर खूब दिखे हैं, लेकिन छठ महापर्व को इस तरह पहले कभी नहीं देखा। मुझे लगता है कि हमारी संस्कृति और परंपराएं ही वो पल हैं, जो दर्शकों को जोड़ रहे हैं।

ऐसे कांड दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण हैं

हाल ही में तमन्ना एक पौराणिक फिल्म का हिस्सा रही हैं। हमने तमन्ना से जानना चाहा कि एक तरफ हमारे यहां नारियों को पूजा जाता है, मगर दूसरी तरफ आए दिन जमुई कांड और आस्था कुंज गैंगरेप

जैसे दरिंदगी से भरी घटनाएं जारी हैं। इस पर वे कहती हैं, ‘मेरा मानना है कि समाज में अच्छे भी हैं और बुराई भी, तो हमारी जिम्मेदारी ये है कि हम बार-बार उस अच्छाई को जागरूक करते रहें, क्योंकि बुराई को हम पूरी तरह से रोक तो नहीं पाएंगे। मगर जब हम बार-बार अच्छाई को उभारेंगे, तो उस स्थिति से निपट पाएंगे। ये जितनी भी घटनाएं होती हैं, बहुत ही दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण हैं, मगर एक कलाकार का काम है कि वह अपनी कला से लोगों को महसूस करा सके कि अच्छाई बाकी है, तो उसे बार-बार बुलंद करना होगा। मेरे हाथ में ये हैं और मैं ये कोशिश लगातार करती रहती हूं।’

माता-पिता हमेशा मेरा सपोर्ट सिस्टम रहे

तकरीबन हर लड़की कभी न कभी किसी छेड़खानी का शिकार हुई होती है, ऐसे में तमन्ना खुद को खुशकिस्मत मानती हैं कि उनके साथ ऐसी घटना कभी हुई। वे कहती हैं, ‘मैं बहुत लकी हूं, मेरे माता-पिता ने मुझे हमेशा प्रोटेक्ट किया। मैंने बहुत छोटी उम्र में काम करना शुरू कर दिया था। अगर उनका सपोर्ट न होता, तो मुझे जिंदगी के बेस्ट अनुभव नहीं मिलते। मगर मेरा बचपन बहुत शानदार रहा। मेरी किशोरावस्था में भी वे हमेशा मेरे साथ थे। आज भी मेरे पास उनके जैसा एक मजबूत सपोर्ट सिस्टम है।

मैं इस मामले में भाग्यशाली हूं कि पेरेंट्स के साथ ने मुझे हमेशा सुरक्षित रखा। मेरे साथ ऐसा कोई बुरा अनुभव नहीं हुआ, मगर मैंने ऐसी कई कहानियां सुनी हैं और मुझे सहानुभूति है। जिनके साथ ऐसा होता है, वो बहुत दर्दनाक होता है।’

पैस का जॉब बहुत मुश्किल होता है

पैपराजी की पसंदीदा अभिनेत्रियों में से हैं तमन्ना। उन्हें दूसरे कई कलाकारों की तरह पैस से चिढ़ते नहीं देखा है। वे कहती हैं, ‘हमारे पैस बहुत स्वीट हैं। वो भी हमारे और आपके जैसे लोग हैं। मैं लोगों में अंतर नहीं देखती हूं। वो भी इंसान हैं और बहुत मेहनत करते हैं। कई बार घंटों इंतजार करते हैं कि स्टार्स आएँ और वे पिक्स विलक करें। उनका काम बहुत मुश्किल है। इंसान बहुत सरल होते हैं, उन्हें सिर्फ प्यार और सम्मान की चाह होती है। अगर आप उन्हें वो प्रेम और सम्मान दें, तो वो भी खुश रहेंगे, आप भी।’

कॉपैनियनशिप के बारे में वे कहती हैं, ‘बहुत जरूरी है ये की आपके पास एक अच्छा साथी हो। अच्छा साथी आपको मजबूत और खुशनुमा फील कराता है।’



मॉन्स्टर में सलमान बने सीक्रेट रॉ एजेंट

सलमान खान और निर्देशक वामसी पेडिपल्ली की फिल्म ‘मॉन्स्टर’ को लेकर एक्सक्लूसिव डिटेल्स सामने आई हैं। सूत्रों के मुताबिक फिल्म में सलमान हिडन आइडेंटिटी वाले रॉ अधिकारी की भूमिका में हैं। इससे पहले वह यशराज की ‘टाइगर’ फ्रेंचाइज में रॉ एजेंट का किरदार निभा चुके हैं लेकिन इस फिल्म में उनका किरदार अपनी पहचान छिपाकर आगे बढ़ता जाता है। कहानी में उसकी असली पहचान धीरे-धीरे सामने आएगी। फिल्म में सलमान के किरदार का एक बड़ा टकराव अभिमन्यु सिंह के किरदार से होता है, जो डेयरी ऑनर की भूमिका में हैं। डेयरी परिसर और उससे जुड़े फैक्ट्री एरिया में बड़े एक्शन सीक्वेंस फिल्माए गए हैं। सलमान हैंड-टू-हैंड कॉन्बेट के साथ आस-पास मौजूद चीजों को भी लड़ाई का हिस्सा बनाते दिखेंगे। इस सीक्वेंस का अंत बड़े ब्लास्ट्स के साथ होता दिखेगा।

अरविंद स्वामी फिल्म में एक पुलिस अधिकारी बने हैं

डेयरी वाला सीक्वेंस खत्म होने के बाद कहानी का फोकस रेलवे और नेपाल ट्रेक की तरफ बढ़ता है। नेपाल जाने वाली ट्रेन में एक बड़ा एक्शन सीक्वेंस है, जिसमें ‘रोजा’ फेम अरविंद स्वामी भी अहम भूमिका में हैं। अरविंद फिल्म में पुलिस अधिकारी की भूमिका में हैं। उनका ट्रेक कहानी के बड़े कॉन्फ्लिक्ट से जुड़ा है और ट्रेन वाला सीक्वेंस इसी का अहम हिस्सा होगा। ट्रेन के सुरंग में प्रवेश करने के दौरान चेंज, अरेस्ट और एस्कैप की परिस्थितियां बनती हैं। इसी दौरान सलमान का कई लोगों से सामना होता है। सितंबर के आखिरी सप्ताह में मुंबई में सलमान और अरविंद ने इसकी शूटिंग की।



सनी की फिल्म ‘इक्का 2’ की तैयारी हुई शुरू

सनी देओल की कोर्टरूम ड्रामा फिल्म ‘इक्का’ के दूसरे पार्ट को लेकर नई जानकारी सामने आई है। फिल्म की कहानी लिखने का काम शुरू हो चुका है और इसके अगले साल आगे बढ़ने की उम्मीद है। पहले पार्ट में वकील अर्जुन मेहरा के किरदार में नजर आए सनी एक बार फिर मुख्य भूमिका निभाएंगे। अभी इसकी शूटिंग शुरू होने की तारीख और रिलीज को लेकर कोई घोषणा नहीं हुई है। ‘इक्का’ के पहले पार्ट में अक्षय खन्ना ने भी अहम भूमिका निभाई थी। फिल्म में उनके और सनी के किरदारों के बीच टकराव कहानी का महत्वपूर्ण हिस्सा था। दोनों कलाकारों को एक साथ देखने का मौका मिलने से भी फिल्म को लेकर दर्शकों में उत्सुकता थी। अब दूसरे पार्ट में अक्षय के शामिल नहीं होने की खबर सामने आई है।



नकुल धुल के एक्विशन पर एल्विश ने दी प्रतिक्रिया

रियलिटी शो ‘बिग बॉस-20’ के घर में वाइल्ड कार्ड कंटेस्टेंट के तौर पर आए सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर नकुल धुल (मिडू डॉन) और गुल्लू (कुशल तंवर) के बीच तीखी हाथापाई हो गई। इसी पूरे ड्रामे पर अब यूट्यूबर और बिग बॉस ओटीटी-2 के विनर एल्विश यादव ने भी अपनी प्रतिक्रिया दी। बताया जा रहा है कि दोनों के बीच बहस इतनी बढ़ गई कि मामला हाथापाई तक पहुंच गया। इस शारीरिक हिंसा के बाद शो के नियमों के मुताबिक मेकर्स ने नकुल धुल को घर से बाहर निकाल दिया है। इसी पूरे मामले पर अब यूट्यूबर और बिग बॉस ओटीटी-2 के विनर एल्विश यादव ने अपना रिप्लेशन दिया है। उन्होंने सोशल मीडिया

प्लेटफॉर्म एक्स पर नोट शेयर किया, जिसमें उन्होंने नकुल को इंडायरेक्टली तंज कसा। एल्विश यादव ने लिखा, ‘बहुत दिनों बाद आज बिग बॉस देखा। नियम बदल गए हैं, अब शायद जो भी घर में बड़े या समझदार की तरह रहता है उसे ही निकाल देते हैं। दुख हुआ देखकर।’ एल्विश यादव के इस कमेंट ने सोशल मीडिया पर टकराव और भी ज्यादा बढ़ा दिया है, जिससे दोनों के फैंस के बीच सोशल मीडिया वॉर छिड़ गया है। जहां एक तरफ एल्विश यादव गुल्लू के साथ खड़े हैं, वहीं दूसरी ओर रजत दलाल और लक्ष्य चौधरी जैसे बड़े नाम इस लड़ाई में नकुल धुल के गेमप्ले और उनके इम्पैक्ट का समर्थन करते नजर आ रहे हैं।

दरअसल, काजी तौकीर ने स्काउट ओपी के बारे में कुछ कहा था, जिसे लेकर नकुल धुल ने स्काउट के सामने यह बात उठाई। जब काजी और स्काउट के बीच बहस हो रही थी, तब गुल्लू (कुशल तंवर) बीच-बचाव करने और मामला शांत कराने पहुंचे। नकुल धुल इस बात पर भड़क गए कि गुल्लू उन्हें समझाने वाले कौन होते हैं। बहस इतनी बढ़ी कि नकुल और गुल्लू के बीच धक्का-मुक्की और हाथापाई हो गई। घर के सदस्यों के बीच-बचाव के बावजूद, फिजिकल वायलेंस (हिंसा) के नियमों के चलते बिग बॉस ने नकुल धुल को तुरंत घर से बाहर (बेघर) कर दिया।

मां बनने के बाद काम पर लौटें दिव्यांका त्रिपाठी

अभिनेत्री दिव्यांका त्रिपाठी इन दिनों पति विवेक दहिया के साथ कपल रियलिटी शो ‘पति पत्नी और पंगा’ में नजर आ रही हैं। अभिनेत्री ने हाल ही में जुड़वा बच्चों के जन्म के बाद काम करने की चुनौतियों पर बात की। अभिनेत्री ने बताया कि बच्चों को कुछ समय के लिए अकेले छोड़ना बहुत मुश्किल हो गया है, क्योंकि वे बड़े हो रहे हैं और अपने आसपास की चीजों को एक्सप्लोर कर रहे हैं। अभिनेत्री ने यह भी बताया कि जैसे-जैसे बच्चे बड़े हो रहे हैं, उनकी देखभाल का अनुभव भी बदल रहा है। दिव्यांका त्रिपाठी ने कहा, ‘इस स्ट्रेज पर बच्चों को संभालना आसान है, क्योंकि अभी बस वह सोते और खाते हैं लेकिन मुझे पता है कि अब उनके घुटनों के बल चलने का समय आया। उन्होंने धीरे-धीरे खुद को आगे बढ़ाना शुरू कर दिया है। मेरे लिए तो उन्हें दो से चार मिनट के लिए भी अकेला छोड़ना मुश्किल है। इसलिए मुझे उन्हें सेट पर भी साथ ले जाना पड़ता है। हालांकि, यह आसान नहीं है।’

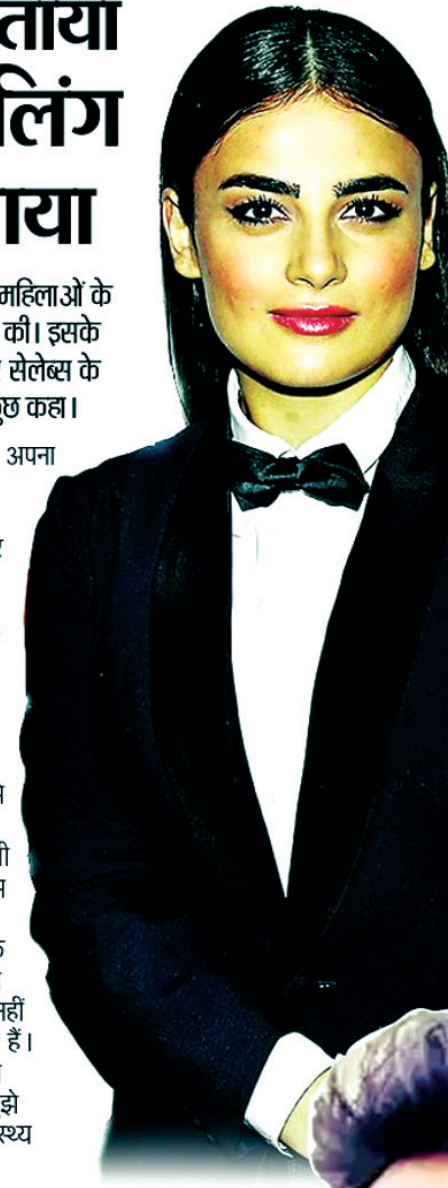
अभिनेत्री ने बताया कि लोगों को इस बात पर भी हैरानी होती है कि वो इतनी जल्दी काम पर कैसे लौट

आईं। उन्होंने कहा, ‘मैं हमेशा कहती हूं कि महिलाएं ऐसे ही ‘बाउंस बैक’ नहीं कर लेतीं। देखिए, ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। भले ही हम एक्ट्रेस के मेरे के सामने हंसती-मुस्कराती दिखती हैं लेकिन शरीर के अंदर दर्द, थकान और दिमाग में कन्फ्यूजन जैसा रहता है।’ अभिनेत्री का कहना है कि उन्हें काम पर लौटने की जरूरत नहीं थी लेकिन वे फिर भी लौटीं। क्योंकि एक मां के लिए घर पर बैठना भी आसान नहीं और काम करना भी आसान नहीं। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि मां बनने के बाद काम पर लौटने को लेकर महिलाओं की तुलना एक-दूसरे से नहीं करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हर किसी की परिस्थितियां अलग होती हैं, इसलिए महिलाओं को किसी और के अनुभव के दबाव में आने के बजाय अपनी जर्नी पर भरोसा करना चाहिए। उन्होंने कहा, ‘मैं ये इसलिए कह रही हूं ताकि कोई भी एक महिला की तुलना दूसरी से न करे और ये न कहे कि ‘अरे दिव्यांका ने कर लिया।’ नहीं, ये सबके लिए मुश्किल है। हर कोई अपने हिसाब से काम पर लौटता है। तो आप भी अपनी गति से चले और मैं भी अपनी गति से चल रही हूं।’

राधिका ने बताया खुद को ट्रोलिंग से कैसे बचाया

बॉलीवुड अभिनेत्री राधिका मदान ने महिलाओं के लुक को लेकर दबाव झेलने पर बात की। इसके साथ ही एक्ट्रेस ने सोशल मीडिया पर सेलेब्स के लुक को ट्रोल करने पर भी काफी कुछ कहा।

राधिका मदान ने बॉडी शेमिंग को लेकर अपना निजी संघर्ष भी साझा किया। उन्होंने बातचीत में कहा, ‘मैंने फिल्म ‘पटाखा’ के लिए 15 किलो वजन बढ़ाया था और ‘शिद्व’ व ‘अंग्रेजी मीडियम’ के लिए मैं वह वजन घटा रही थी। इस दौरान मुझे कहा गया कि मैं बहुत मोटी हो गई हूं और हीरोइन कैसे बन सकती हूँ? इसके बाद लगातार शूटिंग करते हुए मेरा वजन घटता रहा और मैं बिल्कुल हड्डियों का ढांचा बन गई।’ आगे अपने इंटरव्यू में राधिका ने कहा, ‘मैंने खुद से पूछा कि मैं लोगों को खुश करने की कोशिश क्यों कर रही हूँ, जबकि वे कभी खुश नहीं होंगे? इसलिए, मैंने एक खास शारीरिक बनावट पाने की चाहत के बजाय स्वास्थ्य रहने पर ध्यान देना शुरू किया। एक बार जब आप ऐसा कर लेते हैं, तो दूसरों की राय आपको प्रभावित नहीं करती, क्योंकि आप समझदार हो जाते हैं। आपको नहीं पता कि उनकी आलोचना किस असुरक्षा से उपजी है। लेकिन मुझे इस बात का सुकून है कि अब मैं स्वास्थ्य को प्राथमिकता दे रही हूँ।’



रणबीर कपूर की ‘रामायण’ में जटायु के रूप में दिखेंगे अनुपम खेर

रणबीर कपूर की फिल्म ‘रामायण’ को लेकर दर्शकों की एक्साइटमेंट लगातार बढ़ रही है। अब फिल्म के मेकर्स ने जटायु के किरदार का पहला पोस्टर जारी किया है। फिल्म में जटायु के किरदार को एक्टर अनुपम खेर अपनी आवाज देंगे। ‘द विंग्स ऑफ धर्मा’ टाइटल वाले इस पोस्टर में जटायु की तेज नजरों की झलक दिखाई गई है। वहीं, दूसरे विजुअल में जटायु अपने विशाल पंख फैलाए नजर आ रहे हैं। मेकर्स फिल्म के अलग-अलग किरदारों के पोस्टर जारी कर रहे हैं और इसी कड़ी में जटायु का लुक सामने

आया है। मेकर्स ने सोशल मीडिया पर पोस्टर शेयर करते हुए लिखा, ‘जब बुराई ने उड़ान भरी, तो उसका सामना करने के लिए साहस खड़ा हुआ। उसने जीत के लिए नहीं, बल्कि सही के लिए लड़ाई लड़ी। जटायु। द विंग्स ऑफ धर्मा।’ ‘रामायण’ में जटायु के रूप में अनुपम खेर।’ रामायण की कहानी में जटायु का किरदार साहस, बलिदान और धर्म की मिसाल माना जाता है। जब रावण माता सीता का हरण करके उन्हें लंका ले जा रहा था, तब जटायु ने उसे रोकने की कोशिश की थी। वह जानते थे कि रावण से मुकाबला करना आसान नहीं होगा, इसके बावजूद उन्होंने सीता को बचाने के लिए उससे युद्ध किया। इस दौरान जटायु गंभीर रूप से घायल हो गए, लेकिन उन्होंने अपनी आखिरी सांसों तक धर्म का साथ नहीं छोड़ा।

इससे पहले मेकर्स फिल्म से भगवान राम, कैकेयी और कुछ अन्य किरदारों के पोस्टर भी जारी कर चुके हैं। फिल्म में रणबीर कपूर भगवान राम, साई पल्लवी माता सीता, यश रावण, सनी देओल हनुमान और रवि दुबे लक्ष्मण के किरदार में नजर आएंगे। नितेश तिवारी के निर्देशन में बन रही ‘रामायण’ दो हिस्सों में रिलीज होगी। फिल्म को नमित मल्होत्रा के प्राइम फोकस स्टूडियो ने डीपनईजी और यश की मॉन्स्टर माईड क्रिएशंस के साथ मिलकर बनाया है। फिल्म का पहला पार्ट 5 नवंबर 2026 को दुनियाभर के सिनेमाघरों में रिलीज होने वाला है, जबकि दूसरा पार्ट दीपावली 2027 पर रिलीज होगा।



टाइगर श्रॉफ हमला: दो महिलाओं समेत 4 और आरोपी गिरफ्तार

मुंबई। अभिनेता टाइगर श्रॉफ पर हमले की जांच कर रही पुलिस की टीम ने दो महिलाओं समेत चार और आरोपियों को गिरफ्तार किया है। अभिनेता पर गोली चलाने के मामले में दिल्ली पुलिस की टीम ने इस अहम कार्रवाई को अंजाम दिया। चार लोगों को दिल्ली पुलिस की टीम ने गिरफ्तार करने के बाद महाराष्ट्र पुलिस को सौंप दिया। कोर्ट में पेशी के बाद आरोपियों को तीन दिनों की ट्रांजिट रिमांड पर महाराष्ट्र पुलिस के हवाले किया गया। मुंबई में अभिनेता टाइगर श्रॉफ को कार पर फायरिंग के मामले में दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने जिन चार लोगों को पकड़ा है उन आरोपियों में हरियाणा के सोनीपत जिले के कुणाल (21) और सुमित (19) शामिल हैं। उत्तर प्रदेश की राधा (23) और बबीता (23) भी गिरफ्तार हुई हैं।



हथियारों की होड़ रोकने के लिए मांगा कानून अंतरिक्ष हम सभी का है’: यूएन में भारत ने उठाया सुरक्षा का मुद्दा

संयुक्त राष्ट्र। भारत ने संयुक्त राष्ट्र में कहा है कि बाहरी अंतरिक्ष को टकराव की जगह सहयोग का क्षेत्र होना चाहिए। साथ ही, भारत ने अंतरिक्ष में हथियारों की होड़ को रोकने के लिए एक कानूनी रूप से बाध्यकारी अंतरराष्ट्रीय समझौता करने की मांग की है।

सांसद सुधा मूर्ति ने क्या कहा ? – मंगलवार को संयुक्त राष्ट्र महासभा की पहली समिति में बाहरी अंतरिक्ष पर भारत का पक्ष रखते हुए, सांसद सुधा मूर्ति ने कहा, भारत अंतरिक्ष के क्षेत्र में एक प्रमुख देश है। हमारे अंतरिक्ष कार्यक्रम के विकास और सुरक्षा, दोनों पहलू हैं। भारत का मानना ​​है कि बाहरी अंतरिक्ष हम सभी का है। हम एक पृथ्वी, एक परिवार हैं और हमारा भविष्य भी एक है। हमारा मानना ​​है कि बाहरी अंतरिक्ष को टकराव के बजाय सहयोग का क्षेत्र बने रहना चाहिए।

बाहरी अंतरिक्ष के क्षेत्र में नए पक्षों के आने का जिक्र करते हुए मूर्ति ने कहा कि दोहरे उपयोग वाली अंतरिक्ष तकनीकें और संपत्तियां अब एक वास्तविकता बन गई हैं। उन्होंने कहा, बाहरी अंतरिक्ष में हथियारों की होड़ को रोकने के तरीकों को लेकर अभी भी अलग-अलग राय है। इस बात पर भी मतभेद है कि किस तरीके को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

भारत ने क्या मांग की ? – भारत ने बाहरी अंतरिक्ष में हथियारों की होड़ को रोकने के लिए एक कानूनी रूप से बाध्यकारी समझौते की अपनी मांग दोहराई। भारत का मानना ​​है कि यह समझौता ऐसा होना चाहिए जिसे सभी स्वीकार करें, जिसकी पुष्टि की जा सके, और जिस पर कॉन्फ्रेंस ऑन

अंतिम चरण में चारधाम यात्रा: दर्शन के लिए उमड़ रही भीड़

देहरादून। चारधाम यात्रा अंतिम चरण में है। केदारनाथ व बदरीनाथ धाम में दर्शन के लिए श्रद्धालुओं की काफी भीड़ है। अब तक दर्शन करने वाले श्रद्धालुओं का आंकड़ा 60 लाख पार हो गया है। 16 नवंबर को बदरीनाथ धाम के कपाट बंद होने के बाद यात्रा शीतकाल के लिए स्थगित होगी। चारधामों के शीतकालीन प्रवास स्थल से शीतकालीन यात्रा का संचालन किया जाएगा। 19 अप्रैल को चारधाम यात्रा का आगाज हुआ था। बीते वर्ष की तुलना में इस बार मानसून सीजन में चारधाम यात्रा का संचालन निर्बाध रूप से जारी रही। पहली बार केदारनाथ, बदरीनाथ, गंगोत्री व यमुनोत्री धाम के अलावा हेमकुंड साहिब में दर्शन करने वाले श्रद्धालुओं की संख्या ने नया रिकॉर्ड बनाया है। बौकेटीसी अध्यक्ष हेमंत द्विवेदी ने बताया, केदारनाथ व बदरीनाथ धाम में दर्शन के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंच रहे हैं। मुख्यमंत्री धामी के दिशानिर्देश पर यात्रा सुचारू रूप से संचालित है। पहली बार श्रद्धालुओं के दर्शन करने का नया रिकॉर्ड बना है।

पुलिसकर्मी अपराधों से लड़ते हैं, मदद करते हैं: मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय पुलिस स्मृति दिवस के अवसर पर पुलिसकर्मियों के योगदान की तारीफ की है। उन्होंने कानून–



व्यवस्था बनाए रखने और अपराधियों से लड़ने और नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पुलिसकर्मियों का आभार भी जाताया है। पीएम मोदी से पहले केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने इस अवसर पर मोटरसाइकिल रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया एक्स पर लिखा-पुलिस स्मृति दिवस हमारे पुलिसकर्मियों के प्रति गहरा आभार जताने का अवसर है, जो बेहद कठिन परिस्थितियों में भी पूरी निष्ठा के साथ अपनी सेवाएं देते हैं। कानून–व्यवस्था बनाए रखने से लेकर अपराधों से लड़ने, आपातकालीन स्थितियों में मदद करने और नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने तक, उनका योगदान अमूल्य है।

एफसीआरए पर सख्ती कम करने के मूड में नहीं सरकार, धरी रह जाएगी विपक्ष की योजना?

नई दिल्ली। विदेशी अंशदान विनियमन अधिनियम यानी एफसीआरए को लेकर केंद्र सरकार अपने रुख में बदलाव करने के पक्ष में नहीं दिख रही है। संकेत हैं कि सरकार आगामी शीतकालीन सत्र में इस कानून से जुड़े प्रस्तावों पर आगे बढ़ना चाहती है। विदेशी सेंट्र के नियमन, उसके इस्तेमाल में पारदर्शिता और संबंधित संस्थाओं की जवाबदेही का मुद्दा एक बार फिर संयुक्त संसदीय समिति की रिपोर्ट के आधार पर सख्त बनाया जाएगा।

एफसीआरए के तहत भारत में काम करने वाले गैर-सरकारी संगठनों, सामाजिक संस्थाओं और अन्य पात्र संगठनों को विदेश से मिलने वाले धन के इस्तेमाल के लिए निर्धारित नियमों का पालन करना होता है। कानून का उद्देश्य विदेशी योगदान को नियंत्रित करना और यह सुनिश्चित करना है कि प्राप्त धन का इस्तेमाल निर्धारित उद्देश्यों के अनुरूप हो।

विधेयक कब हुआ था पेश ?– इससे पहले एफसीआरए संशोधन विधेयक, 2026 को

लोकसभा में 25 मार्च को पेश किया गया था। बाद में 12 अगस्त को इसे विस्तृत समीक्षा के लिए 31 सदस्यीय संयुक्त संसदीय समिति के पास भेज दिया गया। समिति को शीतकालीन सत्र के पहले सप्ताह के अंतिम दिन तक अपनी रिपोर्ट सौंपनी है। प्रस्तावित संशोधनों में विदेशी धन से बनाई गई संपत्तियों के प्रबंधन और निपटान के लिए एक नामित प्राधिकरण बनाने का प्रावधान शामिल है।

इसे पहले इस बिल पर विचार-विमर्श करने वाली संयुक्त संसदीय समिति के प्रमुख भाजपा सांसद संजय जायसवाल ने कहा था कि प्रस्तावित अधिनियम के मुख्य प्रावधान वही हैं जो संग्राम सरकार द्वारा 2010 में लागू किये गए कानून में शामिल किये गए थे। जायसवाल ने यह बात उस समिति की बैठक के बाद कही। समिति ने इस बयान से पहले हिंदू, ईसाई और अन्य समूहों से बातचीत की और प्रस्तावित कानून पर उनकी राय सुनी। जायसवाल ने कहा, सभी ने अपनी राय रखी। हमने सबकी बातें ध्यान से सुनीं।



खेल प्रमुख समाचार

एशियन पैरा गेम्स: भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन, 35 पदकों तक पहुंचा भारत



आइची नागोया। जापान के आइची-नागोया में जारी एशियन पैरा गेम्स में भारतीय खिलाड़ियों का शानदार प्रदर्शन जारी है। प्रतियोगिता के दूसरे दिन भारत ने एथलेटिक्स, निशानेबाजी, टेबल टेनिस, तैराकी, पारालिंपिंटिंग और बैडमिंटन में दमदार प्रदर्शन किया। निषाद कुमार ने लगातार दूसरे दिन स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रचा, जबकि दीप्ति जीवनजी ने महिलाओं की 400 मीटर टी20 स्पर्धा में अपना खिताब बरकरार रखते हुए नया गेम्स रिकॉर्ड बनाया। भारत के पदकों की संख्या बढ़कर 35 हो गई है। इनमें नौ स्वर्ण, 11 रजत और 15 कांस्य पदक शामिल हैं। भारतीय पैरा एथलीट दीप्ति जीवनजी ने महिलाओं की 400 मीटर टी20 स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतकर अपना खिताब बरकरार रखा। उन्होंने 56.36 सेकंड का समय निकालकर नया गेम्स रिकॉर्ड बनाया। दीप्ति ने 2022 के पिछले संस्करण में 56.59 सेकंड के समय के साथ स्वर्ण पदक जीता था। इस बार उन्होंने अपने प्रदर्शन में 0.23 सेकंड का सुधार किया। भारत के स्टार हाई जंपर निषाद कुमार ने पुरुषों की टी47 हाई जंप स्पर्धा में 2.04 मीटर की छलांग लगाकर स्वर्ण पदक जीता और नया गेम्स रिकॉर्ड बनाया। उन्होंने सोमवार को भी टी47 लॉन्ग जंप में स्वर्ण पदक जीता था। इस तरह निषाद एक ही एशियन पैरा गेम्स संस्करण में दो स्वर्ण पदक जीतने वाले तीसरे भारतीय खिलाड़ी बन गए। महिलाओं की 200 मीटर टी12 स्पर्धा में भारत को दोहरी सफलता मिली। पैरालिंपिक पदक विजेता सिमरन शर्मा ने 24.80 सेकंड के समय के साथ स्वर्ण पदक जीता और गेम्स रिकॉर्ड बनाया।

जियो दूरसंचार कंपनी नहीं, तकनीक दिग्गज: आकाश

नई दिल्ली। रिलायंस इंडस्ट्रीज की प्रमुख डिजिटल इकाई, जियो प्लेटफॉर्मस, अपने कारोबार के विस्तार के लिए अब सिर्फ दूरसंचार क्षेत्र तक सीमित नहीं रहना चाहती। कंपनी का फोकस एआई, क्लाउड कंप्यूटिंग और अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी पर है। देश के अब तक के सबसे विशाल आईपीओ के खुदरा निवेशकों के लिए खुलने से पहले, जियो प्लेटफॉर्मस के प्रबंध निदेशक आकाश अंबानी ने एक साक्षात्कार में यह बातें कहीं। आकाश अंबानी ने कहा कि जियो को सिर्फ एक दूरसंचार कंपनी मानना ​​गलत होगा, क्योंकि यह असल में एक हाई-टेक टेक्नोलॉजी फर्म है।



रेडसीर रिपोर्ट: ऑनलाइन खरीद बढ़ी

नई दिल्ली। भारत का ऑनलाइन खुदरा बाजार 2026 में 90 अरब डॉलर के पार पहुंचने का अनुमान है। इसमें सालाना 22–24ब की वृद्धि दर्ज होने की भी उम्मीद है, जो पांच साल में सबसे तेज होगी। इस वृद्धि का प्रमुख कारण मोबाइल फोन के बजाय किताब जैसे रोजमर्रा की जरूरतों वाले उत्पादों की बढ़ती मांग है। रेडसीर स्ट्रेटजी कंसल्टेंट्स की एक रिपोर्ट में यह दावा किया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक, 2026 की पहली छमाही में ई-कॉमर्स का सकल वस्तु मूल्य (जीएमवी) पिछले साल की समान अवधि की तुलना में लगभग 25ब बढ़कर करीब 38 अरब डॉलर हो गया, जो चार वर्षों में इसका सबसे मजबूत छमाही प्रदर्शन है।

इसके उलट, पहली छमाही में मोबाइल की बिक्री स्थिर रही और पूरे साल इसके मात्र 2–3 प्रतिशत की दर से बढ़ने का अनुमान है।

डिजिटल गोल्ड: 2031 तक 170 अरब डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद

नई दिल्ली। वर्ल्ड गोल्ड कारांसिल (डब्ल्यूजीसी) और बॉस्टन कंसल्टिंग ग्रुप (बीसीजी) की एक संयुक्त रिपोर्ट के मुताबिक, यदि उद्योग जगत विश्वास, पहुंच, मूल्य निर्धारण और उत्पाद की उपयोगिता से जुड़ी चिंताओं को दूर कर ले तो वैश्विक डिजिटल गोल्ड बाजार मौजूदा 45–55 अरब डॉलर से बढ़कर 2031 तक 160–170 अरब डॉलर (करीब 16.10 लाख करोड़ रुपये) का हो सकता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि इन बाधाओं को दूर करने से लंबी अवधि में 700 अरब डॉलर तक की अतिरिक्त मांग पैदा हो सकती है। हालाँकि, डब्ल्यूजीसी ने स्पष्ट किया कि यह आंकड़ा निकट अवधि का बाजार पूर्वानुमान न होकर संभावित मांग को दर्शाता है। रिपोर्ट के मुताबिक, जिन बाजारों में बैंकिंग एप्स और भुगतान प्लेटफार्मों जैसे मुख्यधारा के चैनलों के माध्यम से डिजिटल गोल्ड उपलब्ध है, वहां पैट की दर सात गुना तक अधिक दर्ज की गई है।

हाईकोर्ट ने हद पार कर दी, लंबे ट्रायल का हवाला देकर दोषियों को छोड़ा

नई दिल्ली। अमित आनंद चौधरी, नई दिल्ली- एक %उदार% ट्रायल कोर्ट और %बहुत% ज्यादा रियायत देने वाले% इलाहाबाद हाई कोर्ट ने गंभीर चोट पहुंचाने के एक मामले में दो दोषियों को बिना एक दिन भी जेल काटे बरी कर दिया।

इसका आधार यह बताया गया कि 22 साल तक चले ट्रायल के कारण उन्हें परेशानी झेलनी पड़ी। सुप्रीम कोर्ट में जब ये मामला पहुंचा तो शीर्ष अदालत ने सख्त रुख अख्तियार किया। सर्वोच्च कोर्ट ने कहा कि अदालतों ने पीड़ित के बारे में एक बार भी नहीं सोचा, उसे कितनी गंभीर चोट आई है, जिसका इलाज आज भी चल रहा है।

अब, सुप्रीम कोर्ट ने 2003 के इस मामले में आरोपियों को सरेख करने का निर्देश दिया है और हाई कोर्ट से मामले की फिर से सुनवाई करने को कहा है। जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस के विनोद चंद्रन की बेंच ने कहा कि यह गलत सहानुभूति का मामला है। ट्रायल कोर्ट ने दोनों को पांच साल की जेल की सजा सुनाई थी, लेकिन हाई कोर्ट ने उन्हें प्रोबेशन पर रिहा कर दिया। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि पीड़ित को न्याय दिलाने के मामले में यह केस शुरुआत से ही विफल रहा।

2029 तक भारत से नशे के कारोबार को जड़ से खत्म करने का लक्ष्य : अमित शाह

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने नक्सल के खत्म की तर्ज पर नशे के कारोबार को भारत में जड़ से खत्म करने की समयसीमा तय कर दी है। शाह ने कहा कि 31 दिसंबर, 2029 तक हम भारत से नशे के व्यापार को जड़ से उखाड़कर फेंकने में सामूहिक रूप से सफल होंगे।

नशे के खिलाफ लड़ाई- अमित शाह ने कहा कि विगत 5 साल में हमने कश्मीर में आतंकवाद, नॉर्थईस्ट में उपद्राव और नक्सलवाद की समस्या जैसी कई चुनौतियों के खिलाफ सफलता हासिल की है। हमने दशकों से देश के सामने खड़ी इन बड़ी समस्याओं को भारत सरकार के गृह मंत्रालय और सभी राज्यों के सहयोग से समाप्त किया है। शाह ने मंगलवार को राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों की एंटी-नारकोटिक्स टास्क फोर्स के प्रमुखों के तीसरे राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन किया। इस दौरान उन्होंने वर्ष 2029 तक भारत से नशीले पदार्थों के कारोबार को जड़ से खत्म करने का लक्ष्य रखा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के वर्ष 2047 तक विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने के लिए देश को नशामुक्त बनाना बेहद आवश्यक है। **संयुक्त संकल्प-** अमित शाह ने कहा कि नशीले पदार्थ आज देश और पूरी दुनिया के लिए गंभीर खतरा बन चुके हैं। अब इनके खिलाफ कड़ा और निर्णायक प्रहार करने का समय आ गया है। उन्होंने कहा कि हमारा साझा संकल्प होगा चाहिए कि न एक ग्राम नशीला पदार्थ दुनिया से भारत में आने पाए और न भारत से एक ग्राम नशीला पदार्थ दुनिया में जाने पाए।

2026-2029 का दृष्टि दस्तावेज गीता की तरह मार्गदर्शक- गृह मंत्री ने कहा कि 2026–2029 का दृष्टि दस्तावेज नशे के खिलाफ लड़ाई में शामिल सभी लोगों के लिए गीता के समान मार्गदर्शक है। इसे 35 से अधिक विभागों के साथ व्यापक विचार-विमर्श और सभी संबंधित पक्षों के सुझावों के आधार पर तैयार किया गया है। इसमें स्पष्ट लक्ष्य और उनकी



समयसीमा निर्धारित की गई है तथा समय-समय पर इसकी समीक्षा भी की जाएगी।

अमित शाह ने कहा कि नशीले पदार्थ आज देश और पूरी दुनिया के लिए गंभीर खतरा बन चुके हैं। अब इनके खिलाफ कड़ा और निर्णायक प्रहार करने का समय आ गया है। उन्होंने कहा कि हमारा संकल्प होना चाहिए कि न एक ग्राम नशीला पदार्थ भारत में आने पाए और न भारत को मार्ग बनाकर एक ग्राम नशीला पदार्थ बाहर जाने पाए।

परिणाम पर जोर- गृह मंत्री ने नशे के खिलाफ अभियान में लक्ष्य, समयसीमा और जवाबदेही तय करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि अब केवल बैठक और रिपोर्ट तक सीमित रहने के बजाय कार्रवाई को परिणाम में बदलना होगा। बैठक से अभियान, रिपोर्ट से परिणाम, बरामदगी से पूरे नेटवर्क के विनाश और मुकदमे से दोषसिद्धि तक पहुंचना हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

बरामदगी नहीं, पूरे नेटवर्क को ध्वस्त करना लक्ष्य- अमित शाह ने कहा कि नशीले पदार्थों के खिलाफ कार्रवाई केवल बरामदगी तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। जांच एजेंसियों को पूरे नेटवर्क को ध्वस्त करने के लक्ष्य के साथ आगे बढ़ना होगा। इसके लिए पीछे और आगे की कड़ियों को जांच के साथ-साथ वित्तीय जांच और डिजिटल संपर्कों का पता लगाना भी प्राथमिकता होनी चाहिए। उन्होंने नशीले पदार्थों के गिरोह पर तीन स्तरों पर प्रहार की रणनीति बताई—देश में प्रवेश का स्थान, अंतरराज्यीय वितरण व्यवस्था और जिलों में सक्रिय स्थानीय बिक्री नेटवर्क। उन्होंने कहा कि जिलों को भी तीन श्रेणियों में बांटा जाएगा—नशीले पदार्थ बनाने या देश में प्रवेश कराने वाले जिले, परिवहन गलियारों वाले जिले और नशीले पदार्थों की खपत वाले जिले। गृह मंत्री ने सिंथेटिक नशीले पदार्थों, रसायनों के अवैध इस्तेमाल, डार्कनेट, क्रिप्टोकॉरेंसी, नई संचार तकनीकों और छिपे हुए वितरण तंत्र जैसी उभरती चुनौतियों से निपटने के लिए प्रत्येक राज्य में विशेषज्ञ अधिकारियों की टीम बनाने पर जोर दिया।

खनिज नीति की समीक्षा करेगी केंद्र सरकार

नई दिल्ली। केंद्र सरकार बदलती क्षेत्रीय जरूरतों के अनुरूप राष्ट्रीय खनिज नीति 2019 की समीक्षा करने की तैयारी में है। इसमें महत्वपूर्ण खनिजों और गहरे समुद्र में मौजूद खनिज संसाधनों जैसे प्रमुख विषयों पर ध्यान दिया जाएगा। सूत्रों के मुताबिक, खान मंत्रालय ने नीति की व्यापक समीक्षा के लिए एक समिति गठित करने का फैसला किया है, जिसकी अध्यक्षता मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव करेंगे। वित्त वर्ष 2026 में आईफोन की मजबूत मांग और प्रीमियम स्मार्टफोन सेगमेंट में तेजी के चलते एप्पल का भारत में कारोबार पहली बार एक लाख करोड़ रुपये के मील के पथर को पार कर गया एक रिपोर्ट के मुताबिक, कंपनी का परिचालन राजस्व 31% बढ़कर 1,03,853 करोड़ रुपये और शुद्ध लाभ 66% उछलकर 5,311 करोड़ रुपये पर पहुंच गया है।

एआई से नौकरियां नहीं गई, पर कॅरिअर की पहली सीढ़ी खिसकी

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) भारत में नौकरियों को निगल नहीं रहा लेकिन कॅरिअर की पहली सीढ़ी को संकरा जरूर कर रहा है। विश्व बैंक की ताजा रिपोर्ट इंडिया डेवलपमेंट अपडेट अक्टूबर 2026 में यह दावा किया गया है।? रिपोर्ट के मुताबिक, 10 शहरों की 651 आईटी कंपनियों के सर्वे में एआई के कारण कुल रोजगार में कमी नहीं मिली लेकिन 55 फीसदी ?कंपनियों ने नए कर्मचारियों की भर्ती घटा दी। मध्यम स्तर की भर्ती घटाने वाली कंपनियां 25 फीसदी और वरिष्ठ पदों पर घटाने वाली 14ब थीं। रिपोर्ट का आकलन है कि समायोजन अब तक मुख्यतः धीमी भर्ती के रास्ते हुआ है, मौजूदा कर्मचारियों की बड़े पैमाने पर छंटनी से नहीं। रूटिन्स कोडिंग, टेस्टिंग, डॉक्यूमेंटेशन और डेटा प्रोसेसिंग जैसे काम, जो आम तौर पर फ़ैशर्स के हिस्से आते थे, एआई के लिए सबसे आसानी हैं। आईटी क्षेत्र की तस्वीर बंटی हुई है। छह

सबसे बड़ी आईटी-सेवा कंपनियों ने 17 लाख के संयुक्त कार्यबल में से करीब 64 हजार कम किया। इसी दौरान जीसीसी (ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर) समेत बाकी टेक-सेवा क्षेत्र ने तीन साल में करीब सात लाख लोगों को जोड़ा। इससे इस क्षेत्र का कुल रोजगार लगभग 44 लाख पहुंच गया। रिपोर्ट इसे पूरे उद्योग का सिकुड़ना नहीं, चुनिंदा बड़ी कंपनियों में कर्मचारी संख्या की छटाई मानती है।

नोमुरा के मुताबिक, 2022 से अगस्त 2026 के बीच एशिया की 69 कंपनियों की घोषणाओं में करीब 1.31 लाख एआई-संबंधी भर्तियां और 61 हजार छंटनी दर्ज हुई। भारत में 83,100 भर्तियां और 31,921 छंटनी हुई, यानी शुद्ध करीब 51 हजार पदों की बढ़त।

किस पर और कितना प्रभाव ?– भारत में कुल रोजगार का केवल 22 प्रतिशत हिस्सा एआई के ‘उच्च जोखिम’ के दायरे में आता



है, जबकि उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में यह आंकड़ा लगभग 60 प्रतिशत है। इसका मुख्य कारण भारत में कृषि और मैन्युअल कार्यों की अधिकता है। 22 प्रतिशत हिस्से में से 8 प्रतिशत कार्य ऐसे हैं जहां एआई काम का स्वरूप बदल देगा (जैसे वित्तीय और

दूरसञ्चार सेवाएं), जबकि 14 प्रतिशत हिस्से (जैसे स्वास्थ्य और शिक्षा) में उत्पादकता बढ़ने की संभावना है।

एआई का प्रभाव मुख्य रूप से शहरी, उच्च शिक्षित और पेशावर युवाओं पर पड़ रहा है, जबकि खेत मजदूरों और निर्माण

श्रमिकों पर इसका असर नागण्य है।

कृषि और स्वास्थ्य क्षेत्र में भी हो रहा इस्तेमाल– एआई और भारत का श्रम बाजार आमने-सामने नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक बनकर खड़े हो रहे हैं। वैश्विक मंच पर एआई को अपनाने के मामले में भारत 83 अर्थव्यवस्थाओं में 10वें स्थान पर है।

कृषि में क्रांति– केरल का काथिरप्लेटफॉर्म (केरल कृषि प्रौद्योगिकी केंद्र और सूचना भंडार) और महाराष्ट्र का महाविस्तार-एआई उपग्रह तस्वीरों और एआई एनालिटिक्स के जरिये किसानों को उनकी अपनी स्थानीय भाषा में बोलकर कीट नियंत्रण, मौसम और मंडी भाव की सटीक जानकारी दे रहे हैं।

स्वास्थ्य सेवा में चमत्कार– एआई-संचालित चेस्ट एक्सरे-से रूट्स दूरराज के गांवों में बिना इंटरनेट के भी गंभीर बीमारियों की पहचान पारंपरिक तरीकों से कहीं अधिक सटीकता और बेहद कम खर्च में कर रहे हैं।

पुलिस स्मृति दिवस पर मुख्यमंत्री ने अमर शहीद जवानों को दी श्रद्धांजलि, शहीद परिवारों का किया सम्मान

नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक सफलता हमारे पुलिस व सुरक्षा बलों के शौर्य, साहस और बलिदान का परिणाम : विष्णु देव

रायपुर। छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद के विरुद्ध मिली निर्णायक सफलता हमारे वीर पुलिस और सुरक्षा बलों के जवानों के अदम्य साहस, शौर्य, कर्तव्यनिष्ठा और सर्वोच्च बलिदान का परिणाम है। दशकों तक नक्सल हिंसा और भय से प्रभावित रहे बस्तर सहित प्रदेश के दूरस्थ अंचलों में आज शांति, सुरक्षा और विश्वास का नया वातावरण बना है। इस ऐतिहासिक परिवर्तन के पीछे उन असंख्य वीर जवानों का त्याग और बलिदान है, जिन्होंने प्रदेश और देश की सुरक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। अमर शहीदों का बलिदान सदैव हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा और विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण के संकल्प को और मजबूत करेगा। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय साय ने आज पुलिस स्मृति दिवस के अवसर पर राजधानी रायपुर के माना स्थित

चौथी वाहिनी छत्तीसगढ़ सशस्त्र बल के प्रांगण में आयोजित पुलिस स्मृति दिवस परेड को संबोधित करते हुए यह बात कही। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने प्रदेशवासियों की ओर से कर्तव्य पथ पर सर्वोच्च बलिदान देने वाले अमर शहीदों को नमन किया और शहीद स्मारक पर पुष्पचक्र अर्पित कर भावभीनी श्रद्धांजलि दी। उन्होंने शहीद पुलिस अधिकारियों एवं जवानों के परिजनों को शाल, श्रीफल और स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया तथा उनके प्रति कृतज्ञता और संवेदना व्यक्त की। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि पुलिस स्मृति दिवस देश की एकता, अखंडता और नागरिकों की सुरक्षा के लिए अपने प्राणों का सर्वोच्च बलिदान देने वाले वीर जवानों की अमर शौर्यगाथा को स्मरण करने का दिन है। हमारे पुलिस और सुरक्षा बल कठिन से



कठिन परिस्थितियों में भी अदम्य साहस और कर्तव्यनिष्ठा के साथ नागरिकों की सुरक्षा तथा कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए तत्पर रहते हैं। उनकी वीरता और समर्पण के कारण ही समाज में शांति और सुरक्षा का वातावरण सुनिश्चित होता है। उन्होंने कहा कि 21 अक्टूबर 1959 को लद्दाख में भारत-तिब्बत सीमा पर तैनात भारतीय पुलिस के जवानों ने चीनी सैनिकों के एक बड़े

‘नक्सलवाद के विरुद्ध संघर्ष में जवानों ने रचा शौर्य का इतिहास’ मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ के लिए इस वर्ष का पुलिस स्मृति दिवस विशेष महत्व रखता है। प्रदेश ने नक्सलवाद के विरुद्ध लंबे संघर्ष के बाद शांति, सुरक्षा और विकास की दिशा में ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। इस सफलता में छत्तीसगढ़ पुलिस, जिला रिजर्व गाई, बस्तर फाइटर्स और केंद्रीय सुरक्षा बलों के जवानों का योगदान अविस्मरणीय है। उन्होंने कहा कि हमारे जवानों ने घने जंगलों, दुर्गम पहाड़ियों और अत्यंत कठिन परिस्थितियों में अपने जीवन की परवाह किए बिना नक्सलवाद के विरुद्ध संघर्ष किया। उनके अदम्य साहस और पराक्रम से नक्सलवाद के विरुद्ध निर्णायक सफलता सुनिश्चित हुई है। अनेक जवानों ने इस संघर्ष में सर्वोच्च बलिदान दिया। उनका शौर्य और बलिदान छत्तीसगढ़ के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के कुशल मार्गदर्शन में नक्सलवाद के उन्मूलन का संकल्प साकार हुआ

धरसीवा में बैंक संतृप्ति शिविर का आयोजन

रायपुर। ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने तथा केंद्र एवं राज्य शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ प्रत्येक पात्र नागरिक तक पहुंचाने के उद्देश्य से बैंक ऑफ बड़ौदा के तत्त्वावधान में रायपुर जिले के धरसीवा में बैंक संतृप्ति शिविर (सैचुरेशन कैंप) का आयोजन किया गया। शिविर में ग्रामीणों को बैंकिंग सुविधाओं, सामाजिक सुरक्षा, बीमा, पेंशन एवं विभिन्न शासकीय योजनाओं की जानकारी प्रदान की गई। साथ ही योजनाओं से संबंधित समस्याओं के निराकरण के लिए आवश्यक मार्गदर्शन भी दिया गया।

कार्यक्रम में भारतीय रिजर्व बैंक के उप महाप्रबंधक प्रदीप गोधूले, बैंक ऑफ बड़ौदा के उप



महाप्रबंधक प्रखर कुमार, राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति (एसएलबीसी) के सहायक महाप्रबंधक श्री मनोज सिंह, बैंक ऑफ बड़ौदा के उप क्षेत्रीय प्रबंधक अंकित जायसवाल, जनपद पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी आशीष केशरवानी तथा ग्राम पंचायत के सरपंच साहिल खान सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी, बैंक प्रतिनिधि, जनप्रतिनिधि एवं

बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिक उपस्थित रहे।

शिविर में अतिथियों ने वित्तीय समावेशन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शासन की मंशा है कि ग्रामीण क्षेत्रों का प्रत्येक पात्र नागरिक बैंकिंग सेवाओं से जुड़े और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ प्राप्त करे। बैंक खाता, बीमा और पेंशन जैसी सुविधाएं न केवल आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती हैं।

मतदाता सूची के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम की समय-सारणी निर्धारित

रायपुर। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार अर्हता तिथि 1 जनवरी 2027 के संदर्भ में मतदाता सूची के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम 2027 की समय-सारणी निर्धारित की गई है। कार्यक्रम के तहत मतदान केंद्रों का युक्तियुक्तकरण 2 नवंबर 2026 तक किया जाएगा।

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार प्रारूप मतदाता सूची का प्रकाशन 12 नवंबर 2026 को होगा। मतदाता सूची में नाम जुड़वाने, संशोधन कराने अथवा अन्य दावा-आपत्ति दर्ज कराने के लिए 12 नवंबर से 11 दिसंबर 2026 तक की अवधि निर्धारित की गई है। पुनरीक्षण प्रक्रिया पूरी होने के बाद मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन



4 जनवरी 2027 को किया जाएगा। भारत निर्वाचन आयोग ने सभी नागरिकों से अपील की है कि प्रारूप मतदाता सूची में अपना नाम और विवरण अवश्य जांचें। यदि नाम दर्ज कराने, संशोधन कराने अथवा किसी अन्य प्रकार की दावा-आपत्ति की आवश्यकता हो, तो निर्धारित अवधि में आवेदन करें। लोकतंत्र को सशक्त बनाने के लिए प्रत्येक पात्र नागरिक का नाम मतदाता सूची में दर्ज होना आवश्यक है।

छत्तीसगढ़/राजधानी

प्रमुख समाचार

9 चिकित्सा अधिकारियों और विशेषज्ञों का हुआ तबादला

रायपुर। राज्य शासन के लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के अवर सचिव ने 9 चिकित्सा अधिकारियों एवं चिकित्सा विशेषज्ञों को प्रशासनिक आधार पर स्थानांतरित करते हुए अस्थायी रूप से आगामी आदेश तक पदस्थ किया गया है। जारी आदेश के मुताबिक डॉ. नारायण सिंह नाग, चिकित्सा अधिकारी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लोहंडीगुड़ा से प्रभारी मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, जिला कांकेर, डॉ. प्रेमसिंह मार्कों, शिशु रोग विशेषज्ञ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सोनहट, जिला कोरिया से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लखनपुर, डॉ. राजेन्द्र कुमार राय, विशेषज्ञ चिकित्सक जिला चिकित्सालय दंतेवाड़ा से जिला चिकित्सालय पंडरी, रायपुर, डॉ. शशांक गुप्ता, चिकित्सा अधिकारी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र राजपुर से प्रभारी सिविल सर्जन सह मुख्य अस्पताल अधीक्षक, जिला चिकित्सालय बलरामपुर, डॉ. रामप्रसाद तिकी, चिकित्सा अधिकारी प्रभारी सिविल सर्जनह सह मुख्य अस्पताल अधीक्षक, जिला चिकित्सालय बलरामपुर से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र राजपुर, डॉ. गोरेलाल मिरी, चिकित्सा अधिकारी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र खोंगापानी से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र उदयपुर, डॉ. शशिकला मिरी, चिकित्सा अधिकारी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र लेदरी से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र उदयपुर, डॉ. वंदना कुमारी चौधरी, स्त्रीरोग विशेषज्ञ जिला चिकित्सालय सारंगढ़ से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रतनपुर तथा डॉ. पियम सिंह, चिकित्सा अधिकारी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बिन्हा से लाल बहादुर शास्त्री शासकीय चिकित्सालय, सुपेला में पदस्थ की गई है।

सशक्त नारी, युवा उड़न की थीम पर 2 नवंबर को मनेगा जिला स्तरीय राज्योत्सव

बिलासपुर।

कलेक्टर के निर्देश पर जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री संदीप अग्रवाल ने साप्ताहिक समय-सीमा की बैठक लेकर शासकीय योजनाओं और लॉबित प्रकरणों की समीक्षा की। उन्होंने जिला स्तरीय राज्योत्सव की तैयारियां समय पर पूर्ण करने, सीएम हेल्पलाइन के आवेदनों का संतुष्टिपूर्ण निराकरण करने और धान खरीदी की सभी व्यवस्थाएं 5 नवंबर से पहले सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। बैठक में अपर कलेक्टर श्री वीरेंद्र बहादुर पंचभाई सहित जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित थे।

बैठक में बताया गया कि जिला स्तरीय एक दिवसीय राज्योत्सव 2 नवंबर को पुलिस परेड मैदान में आयोजित होगा। इस वर्ष आयोजन की थीम ‘सशक्त नारी, युवा उड़ान’ होगी। राज्योत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ विभिन्न विभागों द्वारा प्रकाश प्रदर्शनी के स्टॉल लगाए जाएंगे। शासकीय कार्यालयों में 1 से 3 नवंबर तक तीन दिनों तक रोशनी की जाएगी। श्री अग्रवाल ने संबंधित विभागों को आयोजन की तैयारियां समन्वय के साथ पूर्ण करने के निर्देश दिए। सीएम हेल्पलाइन की विभागवार समीक्षा करते हुए श्री अग्रवाल ने कहा कि मुख्यमंत्री स्वयं इसकी गंभीरता से समीक्षा कर रहे हैं। अधिकारी आवेदकों से स्वयं चर्चा करें, उनकी समस्या समझें और निराकरण के बाद उन्हें इसकी जानकारी भी दें।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का कल जगदलपुर में प्रवास

जगदलपुर। जगदलपुर के सिरहासार में शुक्रवार 23 अक्टूबर को आयोजित मुरिया दरबार ताला बलाग में आयोजित आमसभा में राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का आगमन होगा। शहर में आगामी 23 अक्टूबर को होने वाले राष्ट्रपति श्रीमती



द्रौपदी मुर्मू के प्रवास के मद्देनजर सुरक्षा व्यवस्था और सुगम यातायात सुनिश्चित करने के लिए पुलिस प्रशासन ने विस्तृत ट्रैफिक एडवाइजरी जारी की है। सुबह 7 बजे से शाम 5 बजे तक प्रभावी रहने वाली इस व्यवस्था के तहत सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है, ताकि आम नागरिकों को किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। इस अवधि के दौरान शहर के भीतर भारी वाहनों का प्रवेश पूरी तरह वर्जित रहेगा, जबकि एम्बुलेंस और अन्य आपातकालीन सेवाओं से जुड़े वाहनों को सभी प्रकार के प्रतिबंधों से पूर्ण छूट प्रदान की गई है। यात्री बसों, दोपहिया और चारपहिया छोटे वाहनों के लिए राष्ट्रीय राजमार्ग 30 (जगदलपुर-रायपुर मार्ग) की ओर जाने वाले सामान्य आवागमन में बदलाव किया गया है, जिसके तहत वाहन बोधघाट थाना के पीछे हाटकचोरा रोड से होकर राजुरंगे क्योंकि लालबाग मार्ग पर सामान्य आवागमन पूरी तरह प्रतिबंधित रहेगा। इसके साथ ही शहर के मुख्य मार्गों पर समय-सारणी के अनुसार चरणबद्ध प्रतिबंध लागू किए गए हैं।

सेवा सेतु से आसान हुआ विवाह पंजीयन, मिला प्रमाण-पत्र

खैरागढ़। विवाह के पंजीयन की प्रक्रिया को सेवा सेतु पोर्टल ने सरल और सुविधाजनक बनाया है। ग्राम ठाकुरटोला निवासी श्री गणपत धुवें एवं श्रीमती हंसलेखा धुवें का विवाह पंजीयन आवेदन के चार दिन बाद अनुमोदित हो गया। ऑनलाइन आवेदन से प्रमाण-पत्र प्राप्त करने तक की यह प्रक्रिया नागरिक सेवाओं में डिजिटल व्यवस्था की उपयोगिता दर्शाती है। श्री गणपत धुवें एवं श्रीमती हंसलेखा धुवें का विवाह 27 मार्च 2026 को हुआ था। विवाह पंजीयन के लिए उन्होंने 16 अक्टूबर 2026 को लोक सेवा केंद्र के माध्यम से सेवा सेतु पोर्टल पर आवेदन किया। संबंधित विवाह पंजीयक कार्यालय ने 20 अक्टूबर 2026 को आवेदन अनुमोदित कर डिजिटल हस्ताक्षरयुक्त विवाह पंजीयन प्रमाण-पत्र जारी किया। विवाह पंजीयन प्रमाण-पत्र मिलने से दंपती के पास अब अपने विवाह का आधिकारिक दस्तावेज उपलब्ध है। यह दस्तावेज विवाह संबंधी प्रमाण की आवश्यकता वाली विभिन्न प्रशासनिक प्रक्रियाओं में उपयोगी होगा। आवेदन और अनुमोदन की तिथियों सहित पंजीयन का विवरण भी प्रमाण-पत्र में दर्ज है।

रावघाट तक ट्रेन पहुंचने से ग्रामीणों के सपनों को मिले पंख

कांकेर। रावघाट तक रेल सेवा शुरू होना बस्तर अंचल के ग्रामीणों के लिए केवल आवागमन का नया साधन नहीं, बल्कि वर्षों से देखा जा रहे सपनों के साकार होने जैसा है। दुर्गम और पूर्व में नक्सल प्रभावित रहे इस क्षेत्र में रेल पहुंचने से अब ग्रामीणों को कम खर्च में यात्रा करने के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और व्यापार के नए अवसरों तक पहुंचने की उम्मीद जगी है। कल तक जिन लोगों के लिए ट्रेन को नजदीक से देखना भी किसी उत्सुकता से कम नहीं था, वे अब उसी ट्रेन में बैठकर अपने गंतव्य तक सफर कर रहे हैं। पहली बार ट्रेन में सफर करने वाले ग्रामीणों की खुशी इस बदलाव की सबसे सुंदर तस्वीर पेश करती है। रेल सेवा शुरू होने से रावघाट क्षेत्र के लोगों में उत्साह देखने को मिल रहा है। आबूझमाढ़ क्षेत्र के रावघाट तक ट्रेन पहुंचना बस्तर अंचल में विकास, संपर्क और जनसुविधाओं के विस्तार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। विकासखंड अंतागढ़ के ग्राम फूलपाड़ निवासी श्रीमती प्रेमबती गावड़े, श्रीमती बज्जय कोइंडे और श्रीमती सईते नुरेंटी ने पहली बार ट्रेन में सफर किया।



देश में खेलों को बढ़ावा देने के लिए बड़े पैमाने पर हो रहा आयोजन : केंद्रीय खेल राज्य मंत्री

छत्तीसगढ़ में हॉकी के नए युग का आगाज : डॉ. खड़से

रायपुर। राज्य सरकार की एक अनूठी और दूरदर्शी पहल के तहत छत्तीसगढ़ की खेल संस्कृति को एक नया और पेशेवर आयाम देने वाली देश की पहली छत्तीसगढ़ हॉकी लीग का रंगारंग और भव्य शुभारंभ रायपुर के सरदार वल्लभ भाई पटेल अंतर्राष्ट्रीय हॉकी स्टेडियम में किया गया। चलव रे संगी हॉकी खेलबो के जीवंत उद्घोष के साथ शुरू हुई इस प्रतियोगिता में राष्ट्रीय स्तर के ओलिंपियनों, दिग्गज खिलाड़ियों और छत्तीसगढ़ के उभरते युवा खिलाड़ियों का एक अद्भुत संगम देखने को मिल रहा है। इस ऐतिहासिक आयोजन से राज्य के खेल जगत में प्रतिस्पर्धा का एक बिल्कुल नया दौर शुरू हो



गया है, जो स्थानीय प्रतिभाओं को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय फलक पर चमकने का सुनहरा अवसर देगा। इस गरिमामयी उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता केंद्रीय युवा कार्यक्रम और खेल राज्य मंत्री डॉ.रक्षा निखिल खड़से ने की।

समारोह में केंद्रीय आवासन एवं शहरी कार्य राज्य मंत्री तोखन साहू और छत्तीसगढ़ के उप मुख्यमंत्री तथा खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री अरुण साव अति विशिष्ट अतिथि के रूप में विशेष रूप से उपस्थित रहे। इसके अलावा,

समारोह में राज्य सभा सांसद श्रीमती लक्ष्मी वर्मा, राज्य युवा आयोग के अध्यक्ष श्री विश्व विजय सिंह तोमर, बीज निगम के अध्यक्ष श्री चन्द्रहास चंद्राकर और खेल विभाग के सचिव श्री यशवंत कुमार, छत्तीसगढ़ हाकी लीग के ब्रांड एंबेसडर सरदार सिंह, पूर्व अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेटर श्री राजेश साहू सहित कई गणमान्य नागरिक और खेलप्रेमी भारी संख्या में मौजूद रहे।

समारोह को संबोधित करते हुए केंद्रीय खेल राज्य मंत्री श्रीमती रक्षा निखिल खड़से ने अपने विचार साझा करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ आने का यह उनका दूसरा अवसर है, इससे पहले वे बस्तर में खेलो

इंडिया ट्राइबल खेल के आयोजन के दौरान यहाँ आई थीं। उन्होंने देश की खेल प्रगति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज भारत खेलों में लगातार आगे बढ़ रहा है और सरकार का मुख्य उद्देश्य खेल को देश के हर घर तक पहुंचाना है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के विजन के अनुरूप पूरे देश में खेलों को बढ़ावा देने के लिए बड़े पैमाने पर आयोजन किए जा रहे हैं और इसके लिए पर्याप्त बजट भी प्रदान किया जा रहा है। आज केवल क्रिकेट ही नहीं, बल्कि अन्य सभी खेलों को भी समान रूप से प्राथमिकता दी जा रही है। निजी संस्थान भी आगे बढ़कर युवा खिलाड़ियों को प्रोत्साहित कर रहे हैं।

बिलासपुर। भारत स्काउट्स एवं गाइड्स, छत्तीसगढ़ के तत्त्वावधान में राष्ट्रपति पूर्वाभ्यास शिविर का आयोजन 15 से 17 अक्टूबर 2026 तक राज्य प्रशिक्षण केंद्र, अभनपुर (झांकी) में किया गया। शिविर में बिलासपुर जिले के चार गाइड एवं दो रोवर ने सहभागिता कर जिले का प्रतिनिधित्व किया।

राज्य मुख्य आयुक्त इंद्रजीत सिंह खालसा एवं राज्य सचिव अमित क्षत्रिय के निर्देशानुसार आयोजित इस शिविर का संचालन अमित क्षत्रिय ने किया। शिविर में मुख्य परीक्षक के रूप में एएलटी रोवर श्री सूरज कसार ने दायित्व निभाया। वहीं सहायक के रूप में

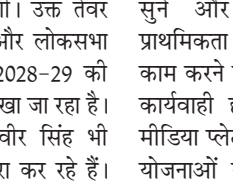


एलटी स्काउट नागेश्वर साहू, एएलटी रोवर दिदीप पटेल, एचडब्ल्यूबी गाइड श्रीमती रत्ना कश्यप, एचडब्ल्यूबी रोवर शशांक विश्वकर्मा एवं एचडब्ल्यूबी गाइड सुश्री कौशलया साहू ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शिविर में बिलासपुर जिले से गाइड के रूप में दिव्या पटेल, हिमांशी श्रीवास, सत्या एवं किरण तथा रोवर के रूप में नितेश चंद्राकर एवं चंद्रशेखर पंकज

शामिल हुए। शिविर के दौरान प्रतिभागियों को राष्ट्रपति पुरस्कार की तैयारी से संबंधित विभिन्न प्रक्रियाओं, आवश्यक मानकों एवं गतिविधियों का पूर्वाभ्यास कराया गया। प्रशिक्षण के माध्यम से प्रतिभागियों की दक्षता बढ़ाने के साथ-साथ उनमें अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, सेवा भावना एवं संगठनात्मक कौशल विकसित करने पर जोर दिया गया।

भाजपा प्रभारी स्मृति ईरानी के आगमन को लेकर पार्टी कार्यकर्ताओं में उत्साह

रायपुर। प्रदेश भाजपा की नव नियुक्त प्रभारी स्मृति ईरानी 25 और 26 अक्टूबर को छत्तीसगढ़ प्रवास पर आ रही है जिसे लेकर नेताओं से ज्यादा कार्यकर्ताओं में उत्साह है।



कि उन्होंने अपने आगमन से पहले स्पष्ट निर्देश दे रखा है कि स्वागत सत्कार में होर्डिंस बैनर पोस्टर न लगायें। वर्तमान और पूर्व सांसद विधायक से लेकर आम कार्यकर्ता से

भी वे फीड बैक लेंगी। उक्त तेवर आगामी विधानसभा और लोकसभा चुनावों यानी मिशन 2028-29 की तैयारियों से जोड़कर देखा जा रहा है। संगठन महामंत्री कर्मवीर सिंह भी लगातार छत्तीसगढ़ दौरा कर रहे हैं। खुद का प्रचार प्रसार नहीं चाहिए पार्टी के लिए क्या किया,सरकार की योजनाओं के क्रियान्वयन में क्या योगदान दिया अपना रिपोर्ट कार्ड पेश करें।

जैसे कि पार्टी सूत्र बता रहे हैं दौरे के दौरान स्मृति ईरानी सांसदों और विधायकों से वन-टू-वन चर्चा कर उनके कामकाज का रिपोर्ट कार्ड लेंगी। संगठनात्मक सूत्रों के मुताबिक, इस समीक्षा के बाद प्रदेश

के पूर्व सांसदों व विधायकों को आगामी रणनीतियों के तहत नई जिम्मेदारियां सौंपी जा सकती हैं। इसका लक्ष्य आगामी विधानसभा-लोकसभा चुनाव से पहले पार्टी को

बूथ स्तर तक मजबूत करना है। महत्वपूर्ण निर्देश ये भी कि जिन कार्यकर्ताओं के भरोसे चुनाव जीतकर विधायक सांसद मंत्री बने हैं उन्हें पर्याप्त महत्व दें। उनकी बातें सुने और उनके कामों को प्राथमिकता दें। पार्टी नीत से हटकर काम करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही हो सकती है। सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर आपको पार्टी योजनाओं के साथ लगातार जुड़े रहना होगा। फील्ड पर उत्तरकर अभी से कार्य करें ताकि बचे ढाई साल के बाद जब जनता के बीच जायें तो जवाब देते बन सके। आरोप प्रत्यारोप,शिकवा शिकायत से परहेज करें। वैसे स्मृति ईरानी छत्तीसगढ़ के पार्टी नेताओं से पूर्व परिचित भी हैं। भाजपा महिला मोर्चा को राष्ट्रीय अध्यक्ष का पद छत्तीसगढ़ को मिलने से महिला मोर्चा की कार्यकर्ताओं में भी खासा उत्साह है।